शब्दामृत

(२)

2005

(शब्दामृत)

(तालिका)

क्र.स.	शब्द एवं व्याख्या	पेज सं.
1.	हमारे एकै हरी हरी	4
2.	बाबा बिख देखिआ संसार	6
3.	तेरा जन राम नाम रंग जागा	8
4.	चरणा कमल की आस प्यारे	10
5.	ऊठत बैठत सोवत ध्याइये	12
6.	मांगऊ दान ठाकुर नाम	14
7.	मेरे प्रीतम प्यारे, मान करऊ तुध ऊपरे	16
8.	हरि जीओ कृपा करे	18
9.	झखड़ झांगी मीहु वरसै, भी गुरू देखणा जाई	20
10.	मेरे साहिब, मेरे साहिब, तूँ मै माणा निमाणी	22
11.	मेरे राम राय तूँ संता का संत तेरे	26
12.	ठाकुर तुझ बिन आहि न मोरा	29
13.	मेरा वैद्य गुरू गोविन्दा	30
14.	प्रातः काल हरि नाम उचारी	32
15.	हरि बिसरत सदा खुआरी	34
16.	गुणा निधान मेरा प्रभु करता	36
17.	गोबिन्द नाम मत बीसरे रे वाई	38
18.	नमो नमो नमो, नेति नेति नेति है	40
19.	कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद के	42
20.	हरि जीओ कृपा करे	44
21.	हरि राम, राम राम, रामा	46
22.	मैं सारा जग एह भालिआ	48
23.	मागऊ दान ठाकुर नाम	50
24.	तूँ समरथ सदा, हम दीन भेखारी राम	52
25.	तूँ समरथ वडा मेरी मति थोडी राम	54
26.	हरि दइआ प्रभु धारहो, पाखणा हम तारहो	56
27.	तुम्हरी किरपा ते मानुख देह पाई है	58
28.	हरि एक सिमर, एक सिमर	60
29.	मेरे मन अहनिसि हरि गुणा सार	62
30.	कर कृपा दयाल प्रभ, एह निधि सिधि पावऊ	64
31.	लख खुशियां पात शाहियां, जे सतगुरू नदर करे	66
32.	प्रभु कृपा ते होय प्रगास	68

क्र.स.	शब्द एवं व्याख्या	पेज सं.
33.	भिन्नी रैनविगाये चमकन तारे	70
34.	नित जपिये, नित जपिये नाम परवरदिगार दा	71
35.	गोविन्द नाम मत वीसरे	72
36.	गुरू सिख मीत चलहु गुरू चाली	73
37.	वस मेरे प्यारिया 3 वस मेरे गोविन्दा	74
38.	हमरा ठाकुर सब ते ऊचा	76
39.	चरणा कमल की आस प्यारे	77
40.	किरपा करो हरे हरे	78
41.	मेरे मीत गुरूदेव, मो को राम नाम प्रगास	80
42.	मेरे राम जी, मेरे राम जी	82
43.	पूरी आसा जीओ मेरी मनसा	84
44.	हऊ वारि वारि अपने गुरू को जासां	86
45.	ठाकुर होय आप दइआल	88
46.	मेरे प्रभु प्रीतम नाम आधारा	89
47.	तेरा जन राम नाम रंग जागा	90
48.	मैं गरीब सच टेक तूँ	92
49.	रैरा दिनस प्रभात तूँ ही तूँहै ही गावणा	93
50.	मैं बिन गुरू देखै नींद न आवै	94
51.	हल्ले यारा, हल्ले यारा खुशखबरी	95
52.	प्रभु जी पेखंऊ दरस तुम्हारा	96
53.	अति प्रीतम मनमोहना घट सोहना	97
54.	माई प्रभु के चरणा निहारऊ	98
55.	हऊ वजां कुरवाणा साई आपणो	100
56.	तुध बिन अवर न जाणा मेरे साहिबा	102
57.	हऊ वारि वारि अपने गुरू को जासा	104
58.	चरणा कमल संग राच, मन मेरे चरणा	106
59.	मेरे राम जी तूँ प्रभु अन्तरयामी	108
60.	दर्शन देख जीवां 2 सतगुरू तेरा	110
61.	मेरा वैद गुरू गोविन्दा	112
62.	मेरे प्रभु प्रीतम प्राणा आधारा	113
63.	तुध बिन दूजा नाही कोय	114
64.	काटे कष्ट पूरे गुरूदेव, सेवक को दीन्ही अपनी सेव	116
65.	साधो गोविन्द के गुणा गाओ	117
66.	हरि राम राम राम रामा, जप पूर्णा होय कामा	118
67.	मैं बन्दा बेखरीद सच साहब मेरा	119
68.	मेरे लाल रंगीले, हम लालन के लाले	120

क्र.स.	शब्द एवं व्याख्या	पेज सं.
69.	जप मन मेरे गोविन्द की बाणी	121
70.	बोल हरि नाम 3 सफल सा घडी	122
71.	राम राम राम जप, रमत राम सहाई	123
72.	प्राणा चाहे छूटे, न छूटे तेरा नाम, श्रीराम	124
73.	अमृता प्रिअ वचन तुम्हारे, अति सुन्दर मन मोहन प्यारे	126
74.	किआ मागंऊ किछु थिरू न रहाई	128
75.	पूता माता की आसीस, निमख न विसरे तुम को हरि	130
76.	गाऊ गाऊरी दुल्हनी मंगला चारा	132
77.	किरपा करो हरे, हरे कृपा करो हरे	133
78.	मेरे प्रीतम प्यारे, मान करऊ तुध उपरे	134
79.	जन के पूरा होय काम	136
80.	कोई आणा मिलावै, मेरा प्रीतम	137
81.	दरसन दीजै खोल किवाड.	138
82.	जाचक नाम जाचै 2 सर्वआधार सर्व के नायक	139
83.	ओट लेहो हरि नाम	140
84.	तुम्हरी कृपा ते मानुख देह पाई है	141
85.	इक तिल प्रभु न वीसरे, जिन सब किछ दीआ राम	142
86.	दिन राती आराधहो प्यारे	143
87.	किस नाल कीजै दोस्ती, सब जग चलणाहार	144
88.	कर किरपा अपने घर आया	145
89.	आस पास धन तुलसी का विरवा	146
90.	अतंर राम राय प्रगटे आये	148
91.	चरणा कमल संग लागी डोरी	150
92.	मन मेरे, मन मेरे, हरि के चरणा रवीजै	152
93.	अब अपने प्रीतम सिंऊ बन आई	154
94.	ए सरीरा मेरेआ, इस जग महि आइकै	156
95.	विसर नाही दातार, 2 अपना नाम देहो	158
96.	माई मैं किह विधि लखंऊ गुसाई	160
97.	तुझ बिन कवन हमारा, मेरे प्रीतम प्राणा आधारा	162
98.	मोरे आये हैं , आये हैं, मोरे आये हैं	164
99.	कृपानिधि बसो हृदय हरि नीत	165
100.	सतगुरू अपने सुनी अरदास, कारज आया सगला रास	166
101.	मेरे राम राय सतां टेक तुम्हारी, मेरे राम राय	168
102.	सोई धिआइए जीअड़े , सिर शाहां पातशाह	170
103.	कभी न घटे.....	172
104.	गुरू जी के दरसन को बलि जाऊं	174

क्र.स.	शब्द एवं व्याख्या	पेज सं.
105.	रसना राम के गुण गाऊ	176
106.	सखी सहेली गरब गहेली	178
107.	सब गोबिन्द है, सब गोबिन्द है	180
108.	चोजी मेरे गोबिन्दा, चोजी मेरे प्यारिया	182
109.	सभै घट राम बोलै, रामा बोलै	184
110.	सो धन वखर नाम हृदय हमारे	186
111.	गुरू तार तारण हारिआ	188
112.	गलीं असीं चंगिआ, आचारी बुरीआह	190
113.	मेरे साहिबा, कउण जाणो गुण तेरे	192
114.	सब अवगुण मै गुण नही कोई	194
115.	कर्त्ता तूँ मैं माण निमाणो	196
116.	तेरा एक नाम तारे संसार	198
117.	इक तिल वीसरे, भगति किनेही होय	201
118.	करता तूँ मेरा जजमान	203
119.	जलि जाऊ जीवन नाम बिना	204
120.	भाई रे राम कहहो चित्त लाये	206
121.	हऊ कुरबानै जाऊं मेहरबाना	208
122.	बाबा माया साथ न होय	210
123.	सो धन वखर नाम हृदय हमारे	212
124.	मनरे थिर रह, मत कत जांही जीओ	213
125.	नानक रूना बाबा जाणीऐ	216
126.	प्रेम के कान लगे तन भीतर	218
127.	मन रे राम नाम जस ले	220
128.	तेरा भाणा सब किछ होय	222
129.	प्राणी ! एको नाम ध्यावहो	224
130.	बारहं मांह सक्रान्ति	226
131.	लांवा	234
132.	पूरी आसा जीओ मेरी मनसा	236
133.	आत्मा की चाय और आत्मा का नाश्ता (प्रार्थना)	238
134.	रक्षामन्त्र	245
135.	आनन्द साहिब	247
136.	अरदास	249
137.	आरती सतगुरू भगवान की	251
138.	आरती नारायण जी की	253
139.	परिक्रमा	254
140.	आरती शंकर भगवान जी की	254

"श्रीराम"

हमें बड़ी श्रद्धा है उन पर
उन्हें चिन्ता हमारी है
हम सब के रक्षक
सुदर्शन चक्रधारी हैं

बोलो सत्यनारायण स्वामी जी
की जय
बोलो विष्णु भगवान जी की जय

श्रीराम

बधाई हो बधाई हो, क्योंकि आज हमें आत्मा के लिए अमृत प्राप्त हो रहा है। पहले आप को शब्दामृत प्राप्त हुआ, राम जी की प्रेरणा से कई शब्द व्याख्या सहित आप को कंठस्थ भी हो गये और परमानन्द भी प्राप्त हुआ।

अब यह शब्दामृत नये वर्ष 2005 के लिए प्रसाद (कृपा) है। जब जीव पर विशेष कृपा होती है तभी ऐसे २ रस भरे शब्द, अपने राम जी (सतगुरु) के हाथों से लिखे प्राप्त होते हैं, जिससे जीवन ही सारा बदल जाता है।

बलिहारी गुरु आपणो दिऊहाड़ी सड़वार
जिन मानस ते देवते किये, करत न लागी बार

इसी लिए आप को "कर कृपा" का मन्त्र जाप करने को कहा जाता है, पूरी प्रभु की कृपा से सारा जगत राममय हो जाता है फिर हमारे साईन Signature यही हो जाते हैं?

रामजी राम राम
श्रीराम
"कर कृपा प्रभु दीनदयाला"
"तेरी ओर पूरी गोपाला" 22.3.04

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

राम जी राम राम

22.3.04

11 रात्रि 11.00 P.M

"शब्दामृत प्रारम्भ होते है
पधारिए कृपा निधान
केवल कृपा की आप से
आप लीजो भगवान"

22.3.04 4
(11 P.M.)

शब्द

हमारे एकै हरी हरी,
आन अवर सिञ्जारा न करी।
हमारे एकै ---

II

बेड भाग्य गुरु अपना पाइओ,
गुरु मो को हरि नाम दृढ़ाइओ।
हमारे एकै --

III

हरि हरि जाप ताप व्रत नेमा,
हरि हरि ध्यान कुशल सन खेमा।
हमारे एकै --

IV

आचार बिउहार जाति हरि गुनिआ,
महा आनन्द हरि कीरतन सुनिआ।

V

कहो नानक जिन ठाकुर पाइआ
सग किछ तिस के घर मे आइआ
हमारे एकै ---

रामजी राम राम
श्रीराम

22.3.04

Central idea

व्याख्या

शब्द 1

जब हमारे पूर्वज संस्कार जागृत होते हैं, वह भी अगर अच्छे हों तो, पूरी गुरु प्राप्त होते हैं, पूरी गुरु केवल नाम से जोड़ते हैं, दूसरे विचारों से मन को हटा देते हैं, बस फिर शिष्य के मन में केवल हरि हरि या श्रीराम, कोई भी नाम ही चलता रहता है। वह हमें व्रत वगैरा कर्म कांडों से ऊपर उठा देते हैं, जब हर समय एक पूरी प्रभु का ही चिन्तन हो रहा है, नाम कीरतन कथा, उस के लिए ही सब कर्म हो रहे हैं, नहीं करने वाला है, ऐसे महसूस होने लगता है, सब अपनी सयानपे खत्म हो जाती हैं।

जब हृदय में वह स्वयं ठाकुर प्रगट हो जाते हैं तो समझो हमें सब कुछ प्राप्त हो गया

क्या आनन्द की अवस्था है

अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चाहू निर्वाण
जन्म जन्म पद कमल रति, यह वरदान मोहे आन

रामजी राम राम
जी राम कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

Date 24. 3. 04

शब्द 2

वाहा विरव देखिआ संसार,
रक्खा करहु गोसाई मेरे, मैं नाम तेरा आधार।

1

जां तूं साहिब तां भऊ केहा, हऊ तुध बिन किस सालाही,
एक तूं तां सब किछ है, मै तुध बिन दूजा नाही।

2

जाराहि विरथा सभा कीन की, होर किस पै आप सुणाईऐ
बिन नावै सब जग बऊराना, नाम मिले सुख पाईऐ

3

क्या कहिए किस आप सुणाईऐ, जि कहणा सु प्रभ जी पास,
सब किछ कीता तेरा होवै सदा २ तेरी आस।

4

जे देहि वडआई, तां तेरी वडआई, इत उत तुझहि धिआउ
नानक के प्रभु सदा सुखदाते, मै तेरा तेरा इक नाउ

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरा गोपाला
24. 3. 04 (3.30 AM)

24.3.04

व्याख्या

महाराज जी, अपने इष्टदेव परम पिता परमात्मा अखण्ड ब्रह्माण्ड के स्वामी को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं, हे बाबा! यह सारा संसार विष से भरा हुआ है, ऐसा मेरा अनुभव है, अगर आप का मैं आश्रय ले लेता हूँ तो यह सुखमय हो जाता है। मैंने आप को अपना मालिक बना लिया है, इस लिए मैं आप के बिना किसी की सराहना नहीं करता, अगर आप हैं तो मेरा सब कुछ है, मेरा आप के बिना और कोई भी नहीं है। आप मेरी सारी व्यथा जानते हो, और मैंने किसी से नहीं कहना, क्योंकि मुझे यह पता लग गया है, कि नाम बिना सारा संसार माया के पीछे पागल हो रहा है, और वास्तविक सुख तो भजन सिमरण में है। इस लिए मैंने तो सब कुछ आप को ही कहना है, क्योंकि सब कुछ करने वाले आप हो, मेरा कुछ भी नहीं सब बड़ाई आप की है आप तो सदा सुखदाई हो मुझे आप के नाम पर मान है

राम जी राम राम
श्री राम
24.3.04 (3.40 AM)

Date 24. 3. 04

3

शब्द

तेरा जन राम नाम रंग जागा,
आलस्य छीज गया सब तन ते, प्रीतम सिऊ मन लागा।

2

जिस को विसरै प्रानपति दाता, सोई गनऊ अभागा,
चरण कमल जां का मन रागिओ, अमिअ सरोवर पागा।

3

जहं जहं पेखऊ तहं नारायण, सगल घट महि तागा
नाम उदक पीवत जन नानक, त्यों सब अनुरागा

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरण गोपाला
24. 3. 04 (4 AM)

3

व्याख्या शब्द

महाराज फरमा रहे हैं, हे प्रभो! हे नारायण जी! आप का भक्त अगर प्रभु नाम में, राम नाम में रंग गया है, तो वह आलसी नहीं होगा, तामसी नहीं होगा, क्योंकि आप आलसी नहीं है, इस लिए मेरा आलस्य भी सब दूर हो गया है। संसार में वह भाग्यहीन हैं, जिन को प्राणपति प्रीतम, भगवान भूल जाते हैं, और वह झूठी माया में मन को लगाये रहते हैं। जिन का मन प्रभु चरणों में लगा रहता है, वह तो सदा अमृत रस पान करते रहते हैं। नाम रस पीने से, शेष सारे संसार के रस अपने आप ही समाप्त हो जाते हैं, बस उसे हर जगह अपना प्यारा ही नजर आता है। जैसे गोपियों ने कहा

जित देखु तित श्याम-मई है
श्याम तन, श्याम मन, श्याम है हमारो धन
योग कहाँ आवे यहां सब राम नाम है

राम जी राम राम
श्री राम
24 3.04 (4.5 A.M)

Date 29.3.04

शब्द 4

चरना कमल की आस प्यारे,
जम कंकर नस गये विचारे।

II

तूँ चित आवे तेरी मइआ,
सिमरत नाम सगल रोग खइआ।

III

अनिक दुख देवहि अवरा को,
पहुचै न साके जन तेरे कउ।

IV

दरस तेरे की प्यास मन लागी,
सहज आनन्द वसै वैरागी।

V

नानक की अरदास सुणीजै
केवल नाम हृदय मे दीजै

रामजी राम राम
श्री राम
29.3.04 (4 AM)
कर कृपा हे दीनदयाला
तेरी आस पूरा गोपाला

व्याख्या शब्द 4

अपने प्रभु और की ही आशा है मन में, बस उन के चरणकमलों में पड़े रहें, इस प्रकार अगर जीवन बन जाये तो जन्म नहीं आयेगा अन्त समय हमारे इष्ट देव (रामजी, नारायण जी) ही हमारी आत्मा को अपने में मिला लेंगे। अगर आप की कृपा हो तभी आप सदा हमारे चित में बस सकते हैं, और अगर सदा आपकी ही याद में रहे तो, सारे मानसिक शारीरिक रोग नाश हो जाते हैं, ऐसा दृढ़ विश्वास है। क्योंकि भगवान का विरद है वह भक्तों की रक्षा करते हैं और दुष्टों का संहार करते हैं

परित्राणाय साधूनाम्
विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय
सम्भवामि युगे युगे (गीता)

मैं तो कुछ भी नहीं हूं।
केवल आप की बिकी हुआ दासी हूं। आप गुणों से भरपूर हो, इतने गहर गंभीर हो। आप के दरबार में तो करोड़ो दास हैं आप उन से अगंभीर रहते हो, सब कुछ आप का है

29.3.04

5

शब्द

उठत बैठत सोवत ध्याइये।
मारग चलत हरे हरी गाइए॥

II

स्रवन सुनीजै अमृत कथा,
जासु सुनी मन होय आनन्दा।
दुख रोग मन सगले लथा॥

III

कारज काम बार बार जपीजै।
गुरु प्रसादि हरि अमृत पीजै॥

4

दिनस रैण हरि कीरतन गाइए।
सो जन जम की बाट न पाइए॥

5

आठ पहर जिस बिसरहि नाही।
गति होवे नानक तिस लग पांही पाई॥

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
29.3.04 (4.30 PM)

शब्द व्याख्या

हमारे सतगुरु जी (रामजी, नारायण जी) का आदेश है कि हमें उठते बैठते, सोते जागते अपने प्रभु का ही गुण गान करना है, उन्हीं की कथाएं सुननी है, वह ही केवल अमृत है, शेष सब विष है उन की स्तुति आनन्द है, सारे रोग दूर हो जाते है सारे कर्तव्य कर्म करते हुए, बाहर भी जाते हुए उन्हीं का (राम नाम, श्रीराम या कर कृपा के मन्त्र का जाप होना चाहिए, ऐसे अगर दिन रात हम अपने प्रभु प्यारे की याद में रहेंगे तो सारी विघ्न बाधाओं से छूट जायेंगे, अन्त में भी उन्हीं में मिल जायेंगे, परन्तु ऐसे तो केवल सतगुरु ही हो सकते है, उन की चरण की रज से हमारी गति हो जायेगी, कृपा चाहिए।

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाल॥
तेरी आस पूरी गोपाल॥
29.3.04 (4.30 pm)

Date 30.3.04

शब्द 6

मांगऊ दान ठाकुर नाम।
अवर कछु मेरे संग न चाले,
मिले कृपा गुण गाम॥

2

राज माल अनेक भोग रस,
सगल तरुवर की छाम॥

3

धाई धाई बहुविधि को धावहि,
सगल निरारथ काम।

4

बिन गोविन्द अवर जो चाहु
दीसे सगल बाता है खाम

5

कहो नानक संत रेन मागऊ
मेरो मन पावै बिश्राम

रामजीराम
श्रीराम
30 3.04 (3 pm)

31.3.04

शब्द 6 व्याख्या

सतगुरु जी हमें शिक्षा दे रहे हैं कि हमें अपने इष्ट देव नारायण हरि जी से केवल उन का सिमरण भजन, नाम ही मांगना चाहिए। यह भी अगर उन की कृपा होगी, तभी मिलेगा, या उन्ही की कृपा याचना करो।

क्योंकि संसार के जितने भी माया के भोग हैं, जिन में हम रस चाह रहे हैं, वह केवल डाव हैं और सब अनित्य हैं जैसे वृक्ष की छाया, सुख मिलता है हम खुश हो जाते हैं जब डाव आता है तो हम भगवान को ही कहते हैं कि आपने हमें डाव दिया।

माया के पदार्थों की ओर जितना भागेंगे, उतना ही ज़्यादा डावी होंगे और अन्त में सब व्यर्थ ही लगते हैं, बिना गोविन्द प्रेम के सारे पदार्थ राख के समान है, जीव को परमानन्द की प्राप्ति तो केवल सतगुरु की चरण रज मिलने में है। केवल संतसंग मांगो

राम जी राम राम
श्री राम वह केवल कृपा से मिलेगा
कर कृपा प्रभु दीन दयाला
तेरी ओर पूरा गोपाला।

शब्द 7

मेरे प्रीतम प्यारे, मान करऊ तुध ऊपरे 2

1
हम अपराधी सद भूलते, तुम बलवान होरे।
मान ----

2
राखहु अपनी शरणा प्रभु, मोहे किरपा धारे
सेवा कछुअ न जानऊ, नीच मूरखारे
मान करऊ --

3
हम अवगुन करहि असंख नीत, तुम निरगुन दातारे
दासी सगति प्रभु त्याग, ए करम हमारे
मान ----

4
तुम देवहु सब किछु दइआ धारि, हम आकिरत धनेरे
लाग पेर तेरे दान से, नही चित रखमारे
मेरे प्रीतम --

5
तुम ते बाहर किछु नही, भव काटन होरे
कहो नानक शरणा दयाल गुरु, लेहु मुगध उधारे

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पुरी गोपाला

31.3.04

शब्द 7 व्याख्या

परम प्रिय सतगुरु जी, हमें चेतावनी दे रहे हैं कि हमें धन यौवन, ऐश्वर्य का मान नहीं करना चाहिए क्योंकि यह सब अस्थिर हैं, अपने प्रभु पर मान करो, जिसने यह सब पदार्थ दिये हैं। अपने रामजी से क्षमा मांगो, हम बहुत गलतियां करते हैं, सदा यही प्रार्थना करो कि हे प्रभो! हम मूर्ख हैं अपनी शरण में ले लो। हम मायावी जीव कितने ही अवगुणों से भरपूर हैं, हमारी संगत माया की है, इस लिए हम आप को भूल जाते हैं। आप हमें संसार के सब प्रकार के सुख देते हैं। तब भी हम आप को भूल जाते हैं, हम बहुत ही कृतघ्न हैं, क्योंकि माया की वस्तुएं पा कर हम आप को भूल जाते हैं। यह संसार सारा आपने ही रचा है आप ही पालन कर्ता है और आप ही संहार कर देते हैं मैं तो एक बहुत ही मुग्ध अनजान छोटा सा बालक हूं आप इस का उद्धार अवश्य कर देना।

रामजी राम राम
श्री राम
31.3.04 (5.45 AM)

Date 1.4.04

शबद 8

I

हरि जीओ कृपा करे 2

तॉं नाम धियाइऐ जीओ 2

हरि जीओ ----

II 2

सतगुरु मिले सुभाए,

सहज गुण गाइए जीओ। हरि जीओ ----

III 3

अहंकार हउमै तजै माइआ,

सहज नाम समावए।

हरि जीओ -----

4

आप करता करे सोइ

आप देइ तां पाइए

हरि जीओ कृपा करे ---

5

गुण गाए निरमलै सदा अनदिन,

जॉं आपे साचे भावए।

हरि जीओ कृपा करे --

राम जी राम राम

श्री राम

कर कृपा गुरु दीनदयाला

तेरी आस पूरी गोपाला

1.4.04 (4.5 AM)

शब्द 8 (व्याख्या)

प्रभु किरपा बिना, कुछ भी नहीं हो सकता, जब विशेष कृपा प्रभु करते हैं तो सतगुरु से मेल करवाते हैं और सतगुरु के मिलने से हमारी सहज अवस्था हो जाती है। कि हमें हर समय रामजी की विस्मृति होती ही नहीं। हरि गुण गाते गाते हमारे अन्दर जो कमल औंधा पड़ा है वह सीधा हो जाता है जिससे हमारे मुख मंडल पर सदा अलौकिक आनन्द प्रगट हो जाता है। जो सब को आनन्द देता है। अहमता ममता सब समाप्त हो जाती है। बस भजन सिमरण ही मन को भाता है। यह सब प्रभु आप ही करते हैं सदा मन रूपी कमल खिला रहता है। यह सब तभी होता है अगर हमारी भक्ति प्रभु को भा जाती है।

तुम्हरे भजन राम को भावै
जन्म २ के दुख बिसरावै (हनुमान चालीसा)

कृपा चाहिए।

रामजी राम राम
श्रीराम
बरु कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
1.4.04 (4.10 AM

1.4.04

शब्द 1

झवड़ मागी मीहु वरसै, भी गुरु देखरा जाई,
भी गुरु देखरा जाई प्यारिया, भी गुरु देखरा जाई

2

समुद्र सागर होवै बहु खारा, गुरु सिख लघ गुरु पै जाई
भी गुरु देखरा जाई ---

3

जिऊ प्राणी जल बिन है मरता,
तिऊ गुरु सिख, गुरु बिन मरजाई
भी गुरु देखरा --

4

जिऊ धरती सोम करे जल वरसै,
तिऊ सिख, गुरु मिल विगसाई

5

सेवक का होय, सेवक करता,
कर कर विनम बोलाई।

6

नानक की बेनती हरि पै
गुरु मिल गुरु सुख पाई

राम जी राम राम
जी राम
1.4.04 4.30 PM

2.4.04

व्याख्या शब्द 9

संसार में प्रेम और आध्यात्मिकता में भी प्रेम है। सर्वोपरि है, जैसा प्रेम हमें संसार का है अगर ऐसा भगवान से हो जाये तो, हमारा शीघ्र ही उद्धार हो जाये इसी विचार को मन में रखते हुए गुरु साहब फरमाते हैं कि कितनी भी मुश्किलें हों अपने सतगुरु को भगवान को रोज़ ही मिलना है, जैसे हम जल के बिना नहीं रह सकते ऐसे ही गुरुसिख, अपने प्रियतम सतगुरु बिना नहीं रह सकता। जैसे वर्षा होने से धरती हरी भरी हो जाती है ऐसे ही शिष्य अपने प्यारे गुरु को देख कर खिल उठता है। वह सेवक बार २ प्रार्थना करता है कि मुझे अपने चरणों का सेवक बनाये रखना। क्योंकि सतगुरु से वह सच्चा खजाना प्राप्त होता है जिस के बराबर संसार का राज्य एश्वर्य कुछ भी नहीं है। महाराज कहते हैं कि आप सब यही प्रार्थना करो कि हमें कोई पूर्ण सतगुरु मिल जायें तो हम भी शाश्वत खुश हो जायें।

राम जी राम राम
2.4.04 (4.15 A.M)

24.04

शब्द 10

मेरे साहिब, मेरे साहिब, तूँ मै मारा निमाणी,

1

अरदास करी प्रभु अगो आगे, सुणि सुणि जीवां तेरी वाणी

मेरे साहिबा - - - -

2

तुध चित आये महा आनन्दा,
जिस विसरहि सो मर जाये।
दयाल होवे, जिस ऊपर करते,
सो तुध सदा ध्याये।

मेरे साहिब - - -.

3.

चरण धूड़ तेरे जन की होवां,
तेरे दरशन को बलि जाई।
अमृत वचन हृदय उरधारी,
तऊ किरपा ते सगल थाई।

4

अतर की गति तुध पै सारी
तुध जेवड अवर न कोई
जिस नू लाये लहे से लागे

2.4.04

भगत तुहारा सोई।
5
दोय कर जोड़ मांगू इक दाना,
साहिब तुड पावां।
साम सात नानक आराधे,
आठ पहर गुरा गावां।
मेरे साहिब - - .

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूरा गोपाला
2.4.04 (11 P.M.)
5 Limco

व्याख्या शब्द 10

अपने सतगुरु के आगे, सदा हमें निमाणा, दीन अनाथ बने रहना है, क्योंकि प्रभु मेरे तो अखण्ड ब्रह्मण्ड-नायक हैं, समरथ हैं, स्वामी हैं, अन्तरयामी हैं। उन के आगे तो सदा यही अरदास, प्रार्थना, जोदरी, करनी है कि हम केवल आप की वाणी सुने और संसार की कोई भी चर्चा सुनने को मन न करे

4.4.04

उन के सम्मुख यही प्रार्थना करो। मुझे, परमा-
आनन्द ओ। जब आप मेरे चित्त में विराजमान
हो, और जब आप का नाम, आप का ध्यान
विस्मृत हो, तो लगे कि मेरे प्राण निकल गये हैं,
क्योंकि आत्मा का भोजन तो केवल आप का
नाम ध्यान है। यह भी तभी हो सकता है जिस
पर आप कृपा करें।

और प्रार्थना करो, कि मुझे सतगुरु जी की
चरण रज अवश्य प्राप्त हो। और उन के दर्शन
नित्य प्रति अवश्य हों, जो वह वाणी अमृत
वचन बोलें, उन्हें मैं हृदय में धारण करूं। उन का
सत्संग, सानिध्य नित्य प्रति मिले, यह सब
प्रभु कृपा से ही हो सकता है।

मैं अपनी अन्दर की व्यथा आप को ही कहूँ
क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है, आप से बढ़
कर और मुझे कोई नहीं लगता, आप तो
अति महान हो। यह सब तो तभी अनुभव हो
सकता है जब मैं केवल आप का ही भक्त बनूं

दोनो हाथ जोड़ कर मेरी यही प्रार्थना है,
कि आप सदा मुझ पर प्रसन्न रहें। और स्वासर
मैं आप की ही आराधना करूं। और आठ पहर
आप के ही गुण गाऊं। आप का ही दर्शन करूं
यही मेरी प्रार्थना स्वीकार करो
स्वीकार करो, स्वीकार करो।

रामजी राम राम
श्री राम
कर कृपा पूरो दीनदयाला
तूही और पूरो गोपाला
11. 4. 04 (3.40 PM)

5.4.04

शब्द 11 व्याख्या

मेरे राम राय तूँ सतां का सतं तेरे,
तेरे सेवक को भऊ किछ नाही,
जम नही आवै नेड़े। मेरे राम राय ---

2.

जिस के सिर ऊपर तूँ स्वामी,
सो दुख कैसा पावै,
बोल न जाणौ माया मद मत्ता,
मरणा चित न आवै।

3.

जो तेरे रंग रत्ते स्वामी,
तिन का जन्म मरण दुख नासा।
तेरी वडिआई मेटे कोई,
सतगुरु का दिलासा।

4

नाम धयायन सुख फल पायन,
आठ पहर आराधै,
तेरी शरणा तेरे भरवासे,
पचे दुष्ट लै साधै मेरे राम राय--

गिआन धिआन किछ करम न जाणा
सार न जाणा तेरी,
सब ते वडा सतगुरु नानक,
जिन कल राखी मेरी। मेरे राम राय --

भावार्थ शब्द 11

संसार में सब से बड़े राजाधिराज तो रामजी हैं, और जिस पर राजा की कृपा हो उसे कोई भी कुछ नहीं कह सकता। वही संत है जो पूर्ण अपने प्रभु के हो गये हैं, वह निर्भय है उन्हें मृत्यु भी नहीं सताती, दुखी करती। वही कभी भी दुखी नहीं होते। दूसरे जो हर समय माया में लीन हैं जिन्हें मृत्यु याद नहीं वह रामजी के संत नहीं बन सकते, हमेशा दुखी रहते हैं। संत भक्त प्रेमी तो सदा अपने प्रभु के रंग में, रंगे रहते हैं उन का जन्म मरण भी खत्म हो जाता है, ऐसी भगवान उन पर कृपा कर देते हैं। सतगुरु जीने की कला सिखा देते हैं? कि आप सदा

Date 6.4.04

गुरु मन्त्र का जाप जपते रहो। अपने प्रभु को अपने हृदय में धारण करो है। रामजी पर पक्का विश्वास, भरोसा, आस्था रखो। ऐसे करते 2 पांच चोर (काम क्रोध लोभ मोह अहंकार) सब वश में हो जायेंगे। और इतनी नम्रता आ जायेगी, कि आप हर समय अपने आप को ही समझोगे कुछ नहीं आता। प्रभु प्राप्ति के मार्ग में। ज्ञान नहीं ध्यान नहीं। अच्छे कर्म नहीं। भगवान की गति नहीं जानता। ऐसे अपने आप को समझो। फिर अपने आप सतगुरु (भगवान) तुम्हारी संसार में लाज रखेंगे जीवन सफल हो जायेगा, परलोक सुधर जायेगा।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला
6.4.04 (4 AM)

6.4.04

शब्द 12 (रामजी के बिना कोई नहीं)

ठाकुर तुम बिन आहि न मोरा 2।

2.
मात पिता भाई सुत बंधुप,
तिन का बल है थोरा। ठाकुर - - -

3.
अनिक रंग माया के पेखे,
किछु साथ न चालै मोरा। ठाकुर - - -

4.
मोहे अनाथ निगुरा गुरा नाही
मैं आइओ तुम्हारो धोरा। ठाकुर - - -

5.
बलि बलि चरण तुम्हारे,
इहां उहां तुम्हारो जोरा। ठाकुर - - -

6.
साध संग नानक दरस पाइओ
बिनविओ सगल निहोरा। ठाकुर - - -

रामजी राम राम
श्री राम
6.4.04 (4.5PM)

6.4.04

शब्द 13

मेरा वैद्य गुरु गोविन्दा 2

1

हरि २ नाम अऊखद मुख देवै,
कोटि जम के फन्दा। मेरा वैद्य ---

2

जन्म जन्म के दुख निवारै,
सूका मन साधारे।
दरशन भेटत होत निहाला,
हरि का नाम विचारे। मेरा वैद्य ----

3.

समरथ पुरख पूरन विधाते,
आपे करणैहारा।
अपना दास हरि आप उधारिआ,
नानक नाम आधारा।

राम जी राम राम
जी राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
त्रिभुवन पूरी गोपाला
6.4.04
(4 PM)

7.4.04

शब्द 13 "दयालया"

संसार में जिसने गुरु धारण नहीं किया, उसे निगुरा ही माना जाता है। वैसे तो हम ज्योंही इस मृत्यु लोक में आते हैं, तभी से गुरु गुरु शुरु हो जाते हैं माता पिता, स्कूल के गुरु। परन्तु इन सब से आवश्यक है, आत्मा के लिए गुरु, जो हमें परमात्मा तक जोड़ सके हमें सांसारिक बन्धनों से मुक्त कर दे। वह है हमारे वैद्य Doctor गुरु जो हमें ऐसी दवाई देते हैं, जन्म २ के अन्दर के रोगों को ठीक कर देते हैं, नाम दान दे कर। उन के दर्शन मात्र से, हम कृत्य कृत्य हो जाते हैं। क्योंकि वह समरथ होते हैं, वह पूरी होते हैं। वह अपने दास का उद्धार कर देते हैं। लोक परलोक सुहानी बना देते हैं। ऐसे सतगुरु पर हम बलिहार जाते हैं।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
8.4.04 (3.30 A.M)

8.4.04

शब्द 14
(प्रभात समय उठने के लाभ)

प्रातः काल हरि नाम उचारी, तथा आज्ञा
इत उत की ओट सवारी।

2
सदा सदा जपिए हरि नाम,
पूरन होवहि मन के काम।

3
प्रभु अविनाशी रैण दिन गाऊ,
जीवत मरत निश्चल पावहि थाऊ।

4
सो सहु सेव, चित जित तोट न आवै,
खात खरचत सुख अनद निहावै।

5
जग जीवन पुरख साध संग पाइआ,
गुरु परसादि नाम धयाइआ।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
हो आट पूरी गोपाला
8.4.04
(3 AM)

8.4.04

शब्द 14
(सतगुरु की आज्ञा) ?

प्रभात समय उठो। उठ कर गुरु मन्त्र का जाप करो, प्रार्थना करो। ऐसा करने से लोक परलोक सुखी होगें। तुम्हारी भगवान लाज रखेंगें। सवेरे २ नाम जपने से सारा दिन नाम चलता रहेगा। मनो कामनाएं सारी पूर्ण हो जायेगी। भगवान तो अविनाशी है, हमारी आत्मा भी अविनाशी है। दिन रात सिमरन करने से मृत्यु का डर भी समाप्त हो जायेगा। ऐसा शाहों के शहनशाह का सदा सिमरन करो, जिस की सेवा करने से कोई कमी नही रहेगी। जितना हम सच्चा धन कमायेंगे, औरों लोगों को बतायेंगे, उतना और बढ़ेगा, जीवन में आनन्द बढ़ता जायेगा। ऐसा जगत के जीवन देने वाले सतगुरु भगवान, केवल संतो के संग से प्राप्त होते है। भगवत कृपा, गुरु कृपा से ही मुक्ति हो सकता है। इस लिए कृपा मांगो कर कृपा ....

राम जी राम राम
श्री राम
8.4.04

9.4.04
3.30AM

शब्द 15

हरि बिसरत सदा खुआरी,
तों को धोखा कहां व्यापै,
जां को ओट तुम्हारी। हरि बिसरत -----

2
बिन सिमरन जो जीवन चलना,
सरन जैसे अरजारी।
नव खंडन को राज कमावै,
अंति चलेगो हारी। हरि बिसरत सदा --

3
गुण निधान गुण तिन ही पाए,
जा कऊ किरपा धारी।
सो सुखिआ धन उस जनमा,
नानक तिस बलिहारी। हरि बिसरत ---.

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
9.4.04

10.4.04
4.10 P.M.

शब्द 15 व्याख्या

हरिनाम न जपने से, संसार में खुआर ही होगे जिसने प्रभु का आश्रय ले लिया है, उसे संसार कभी भी धोखा नही दे सकता, क्योंकि सदा के लिए भगवान उस के अंग संग रहते हैं। दर्शन देते हैं कोई गलत काम नही करने देते। राम जी उस की बुद्धि में बैठ कर बुद्धियोग कर देते हैं, कि प्रभु की याद के बिना, तो जीवन ऐसा है, जैसे सर्प का जीवन है अर्थात वह हर समय चिंता रूपी विष ही उगलता रहता है। चाहे वह सारी सृष्टि का राजा क्यों न हो, अन्त में वह संसार से हार कर, रोता हुआ ही जाता है। गुणों के खजाने तो केवल राम जी ही हैं वह उसे ही प्राप्त होते हैं, जिस पर प्रभु कृपा करते हैं। वही सुखिआ है, उस का जन्म धन है, गुरु नानक जी कहते हैं, मैं ऐसे जीव पर बलिहार जाता हूं।

रामजी राम राम
श्री राम
10.4.04

14.4.04

शब्द 16

गुण निधान मेरा प्रभु करता,
उसतत कउन करीजै राम।
सतां की वेनती स्वामी,
नाम महारस पीजै राम।

2 नाम दीजै दान कीजै,
विसर नाही इक खिन्नों।।
गुण गोपाल उचार रसना,
सदा गाइए अनदिनों।।

3 जिस प्रीत लागी नाम सेती,
मन तन अमृत भीजै।।
विनवंत नानक इह पुनी,
पेख दरशन जीजै।।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरन गोपाला
14.4.04 (4 P.M.)

Date 16.4.04

शब्द 16 व्याख्या

जो सदा अपने प्रभु की उसतति करते हैं और हमेशा नाम महारस पीते हैं.. वही संत हैं वह हमेशा अपने सतगुरु को गुणों का निधान (खजाना) समझते हैं। उन को भगवान मे कभी अवगुण नही दिखते और कभी भी कषाय नही आता, वह निरन्तर यही प्रार्थना करते हैं कि उन के मन से कभी भी प्रभु विस्मृत न हों। अपनी रसना से रात दिन भगवान के गुण, प्रभु नाम ही उच्चारण होता रहता है।

जिस की ऐसी प्रीती भगवान से लग गई है। उस का मन तन अमृत मे ही स्नान करता रहता है। महाराज फरमाते हैं कि मेरी ऐसी इच्छा पूरी हो गई है इस लिए मै तो सदा अपने प्रियतम के दर्शन पा कर ही सन्तुष्ट होता हूँ

रामजी रामराम
श्रीराम
16.4.04 (4 A.M.)

शब्द 17

गोविन्द नाम मत बीसरे रे वाई
गोविन्द नाम मत बीसरे

2.
अंत काल जो लक्ष्मी सिमरे,
ऐसी चिन्ता मे जो मरे,
सर्प जोनि वल वल अवतरै।

3.
अंत काल जो इसत्री सिमरे,
ऐसी चिंता में जो मरे,
वेसवा जोनि वल वल अवतरै।

4
अंत काल जो लड़के सिमरे,
ऐसी चिंता में जो मरे,
सूकर जोनि वल वल अवतरै।

5
अंत काल जो मंदर सिमरे,
ऐसी चिंता मे जो मरे,
प्रेत जोनि वल वल अवतरै।

अंत काल जो नारायण सिमरे ऐसी चिंता में जो मरे
पीतांबर वा के दुख हरे।

रामजी
रामराम
श्रीराम
16.4.04
(3.30 PM)

Date 17.4.04

शब्द 17 व्याख्या

मनुष्य जीवन का एक मात्र लक्ष्य है, भजन सिमरन, परन्तु भगवान ऐसी अपनी माया डाल देते हैं कि जीव संसार में आ कर, माया का ही सिमरन करने लग जाता है, वह है, धन परिवार, मकान आदि। जब सतगुरु मिलते हैं तो वह समझाते हैं कि जिस का सिमरन हम सारी उमर करेंगे, उसी का सिमरन हमारा अन्तकाल में भी होगा। जैसे हम सारी आयु केवल धन कमाने में ही लगा देंगे, तो अन्त समय भी अगर हमारा मन धनदौलत में ही रह गया तो, अगले जन्म में सर्प बनना पड़ेगा, ऐसे ही अगर पुरुष का मन पत्नी में, स्त्री का मन पति में रह गया तो वेश्या का जन्म होगा या नपुंसक होगा। बच्चों में ध्यान रहा तो सूअर बनेंगे। आहा! अगर नारायण जी सन्मुख आ गये तो, वह उन्हीं का रूप हो जायेगा आवागमन से छुटकारा मिल जायेगा। यह तो केवल पूरी प्रभु की कृपा से ही हो सकता है इस लिए

कर कृपा को प्राप्त अवश्य जो

Simrjit Singh

17.4.04 (4 PM)

17.4.04

गुरुशब्द 18

नमो नमो नमो, नेति नेति नेति है,
चरण शरण गुरु एक पैडां जाय चल,
सतगुरु कोटि पैडां आगे होय लेत हैं।
नमो नमो नमो नमो --

2

एक बार सतगुरु मन्त्र सिमरन मात्र,
सिमरन ताही बारम्बार गुरु हेत हैं।
नमो नमो नमो नमो --

3.

भावनी भक्त भोय कोटि अगमण शोवे,
ताही गुरु सरब निधान दान देत हैं
नमो नमो नमो नमो --

4.

सतगुरु दयानिधि महिमा अगाधि बोध,
नमो नमो नमो नमो, नेति नेति नेति हैं।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला
17.4.04 (4 A.M.)

व्याख्या शब्द 18 21.4.04

सतगुरु को कोटि कोटि प्रणाम करो, क्योंकि उन की महिमा, उन के परोपकारों का तो कोई अन्त नहीं है। उन की शरण मे कोई एक कदम चलता है तो वह उसे करोड पग और चलाते हैं अर्थात धर्म का मार्ग चला कर उसे अपना रूप बना देते हैं। जो गुरुमन्त्र वह देते हैं अगर उन की कृपा से वह हमारे अन्दर में सहज अवस्था में चलता रहता है। वही हमारा हितकारक है। ऐसा याद कराते रहते हैं। उन के वचनों में भावना विश्वास श्रद्धा रखें, तो सतगुरु उसे ऋद्धियां सिद्धियां दान मे दे देते हैं। यह तो इतने दया के खजाने हैं। उन की महिमा का कोई अन्त नहीं, अगम है, अपार हैं, दयासागर हैं, आप को करोड़ो बार नमस्कार नमस्कार नमस्कार है।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी आस पूरी गोपाला
21.4.04 (10.30 pm)

21.4.04

शब्द 19 बुधवार

कहा भयो जो दीऊ लोचन मूंद के,
बैठ रह्यो बक ध्यान लगायो,
नहात फिरिओ लीए सात समुद्रन,
लोक गयो परलोक गवाइओ,
वास कीओ विविअन सो बैठ के,
ऐसे ही ऐस सु बैस (उमर) गित्राओ,
साच कहयो सुन लेहो सभै,
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।

व्याख्या शब्द 19

सतगुरु महाराज जी रामजी, हमे समझा रहे हैं। कि अगर हम आंखें बन्द कर के ध्यान में बैठ जाते हैं, और हमारा मन अन्दर में विषयों का चिन्तन करता रहता है, तो कोई लाभ नही। अपने इष्ट देव का अन्तर मे ध्यान करना है उन का आलौकिक स्वरूप ध्यान में रहे, साथ२ जो मन्त्र दिया है वह भी श्वासों मे चलता रहे आगे जो भी अनुभव करवायेंगे यह उन की

21.4.04

कृपा से होगा। बगुला समाधि का कोई लाभ नहीं, अगर हम सारे तीर्थ स्नान कर लें, इस संसार के तब भी, कोई लाभ नहीं क्योंकि अहंता आ जाती है। और परलोक में भी कोई लाभ नहीं, क्योंकि वहां तो केवल सिमरण भजन साथ चलता है विषयों को भोगते २ आयु बीत जाती है परन्तु आशा तृष्णा नहीं मिटती।

वस प्रेम मार्ग ही सब से उत्तम मार्ग है

सब से ऊंची प्रेम सगाई
दुर्योधन के मेवा त्यागे
साग विदुर घर खाई
सब से ऊंची प्रेम सगाई

राम जी राम राम
श्री राम
श्री दीनदयाल
कर कृपा प्रभु दीनदयाल
तेरी ओट पूरा गोपाल
(11 P.M.)
21.4.04

29.4.04

20

शब्द गुरुवार 4 A.M.

हरि जीओ कृपा करे 2,

तॉ नाम धिआइए जीओ 2।

हरि जीओ कृपा करे

2.

सतगुरु मिले सुभाए,

सहज गुरा गाइए जीओ।

हरि जीओ कृपा --

3

गुरा गाई विगसे सदा,

अनदिन जॉ आपे सचे भावए।

हरि जीओ .

4

आप करता करे सोई,

आप दे तॉ पाइए।

हरि जीओ कृपा करे, तॉ नाम धयाइए जीओ।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पुरा गोपाला

29.4.04

20 04 AM

व्याख्या शब्द

जब पूरी प्रभु आवरण ब्रह्माण्ड नायक की कृपा होती है। तभी यह मायावी जीव, भगवत मार्ग पर चल सकता है। नाम का ध्यान, प्रभु प्राप्ति की इच्छा, मन में जागृत होती है। तब अपने आप ही पूरी सतगुरु प्राप्त होते हैं। वह हमारे भजन सिमरण की सहज अवस्था कर देते हैं।

भगवान के गुण गाने से कीर्तन शब्द आदि बोलने से हमारा मन कमल की तरह खिल उठता है, तो समझो कि हमारी भक्ति प्रभु को भा गई है, स्वीकार हो गई है।

यह सब प्रभु आप ही करें तो हो सकता है। वही कृपा करते हैं तो हमें पूर्णता प्राप्त हो सकती है।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी और पूरी गोपाला

30.4.04

शब्द 21

हरि राम, राम राम, रामा,
जप पूरी होय कामा।

2

राम गोविन्द जपेनदिया होया मुख पवित्र,
हरि जस सुणिए जिस ते, सोई भाई मित।

3

सभ पदारथ सभ फला, सर्व गुणा जिस मांही,
किऊ गोविन्द मनो विसारिए, जिस सिमरत दुख जाही।

4

जिस लड़ लगिए जीविए, भव जल पइए पार,
मिल साधू संग उधार होय, मुख ऊजल दरबार।

5

जीवन रूप गोपाल जस, संत जना की रास
नानक उधरै नाम जप, दर सच्चे शाबाश।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाली
तेरी ओट पूरी गोपाली।
30.4.04 (4 AM) शुक्रवार

1.5.04

शब्द 21 CENTRAL IDEA

पूर्ण प्रभु के अनन्त नाम हैं, हरि, गोविन्द गोपाल राम
इन नामों का रहस्य और महिमा केवल सतगुरु ही
बताते हैं, कि भगवान का नाम लेने से सब कार्य पूर्ण हो
जाते हैं, जो हमें नाम बताते हैं, वही हमारे सच्चे मित्र हैं, साथी हैं
सुहृद हैं, बार बार हमें चेतावनी देते रहते हैं, संसार में सब
कुछ मिलेगा, मिलता है, जिस के नाम जपने से, और मूर्ख
प्राणी तूँ उसे ही भूल जाता है, गुरु मन्त्र का जाप करने से
और संतो का संग करने से, सदैव मुख पर तेज और प्रसन्नता
झलकती है, और उद्धार हो जाता है, प्रभु स्तुति गान करने से
जीवन बदल जाता है।

बलिहारी गुरु आपणो दिऊहारी सद बार
जिन मानुष ते देवते किये करत न लागी बार

मनुष्य संत बन जाते हैं, और उन्हें हर जगह शाबाशी
मिलती है।

रामजी राम राम
श्री राम
1.5.04 (4 A.M)
शनिवार

3.5.04

शब्द 22

मैं सारा जग एह भालिआ
मेरे राम जी जैसा कोई नही 2

2
जैसा सतगुरु सुरीदा
तैसो ही मै डीठ
मै सारा जग - - -

3
विछुड़यां मेले प्रभु, हरि दरगह का बसीठ
मै सारा - - - .

4
हरि नामो मंत्र द्रढाइदा, कटे हउमै रोग
जैसा - - - .

5
नानक सतगुरु बिना मिलाइआ, जिना धुरे पया सजोग
जैसा सतगुरु —

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
3.5.04 (4.15 P.M.)

3.5.04

22

शब्द ग्यारहवा

मैंने लोगों से बहुत बार सुना कि सतगुरु बड़े दयालु कृपालु होते हैं। उन्हें संसारी जीवों पर दया आती है, वह "कर कृपा" का एक मन्त्र देते हैं। एक भाग्यवान दिन मेरा भी आ गया, सचमुच ज्योंही मैंने दर्शन किये आनन्द आ गया उन जैसा मुझे अब संसार में कोई भी नहीं लगता। उन्होंने मेरी आत्मा को परमात्मा के साथ एकाकार कर दिया मेरी सारी अहंता ममता काट दी।

ऐसे सतगुरु तो तभी मिलते हैं जब हमारे पिछले संस्कार तेज, अच्छे हो, अब तो जीवन में आनन्द ही आनन्द है।

न कोई चिन्ता न कोई फाका
आगे पीछे राम हमारा।

राम श्रीरामराम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी आरत पूरी गोपाला
3.5.04 (4 AM)

4.5.04

गुरु शब्द 23

मागऊ दान ठाकुर नाम, मागऊ दान ठाकुर नाम

2.
अवर कछु मेरे संग न चाले, मिले कृपा गुरा गाम

3
मागऊ---
राज माल अनेक भोग रस, सगल तरुवर की छाम

4
मागऊ---
धाई धाइ बहुविधि को धावै, सगल निरारथ काम

मागऊ दान -

5
बिन गोबिन्द अवर जे चाहऊ, दीसै सगल बात है खाम

मागऊ दान ठाकुर --

6
कहु "नानक" संत रेरा मागऊ, मेरो मन पावै बिश्राम

मागऊ दान ----.

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला॥
5.5.04 (5 AM)
मंगलवार

4.5.04

Central idea

गुरुशब्द 23

महाराज जी हमें आज्ञा दे रहे हैं रे जीवो अपने सतगुरु से भगवान से, केवल नाम की याचना करो, भगवान से भगवान को मांगो, और दान के रूप में मांगो, क्योंकि संसार में और कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है, और न ही साथ जाने वाली है। बस हमारा जपा हुआ नाम और अच्छे कर्म ही हमें अगले अच्छा जन्म प्रदान करते हैं। यह संसार का सारा ऐश्वर्य पेड़ की छाया की तरह जल्दी ही नाश हो जाने वाला है जितनी यह हमारी दौड़ धूप है सब व्यर्थ है। अगर हम भगवान के नाम बिना यह सब करते हैं तो इस का परिणाम कुछ भी नहीं निकलेगा। बस संतों की चरण रज से ही हमारे मन को शान्ति मिल सकती है

मुख में हो राम राम, राम सेवा हाथ में, यह केवल संत सतगुरु रामजी ही बतायेंगे।

राम जी राम राम
श्री राम
4.5.04 (4.10 AM)

5.5.04

गुरुशब्द 24

तूँ समरथ सदा, हम दीन भेखारी राम
माइआ मोह मगन, कढि लेहो मुरारी राम

2.

लोभ मोह विकार बांधिओ, अनिक दोख कमावनो
अलिप, बन्धन रहित कर्ता, किआ अपना पावनो

3

कर अनुग्रह पतित पावनो, बहु जोनि भ्रमते हरी
विनवंत नानक दास हरि का, प्रभ जीअ प्राण आधारी

व्याख्या ~~central idea~~ शब्द 24

हे प्रभो! आप तो समरथ हो, सब कुछ कर सकते हो, हम तो सदा ही दीन है क्योंकि हमेशा आप से मांगते ही रहते हैं। यह आपकी माया ही हमें अपनी ओर खींच लेती है, आप ही हमें अपनी कृपा से इस माया से निकाल सकते हो, अब हमें आप अपनी शरण में रखो, और हमारा उद्धार कर दो।

हम तो लोभ मोह आदि कई विकारों में बंधे हुए कई जन्मों से दुख ही दुख पाते आ रहे हैं। आप तो अलिप्त हो, सब कुछ करने वाले हो

5.5.04

हमें पता भी है कि, हमें अपनी करनी का फल अवश्य मिलेगा फिर भी माया से प्रेरित हो कर कई गलत कर्म कर जाते हैं। भगवान तो अलिप्त हैं जैसा कि वह गीता में फरमाते हैं।

"रह कर उदासी सा अलिप्त हो
कर्म करता सभी" (गीता)

हमें अपने प्रभु से सदा इस प्रकार नित्य प्रति प्रार्थना करनी चाहिए हे पतितों को पावन करने वाले राम जी अब तो कृपा कर दो, अनेक योनियों में फिरते २ अब यह जीवात्मा थक गई है। हार गई है। अब तो प्रभो अपनी दासी बना लो, शरण में रख लो। आप ही मेरे प्राण-आधार हो।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा हे दीन दयाली
तेरी शरण पूरी गोपाली
5.5.04 (3.35 A.M)

8.5.04

गुरुशब्द 25

तूँ समरथ बड़ा मेरी मति थोड़ी राम
पालहि अकिरतघराम। पूरन दृष्टि तेरी राम

2.

अगाधि बोध अपार करते,
मोहि नीच कछु न जाराम।
रतन त्याग सगुंह कौड़ी,
पशु नीच इमाराम "।
तूँ समरथ - -

3.

तिआग चलती महा चंचल,
दोख कर कर जोड़ी।
नानक शरण समरथ स्वामी,
पैज राखहु मोरी।
तूँ समरथ

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा गुरु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला
8.5.04 (3.40 P.M)

8.5.04

व्याख्या शब्द 25

हे मेरे प्रभु हे मेरे रामजी, नारायण जी आप तो सर्व कला समर्थ हो, परन्तु मैं तो मायावी जीव आप के सामने कुछ भी नहीं हूं। न गुण मे बल है न बुद्धि है, न विद्या है। और मैं तो कृतघ्न हूँ फिर भी आप मेरे पर कृपा-दृष्टि रखते हो, कृपा करते रहते हो।

आप तो अपरम्पार हो, आप तक पहुंचना बड़ा कठिन है, और मैं छोटा सा जीव, माया मे लिप्त नीच हो गया हूं। मैंने आप का नाम रत्न छोड़ कर माया जिस का मूल्य कुछ भी नहीं कौडियो के समान है इस मे लग गया और पशु बन गया। यह माया महां चंचल है फिर भी इस के लिए मैंने कई पाप किये। आप मेरे समर्थ स्वामी हो अब मेरी लाज राखो लो। हे मेरे स्वामी अब अपनी शरण मे ले लो।

रामजीराम राम
श्रीराम
8.5.04 (3.45 pm)

8.5.04

शब्द 26

हरि दइआ प्रभु धारहो, पावरा हम तारहो
कढि लेवहो शब्द सुभाई जीओ
मोह चीकड़ काये, निघरत हम जाते
हरि बांह प्रभ पकराये जीओ

2.

प्रभ बांह पकराई उत्तम मति पाई
गुरु चरणी जन लागा
हरि हरि नाम जपिआ आराधिआ
मुख मस्तक भाग सभागा

3.

हरि दइआ प्रभ धारहो, पावरा हम तारहो
कढि लेवहो शब्द सुभाई जीओ

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तूरी आट पूरी गोपाला
8.5.04 (4 A.M)

8.5.04

26 शब्द व्याख्या

हे प्रभो! हम तो संसार का भार ढोते ढोते भारी पत्थर हो गये हैं। अब तो प्रभु दया कर दो हमें इस भवसागर से पार कर दो। हमें सहज अवस्था वाली भक्ति दो। हमारे अन्दर शब्द सुरति का मेल करवा दो। हम तो मोह के कीचड़ में फँस गये और अपना वास्तविक घर भूल गये। अब तो हे प्रभो। हमारी बांह पकड़ लो। अर्थात हमें उभार लो।

जब हमारी बांह आप पकड़ोगे तो हमारी मति अच्छी हो जायेगी तब हमारा मन गुरु चरणों में समाहित हो जायेगा। गुरु चरण क्या है। जो नाम हमने अपने सतगुरु से लिया है। उस मन्त्र को मन बुद्धि चित से जाप करना, यह है गुरु चरणों को धोना। यह सभी तभी प्राप्त हो सकता है जब हमारे भाग्य में हो। हे प्रभो आप कृपा करो तो यह पत्थर भी तर जायेंगे।

रामजीराम राम
श्रीराम
11.5.04 (4 A.M.)

11.5.04

28

शब्द

तुम्हरी किरपा ते मानुख देह पाई है,
देहु दरस हरि राइआ। अनिक जनम बहु जोनि भ्रमिआ
बहुर बहुर दुख पाइआ

2

मिलहु प्यारे जीआ सभ कीआ तुम्हारा थीआ।
तुम्हरी किरपा ते-

3.

सोई होआ जो तिस भाया, अवर न किनही कीता,
तुम्हरे भाणे भरम भौ मोहिआ, जागत नाही सूता।
तुम्हरी --

4

बिनऊ सुनहो तुम पुरापति दाते प्यारे
किरपा निधि दयाला
राखि लेहो पिता प्रभ मेरे, अनाथह कर प्रतिपाला
तुम्हरी किरपा --

5

जिसनू तुम्हे दिखाइओ दरशन, साध संगत के पाइ
कर किरपा धूर देहो संतन की, सुख नानक पाइ।
वाहे

रामजी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरा गोपाला

12.5.04

शब्द 28

हे मेरे राम जी आपने अति कृपा की, मुझे अपने मनुष्य शरीर दिया और दूसरी कृपा की, कि मेरे मन में आपने, अपने दरशन की लालसा दी और मुझे सतगुरु, राम जी से मिलाप करवाया उन्होंने बताया।

लख चौरासी भरम के मनुष्य जन्म लिया पाय
अब कि के भी हरि न भजा लाख चौरासी जाय

हे प्रभो, सब आप का ही किया होता है, अब मेरे ठौर आन मिले, यह विरह भी तो आपने ही दिया है। जो आप करते हैं वह ही होता है, कई जन्मों से आप मुझे मोह माया में ही भरमाते रहे, जगाया नहीं, सोया ही रहा अब मेरी प्रार्थना सुनो, आप तो कृपा निधि हो, अब मेरी रक्षा करो, मेरे जैसे अनाथ की प्रतिपालना आपने ही करनी है। जिसे भी आप के दर्शन हुए सतगुरु के द्वारा ही हुए, इस लिए आप मुझे सतगुरु और संतों की चरण रज देते रहना, इसी में मेरा सुख है ऐसा भाव बनाते रहना।

राम जी राम राम
श्री राम
12.5.04 (4 A.M)

13. 5. 04

शब्द 24

हरि एक सिमर, एक सिमर, एक सिमर त्योर
नलि क्लेश लोभ मोह, मद मऊजल तोर
सासि सासि निमाव निमख
दिनस रैण चितारे
साध संग जप निसंग
मनि निधान धारे
चरण कमल नमस्कार, गुरु गोविन्द विचोर
साध जना की रेन नानक, मंगल सुख सचोर

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरा गोपाला
13. 5. 04 (4 A.M)
कुमार

13.5.04

अपने मन को हमने समझाना है, क्योंकि मन पर ही सारी बातें आती हैं, मन ही दुखी होता है, और मन ही सुख का अनुभव करता है। अगर हमारा मन प्रभु सिमरण में लग जाता है, तो यह सुखी हो जाता है। इसे बार २ सुख का प्रलोभन देते रहना है, क्योंकि यह कई जन्मों से हर एक योनि में दुखी ही होता है, पशु योनियों में गया तो वहां भी विकार थे। पशु भी क्रोध लोभ मोह अहंकार में ही जीवन व्यतीत करते हैं, सारी गन्दी योनियों के बाद भगवान ने कृपा की, इसे मनुष्य जन्म दे दिया

लाख चौरासी भरम के मनुष्य जन्म लिया पाय
अब कि भी हरि न भजा फिर लाख चौरासी जाय

फिर रामजी भी मिल गये जो बार २ Reminder याद कराने लगे, एक को अपना बना लो, एक मन्त्र का जाप करते रहो, सारे विकार प्रभु कृपा से नाश हो जायेंगे, रोज़ तीन बार सतसंग करो। बार २ अपने प्रभु प्यारे के आगे झुक के विचार में रहो, इसी में ही मंगल है सुख है बंदा याद रखो।

~~राम जी राम राम~~
श्री राम
13.5.04 (3.30 P.M)
वीरवार

13.5.04

25

गुरु शब्द

मेरे मन अहनिसि हरि गुण सार, मेरे मन अहनिसि हरि गुण सार

जिन इकु विनु पल ना मन विसरै, ते जन विरले संसार

2

इकु तिलु प्यारा वीसरै, रोगु वडा मन माहि

क्यों दरगह पति पाइए, जां हरि न वसै मन मांहि,

गुरु मिलिए सुखु पाइए, अगनि मरै गुण माहि।

मेरे मन अहनिसि - -

3

जोति जोति मिलाइए, सुरति सुरती संजोग

इहां हउमै गति गए, नाही सहसा रोग

गुरमुख, जिस हरि मन वसै, तिस मेले गुरु संजोग

मेरे मन - -

4

काया कामणि जे करी, भोगे भोगणहार

तिस सिउ नेह न कीजिए, जो दीसै चलणहार

गुरमुख रवै सोहागणी, जो प्रभ सेज भतार

5

चोर अगनि निवार, गुरु सुखु हरि जलु पाए

अंतर कमल प्रगासिआ, अमृत भरिआ अधाए

नानक सतगुरु मीत कर, सच पावहि दरगहजाए

रूप जी रामराय

व्याख्या शब्द 25

हमें हमेशा अपने मन को समझाना है रे मेरे मन तूँ सदा अपने हरि जी का ही सिमरण कर। जिन को एक दफा भी अपना प्यारा प्रीतम विस्मृत नहीं होता वह तो कोई ही है सारा संसार माया में जकड़ा हुआ डूबा है। जिन पर पूर्ण कृपा है राम जी की उन्हें तो ऐसे लगता है कि प्रभु विस्मृति तो मानो रोग है, और हर समय ईश्वर की याद रहने से परलोक भी सुधरी है, क्योंकि माया की अगनि नाम से शान्त हो जाती है अन्दर की सुरति शब्द से मिल जाती है तो अपने आप ही अहंता ममता हिंसा आदि सब रोग क्षय हो जाते हैं। यह केवल गुरमुख की अवस्था होती है। उसे यह पता लग जाता है कि सारा संसार नाश्वान है। इस से मोह नहीं करना, यह दुख-दायी है, गुरमुख की आत्मा परमात्मा रूपी पति से ही रमण करती है, वह नाम रूपी जल से, चारों प्रकार की माया की अगनि को को शान्त रखता है। उस का अन्तर का कमल खिल जाता है, वह संतुष्ट रहता है। यह सब सतगुरु को अपना सच्चा मीत बना कर ही हो सकता है। हमेशा के लिए आनन्दमय रहता है कृपा गुरु की हो तो।

राम जी राम राम
श्रीराम 20.5.04 (3 A.M)

16.5.04

शब्द 26

कर कृपा दयाल प्रभ, रद्ध निधि सिधि पावऊ,
संत जना की रेणुका, लै माथे लावऊ।

2.
श्रवणी सुनऊ हरि हरि हरे, ठाकुर जस गावऊ,
संत चरण कर सीस धर, हरि नाम ध्यावऊ।

3
नीच ते नीच अति नीच होय, कर विनऊ बुलावऊ
पावं मलोवा आप त्याग, संत संग समावऊ।

सास सास न वीसरै आन कतहु न धावऊ,
सफल दरशन गुरु भेटिए, मान मोह मिटावऊ।

5
सत सतोखं दया धर्म सीगार बनावऊ,
सकल सौहागण नानका, अपने प्रभु भावऊ।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरो गोपाला
16.5.04 (3.45 A.M)

व्याख्या शब्द 26

जब हम "कर कृपा" का मन्त्र जाप करते है तो यही कृपा मांगते है कि हमे सदैव संतो का संग मिले उन की चरण रज मिले। कानों मे मन्त्र गूंजता रहे। मुख मे भी नाम ही मिठास हो। सच्चे संतो के चरणो में शीश हो अपने आप को सदैव छोटा समझू। सदा विनम्र ही करता रहूं। अहमता ममता त्याग कर। संतो के संग मे ही सारा जीवन रहे। इस से हर श्वास मे राम जी याद आते रहेंगे कही बाहर भागने की जरूरत नही रहेगी। ऐसे सच्चे सतगुरु राम जी के दर्शन मात्र से मान और मोह खत्म हो जायेगा और उस की जगह सत संतोष, दया धर्म प्राप्त हो जायेंगे इन गुणों के गहने पहन कर हम परमात्मा रूपी पति को प्राप्त कर लेंगे सदा के लिए सौहागण हो जायेंगे। यह सब प्रभु कृपा से ही हो सकता है।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
20.5.04 (3.30 A.M.)

20.5.04

गुरुशब्द 27

लाव खुशियां पातशाहियां, जे सतगुरु नदर करे,
निमाव एक हरि नाम दे, मेरा मन तन शीतल होय ॥

2
सभे थोक परापते जे आवे इक हथ, जन्म पदारथ सफल है
जे सचा शब्द कथ
गुरु ते महल परापते जे लिखिआ होवे मथ,

3
मेरे मन एकस सिऊ चित लाये, एकस बिन सब धन्ध है,
सब प्रिथिआ मोह माय ॥

4
जिस कऊ पूरब लिखिआ तिन सतगुरु चरण गहे

5
सफल मूरत सफला घड़ी, जित सच्चे नाल प्यार
दुख सताप न लगई जिस हरि का नाम आधार
बाह पकड़ गुरु काढिया, सोई उतरया पार

6
थान सुहावा पवित्र है जिथे सतां सभा
ढोई तिस नू ही मिले जिस पूरा गुरु लभा
नानक बधा धर जहां, जिथे मिरत न जन्म जरा

राम जी ~~राम राम~~
श्रीराम
20.5.04

व्याख्या गुरु शब्द 27 21.5.04

एक बार पूर्ण सतगुरु की कृपा हो जाये तो हमे लाखों तरह का आनन्द प्राप्त हो जाता है क्योंकि वह तो सच्चा नाम धन देते है जिससे मन सदा के लिए सतुंष्ट हो जाता है। अगर हमारे पूर्ण सत्कार हो तो। हमे उस महल की प्राप्ति हो जाती है, कि हमारा मन एक पूर्ण प्रभु से जुड़ जाता है यह समझ जाता है कि भगवान के बिना यह मोह माया सब गलत है, वह हमेशा अपने सतगुरु की आज्ञा मे ही रहता है। उसे वही घड़ी सफल लगती है जिस मे वह अपने प्रियतम प्रभु की याद मे रहता है। उसे संसार कोई भी दुख नही लगता, क्योंकि राम जी उसे पूरी तरह से माया से निकाल देते है। बस उसे तो वही पवित्र लगता है जहां सतसंग होता है। क्योंकि निरन्तर सतो का साथ मिलने से जन्म जवानी बुढ़ापा सब समाप्त हो जाता है। सब पूर्ण प्रभु की कृपा से ही हो सकता है।

राम जी राम राम
की राम
कर कृपा प्रभु दीन दयाला
करो आज पूरी गोपाला
21.5.04 (3.45 A.M.)

卐 卐 卐

गुरुवासरी 28 21.5.04

प्रभु कृपा ते होय प्रगास
प्रभु दइआ ते कमल निवास

2

आप जपाए जपे सो नाउ
आप गवाए सो हरि गुण गाउ
प्रभु कृपा —.

3.

प्रभ सुप्रसन्न बसै मन सोय
प्रभ दइआ ते मति उतम होय

4

सर्व निधान प्रभ तेरी मइआ (मया)
आप कछु न किनही लइआ

5

जित जित लावहो तित लगे हरि नाथ
नानक इन के कछु न हाथ

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरा गोपाला
21.5.04 (3.50 A.M.)

व्याख्या गुरुवाणी 28

प्रभु की पूर्ण कृपा जब जीव पर होती है तो हमारे अन्दर प्रकाश हो सकता है और कृपा से ही हमारे अन्दर जो औंधा कमल है वह सीधा हो जाता है नामजपने के लिए पिछले सत्कर्मो का होना भी है। वही इस रास्ते पर लग सकता है, जिस पर प्रभु स्वयं कृपा करते है। भगवान की कृपा से ही हमारी बुद्धि अच्छी हो सकती है, जब मन और बुद्धि दोनो अपने इष्टदेव की ओर लग जाते हैं समझो प्रभु हमारे पर अति प्रसन्न हो गये। जिस पर प्रभु प्रसन्न होते है उस पर सारा संसार प्रसन्न हो जाता है, क्योंकि संसार तो मेरे ठाकुर की कठपुतली है। यह सब अपने आप नही हो सकता। महाराज फरमाते है कि यह सब हरि के हाथ है इन के हाथ में कुछ नही, जिधर इन भोले भाले जीवो के लगाओ लग जायेगा।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर मुई गोपाला
21.5.04 (5.15 P.M)
मंगलवार

शब्द 29

भिन्नी रैनारीये चमकन तारे,
जागें संत जना मेरे राम प्यारे।

2

राम प्यारे सदा जागे, नाम सिमरे अनदिनो,
चरण कमल ध्यान हृदय,
प्रभ बिछुरे नाही इक खिनो।

3

तज मान मोह विकार मनसा, भिन्नि रैनान-
कलमला दुख जाये।
विनवंत नानक सदा जागे,
हरि साध संत प्यारे।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरा गोपाला
a A.M
2) कुंवार

A success man is one, who can lay firm foundaith
with the Bricks that others throw at Him

29.5.04

शब्द 3 2 सासगिरास

नित जापिये, नित जापिये, नाम परवरदिगार दा 3

जिसनू करे रहम, तिस न विसारदा

आप उपावन हार, आपे ही मारदा

2

सब किछ जारो जारा 2 बूझ विचारदा

अनिक रूप विच्च मे कुदरत धारदा

3

जिसनू लाय सच, तिसै उद्धारदा 3

जिसदे होवे वल्ल, ओह कदे न हारदा

सदा अभगा दिवाला है, ... हउ तिस नमस्कारदा

नित जापिये 3

राम जी राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला

तेरी ओट पूरा गोपाला

29 5. 04 (9.15 A.M) Saturday

Think of God & He is Here

29.5.04

31

शब्द

गोविन्द नाम मत वीसरे प, अरी बाई प

1

अन्त काल जो लक्ष्मी सिमरै, ऐसी चिन्ता मे जे मरे
सर्प जोनि वल वल अवतरै गोविन्द नाम----

2

अन्त काल जो स्त्री सिमरै, ऐसी चिन्ता मे जे मरे
वेसवा जोनि वल वल अवतरै
गोविन्द नाम--

3

अन्त काल जो लड़के सिमरै, ऐसी चिन्ता मे जे मरै
सूकर जोनि वल वल अवतरै
गोविन्द नाम--

4

अन्त काल जो मंदर सिमरै, ऐसी चिन्ता मे जे मरै
प्रेत जोनि वल वल अवतरै गोविन्द-----

5

अन्त काल नारायण सिमरै, ऐसी चिन्ता मे जे मरै
भगत त्रेलोचन ते नर मुक्ता, पिता मन्दर बाको हृदय,, गोविन्द----

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा-----

Think of God
He is here

29.5.04

32

शब्द

गुरुसिख मीत चलहु गुरु चाली 2

जो गुरु कहै सोई भल मानो, हरि की कथा निराली

2.

हम अधुले अंध बिबे बिख राते, किउ चालि गुरु चाली

गुरुसिख ---

सतगुरु दया करे सुखदाता, लावे आपन पाली (पल्ले

3.

हरि के संत सुनो जन भाई, गुरु सेवहु बेगि बेगाली

सतगुरु सेव रखच हरि बांधो, मत जाराहु आज के काली

4

हरि के संत जपहु हरि जपना, हरि संत चलै हरि नाली

जिन हरि जापिआ सो हरि होय, हरि मिलिआ केल कलाली

5

हरि हरि जापन जप लोच लोचानी, हरि कृपा कर वन वाली

जन नानक संगति साध हरि मेलो, हम साधजन पग राली

राम जी राम राम

श्री राम

In life one gets
What He deserves
But not He desires

182 Amrit Kirtan
183 गुरुमुखी

श्रीराग शब्द 33 30.5.04

वस मेरे प्यारिया 3 वस मेरे गोविन्दा
हर कर किरपा मन वस जीओ वस मेरे--

2

मन चिदिअड़ा फल पाया मेरे गोविन्दा।
गुरु पूरा वेख विगस जीओ

3

हरि नाम मिलिआ सोहागरा मेरे गोविन्दा
गुरु पूरा वेख विगस जीओ

4

हरि नाम मिलिआ सोहागरा मेरे गोविन्दा
मन अनदिन अनद रहस जीओ

5

हरि पाइआ वडभागी मेरे गोविन्दा
नित लै लाहा, मन हस जीओ

राम जी राम राम
श्रीराम

If we should act not fearing,
the possibility of some obstacles
that might arise ensoute
30.5.04 (3.30 p.m)

30.5.04

33

व्याख्या शब्द

हमें सदा यही अरदास प्रार्थना करनी है, हे मेरे ठाकुर गोविन्द, मेरे सतगुरु जी, आप कृपा करो, सदा मेरे मन में बसे रहो, एक बार हमारी प्रार्थना स्वीकार हो गई तो हमारे मन की सारी कामनाएं आप ही स्वयं पूरी हो जायेगी अर्थात हमें कोई भी कामना नहीं रहेगी। जब राम जी, सतगुरु हमारे पर पूरी रूपसे प्रसन्न हो जायेंगे, तो हमारी आत्मा रूपी स्त्री सदा के लिए सौहागण हो जायगी और निरन्तर आनन्दमय रहेगी। हम अपने आप को बहुत भाग्यवान समझेंगे, क्योंकि हमने जीवन का सब से बड़ा लाभ प्राप्त कर लिया मन भी आनन्दमय रहेगा इन्द्रिया भी संयम हो जायेगी आवागमन का चक्र भी कट जायेगी। पूरी रूपेण आत्मा परमात्मा मे मिल जायेगी। यह सब पूरी सतगुरु, राम जी की कृपा से ही हो सकता है।

राम जी राम राम
श्री राम
बार कृपा पुन दीनदयाला
तेरी आट पूरी गोपाला

31.5.04

शब्द 34

हमरा ठाकुर सब ते ऊचा, रैणदिवस तिस गावोरे
बिघन में थाप उथापन हारा, तिस ते तुमहि डरावहु रे

2

गुरु परसादि मेरे मन बसिया, जो मागऊ सो पावऊ रे
नामरंग एह मन तृपताना, बहुरि न कतहूं धावहु रे

3

जन देवऊ प्रभ अपना स्वामी, तऊ अवरहि चित न पावऊ रे
नानक दास प्रभु आप पहराइआ, भ्रम भऊ मेट लिखावऊ रे

व्याख्या शब्द 34

भगवान तो सब के हैं, इस लिए हमारा कहलाते हैं, उन जैसा दयालु सर्वगुण सम्पन्न पूरा और कोई भी नहीं है, इस लिए उन्हीं में अपना मन लगाने की कृपा मांगते रहना है। विघ्नरूप में कुछ का कुछ कर देते हैं इस लिए बुरे कर्मों से डरते रहने की कृपा मांगनी है अगर पूरा सतगुरु की कृपा से वह मन में बस जाये, तो हमें संसार के सभी पदार्थों से तृप्ति मिल जाती है तो कभी भी कहीं भी जाने को मन नहीं करेगा, बस हर समय अन्दर अपने प्रभु के दर्शन ही पाते रहेंगे और सारे हमारे, भ्रम भेद गांव, नष्ट हो जायेंगे, पूर्णता प्राप्त होगी

सतजी राम राम
श्री राम
परम कृपालु

Think of the God He is here

31.5.04

शब्द 35

चरण कमल की आस रे मोर जम कर नय गए बिचारे

2

तूँ चित आवे तेरी मया, सिमरत नाम सगल रोग खइआ

3

आनिक दुख देवहि अवरा को, पहुंचन साके जन तेरे कउ

4

दरस तेरे की प्यास मन लागी, सहज आनन्द वसै वैरागी

5

नानक की अरदास सुराजै, केवल नाम हइय में दीजै

व्याख्या शब्द 35

केवल भगवान के नाम की आशा करने मात्र से, संसार के विघ्न संकट दूर हो जाते हैं। परन्तु प्रभु तो केवल उन की कृपा से ही चित में आते रहते हैं, और जिन के चित तक नाम चलता है उन के सारे रोग खत्म हो जाते हैं। जो मनमुख होते है उन्हे तो दुख ही दुख व्यापे रहते है परन्तु गुरुमुख को कोई भी दुख नही आता, अगर आता भी है, तो उसे भगवान सतगुरु Positive mind बना कर शक्ति दे देते है। उस के मन मे अपने दर्शन की लालसा जागृत कर के, उसे सहज आनन्द की प्राप्ति करवा देते है। इस लिए केवल यही अरदास करनी है, हमारे हइय मे नाम ही नाम चलता रहे।

11.6.04

36

शब्द

किरपा करो हरे हरे, किरपा करो हरे
नानक मगै दरस दान किरपा करो हरे 2

2.

जिन जिन नाम धयाया, तिन के काज सरे,
हरि गुरु पूरा आराधिआ, दरगह सच खरे।

3

सरब सुख निधि चरण, हरि भउजल बिखम तरे,
प्रेमभगति तिन पाइआ, बिछुरिआ नाही जरे।

4

कूड़ गये दुविधा नसी, पूरी सच भरे
पारब्रहम प्रभ सेवदे, मन एक धरे 2

5

महा दिवस मूरत भले जिन को नदर करे
नानक मंगै दरस दान, किरपा करो हरे

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
We can cheat others but never our conscience
our God.

11.6.04

ब्यालिया शब्द 36

भगवान के, पूर्ण सतगुरु के दर्शन भी तभी होते हैं जब पूर्ण प्रभु की कृपा होती है, इस लिए हम बार २ "कर कृपा" का मन्त्र उच्चारण करते रहते है। यह केवल हमें सतगुरु ही बताते है कि, अगर आप सब कार्यों में सफलता चाहते हो तो गुरु मन्त्र जाप करते रहो, आराधना करते रहो, तुम दरगह में भी सच्चे निकलोगे। बार बार हमें प्रभु बताते हैं भगवान के चरण तो सब निधियो के देने वाले हैं और संसार सागर से भी पार करते है और जिन को प्रेमा भगति प्राप्त हो जाती है वह संसार के विषयों में नहीं फंसते। उन की सारी दुविधाए दूर हो जाती है माया समाप्त हो जाती है वह हर समय अपने पूर्ण प्रभु की सेवा में तल्लीन रहते है और मन मे हर समय अपने प्रभु को ही निहारते रहते है। ऐसे गुरमुखों के लिए सब दिन भले है सब मुहूर्त ठीक है वह केवल प्रभु दर्शन के लिए ही कृपा मांगते हैं

राम जी राम राम
श्री राम

11.6.04

शब्द 37

मेरे मीत गुरुदेव, मो को राम नाम प्रगास २

2.

गुरुमत नाम मेरा प्राण सखाई, हरि कीरति हमरी रहरास

मेरे मीत

4

हरिजन के वडभाग वडेरे, जिन हरि हरि ब्रह्मा हरि ध्यास

हरि हरि नाम मिले तृपतासहि, मिल संगत गुण प्रगास

3

मेरे मीत —

हरि जन के सतगुरु सतपुरखा, हउ विनय करउ गुरु पास

हम करि किरम, सतगुरु शरणाई, कर दया नाम प्रगास

5

मेरे मीत — —

जिन्ह हरि हरि हरि रस, नाम न पाइआ, ते भागहीन जम पास

जो सतगुरु शरण संगत नहीं आये, धृग जीवे धृग जीवासि

6

मेरे मीत —

जिन हरिजन सतगुरु संगत पाई, तिन धुर मस्तक लिखि आ

धन धन सतसंगत जित हरि रस पाइआ, मिल नानक (लिखासि

नाम प्रगास

मेरे मीत - - - -

रामजी राम राम
श्री राम

We may often give Love,
but we can never Love without giving

11.6.04

Central idea of शब्द 37

हमारे वास्तविक मीत, साजन, गुरुदेव तो वही हैं, जो हमें अन्दर नाम के माध्यम से अन्तर प्रकाश करवा दें इस के लिए प्रार्थना करनी पड़ती है। कि हे गुरुदेव हमारी बुद्धि गुरुमत हो जाये, और आप का नाम मेरे प्राणों में चले। हरि कीरतन मे भी आनन्द आये ऐसे जन, जिन को ऐसी श्रद्धा तथा प्यास उत्पन्न हो गई है। वह बड़े भाग्यवान है, जिन्हें केवल नाम मे ही वृद्धि मिलती है, और यह केवल सतगुरु सन्तो की नित्य संगत से ही प्राप्त हो सकता है। बार२ सतगुरु हमें विनय, प्रार्थना, नम्रता, सिखाते हैं, और हमें अपने आप को बहुत ही छोटा समझने की प्रेरणा देते हैं, साथ२ चेतावनी देते रहते हैं कि अगर तुम्हें हरि२ नाम मे रस नही आया तो आप भाग्यहीन हो और मृत्यु भी बड़ी दुखदायी होगी। अगर आप रोज सत्संग मे नही आते तो धिक्कार ही धिक्कार मिलेगा परन्तु यह सब हमारी पूर्वजन्म की कमाई से प्राप्त होता है।

राम जी राम राम
जी राम

13.6.04

शब्द 38

मेरे राम जी, मेरे राम जी, मेरे राम जी
तूँ प्रभु अन्तरयामी मेरे राम जी, मेरे राम जी 2

2.

कर किरपा गुरुदेव दयाला, गुण गावां नित स्वामी
मेरे राम जी, मेरे राम जी, मेरे राम जी

3.

आठ पहर प्रभु अपना ध्याइये, गुरु परसादि भव तरिए
मेरे राम जी, मेरे राम जी, मेरे राम जी
आप त्याग होइए सन रेणा जिनतियां इक मारिए
मेरे राम जी, मेरे राम जी, मेरे राम जी

4

सफल जन्म तिस का जग भीतर,
साध संग नाम जापे।
सगल मनोरथ तिस के पूरी
जिस दया करे प्रभु आपे मेरे राम 3

5

दीन दयाल कृपाल प्रभ स्वामी
तेरी शरणा दयाला
कर कृपा अपना नाम दीजै, नानक साध रनाला —।

11.6.04

मेरा शब्द केवल अपने भगवान के लिए, सतगुरु के लिए है और तो संसार मे कोई भी अपना नही बनता, और एक भगवान सतगुरु ही अन्तरयामी हैं उन से हर समय यही कृपा मागनी है कि हर समय अपने या संसारियों के गुण न कर रामजी की ही स्तुतियां करें। अर्जुन को भी कृष्ण कहते हैं

"तेषाम सततयुक्तानाम भजताम प्रीतिपूर्वकम
ददामि बुद्धियोग तम येन मामुपयान्ति ते"

उन की बुद्धि अपने से योग कर लेता हूं

रामजी समझाते हैं। आठ पहर, प्रभु को अपना समझो। उन्हीं के लिए कर्म करो। वही कर रहे हैं। ऐसा अभ्यास हो। और अपने आप की अहंता ममता सारी मिटा कर जीवन मुक्त हो जायें। रामजी समझा रहे हैं, उसी का जीवन सफल है, जो सन्तो के साथ, सतगुरु के साथ बैठ कर भजन कीरतन अवश्य करता है ऐसा करने से रामजी अपनी दया कर देते हैं और उस की सारी कामनाएं भी पूर्ण कर देते हैं। जैसे बाबा जी अरदास कर रहे हैं। दीनदयालु कृपालु स्वामी की शरण मे हूं बस अपनी कृपा करो सतो की चरण रज रोज दो।

13.06.04

39

शब्द

पूरी आसा जीओ मेरी मनसा, मनसा मेरे राम पूरी आसा

2

मोहे निर्गुण, जीऊ सब गुण तेरे, ठाकुर मेरे,

कित मुख तुध सालाही, मै वारि त्योरे कित मुख तुध सलाही

पूरी आसा जीऊ मेरी ---

3

गुण अवगुण मेरा कछु न विचारिया,

बख्स लीआ बिन माहि। पूरी आसा जीओ मेरी मनसा

4

नऊ निधि पाई वजी वधाई, बाजे अनहद तूरे

कह नानक जी मै वर घर पाइआ, मेरे लाथे साल, बसूरे

रामजी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
Think of God & He is here

13.06.04

~~Central Lab~~ शब्द 39 (व्याख्या)

महाराज, सतगुरु, रामजी, हमे बार २ यही समझाते हैं। तुम अपनी अहंमता ममता को मत आने दो कृपा मांगो, यह केवल पूरी प्रभु की कृपा से ही हो सकता है हर समय यही अपने भगवान पूरी प्रभु से कहो, कि मेरे मे तो कोई भी गुण नही, जैसी प्रेरणा आप मन में करते है, वैसे ही मेरी बुद्धि हो जाती है। आप अपनी कृपा बनाये रखना, कि मेरा मन केवल आप का गुरुमन्त्र जपता रहे, केवल आप हैं जो मेरे अवगुण नही देखते और अगर आभी जाते हैं तो माफ कर देते हो। संसार तो कभी भी क्षमा नही करता, हर जगह लोग स्वार्थ ने सब को तंग कर रखा है। इसीलिए घर घर में शान्ति नही है

महाराज आज्ञा देते है ए मूर्ख जीव तेरी सारी आशाए पूरी हो जायेगी अगर तेरी आत्मा रूपी स्त्री पूरी परमात्मा के साथ अन्दर से एकाकार हो जायेगी और भगवान पूरी प्रभु तो शाहो के शहनशाह हैं, वही ऐसी बुद्धि बना देगें कि अन्दर से कोई कामना ही नही रहेगी राम जी राम राम

14.6.04

शब्द 40

हऊ वारि वारि अपने गुरु को जासां 2
गुरु पूरा मिलावै, मेरा प्रीतम
हऊ वारि 2

2

सेज एक एको प्रभु ठाकुर
गुरु मुख हरि रावे सुखसागर
हऊ वारि 2

3

मैं अवगुण भरपूर सरीरे
हऊ किउ कर मिलां अपने गुरु प्रीतम पूरे
हऊ वारि 2

4

जिन गुणवंती मेरा प्रीतम पाया
से मै गुण नाही हऊ किउ कर मिला मेरी माइआ
हऊ वारि 2

5

हऊ करि करि उपाव थाका बहुतेरे
नानक गरीब राखहु हरि मेरे
हऊ वारि 2

6

हरि मेरे हरि मेरे हरि मेरे 2

राम जी राम राम
श्री राम
15.6.04 (4.40 P.M)
बुधवार

15.6.04

CENTRAL INDIA शब्द 40

अपने सतगुरु पर बलिहार जाते है क्योंकि वही हमें भगवान से एकाकार करवा सकते है। संसार तो बन्धनों में डालता है। राम जी हमें गुरुमुख बनाते है वह हमारे हृदय की सेज पर आप बैठ जाते है और दूसरे किसी को आने नही देते। सारा द्वैत का पर्दा हटा देते है। वह हमारी ऐसी बुद्धि बना देते है। कि हम अपने अवगुण Check कर सकें। हमें दूसरो के अवगुणों की ओर देखने नही देते और अगर अवगुणों से भरपूर हो तो हम कैसे अपने प्रियतम से मिल सकते है जो गुणों से भरपूर है। केवल गुणवान ही प्रभु प्राप्ति कर सकते है और गुण भी सात्विक गुण जैसे सत सन्तोष दया धर्म पवित्रता सेवा सिमरन साधना धारणा ध्यान समाधि। बड़े ही उपाय किये पर वोर गुण पूर्ण रूप से नही आये। मैंने बार २ प्रार्थना की है प्रभु बस आप मेरे हो और मैं आप की हूं। जैसी भी हूं आप ने मुझे शरण मे ही रखना है। इस प्रकार प्रभु से मेल हो जाता है।

16.6.04

शब्द 41

ठाकुर होय आप दइआला, भई कल्याणा आनंद रूप होई है

उबरे बाल गोपाल

ठाकुर होय - - -

2.

दुई कर जोड़ करी बेनंती, ठाकुर अपना दयाया

हाथ देइ राखे परमेश्वर, सगला दुरत मिटाइआ

ठाकुर होय -

3

वर नारि मिल मंगल गाया, ठाकुर का जयकारो

कहो नानक जन को बलि जाइए, जो सपना करे उद्धारु

व्याख्या शब्द 41

जब हम अपने पूर्ण प्रभु के आगे प्रार्थना विनय करते हैं, तो प्रभु दया कर देते हैं। सब कल्याण ही कल्याण हो जाता है। राम जी ऐसी बुद्धि बना देते हैं, कि हमारे मन में किसी प्रकार का भी द्वैत नहीं आता। आत्मा रूपी स्त्री अपने परमात्मा पति के साथ एकाकार हो जाती है। यह सब राम जी की कृपा से होता है ऐसे सतगुरु पर बलिहार जाते हैं, जो मन का उद्धार करते हैं।

रामजी राम राम

श्रीराम

563 G.13

16.6.04

42

शब्द

मेरे प्रभु प्रीतम नाम आधारा
हउ सुखि सुखि जीवा नाम तुम्हारा
मेरे प्रभु प्रीतम -

2

तूँ वडदाता अन्तरयामी
सभ महि रविआ पूरी प्रभु स्वामी
मेरे प्रभु प्रीतम

3

तेरी शरणा सतगुरु मेरे पूरे
मन निरमल होम सतंग धूरे मेरे प्रभु प्रीतम --

4

चरण कमल हृदय उरधारे
तेरे दर्शन को जाई बलिहारे मेरे प्रभु ---

5

कर किरपा तेरे गुण गावा
नानक नाम जपत सुख पावा मेरे प्रभु --

रामजी राम राम
जी राम
कर किरपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला
बुधवार 5.45 P.M

16.6.04

43

गुरु-शब्द

तेरा जन राम नाम रंग जागा,
आलस्य छीज गया सब तन ते,
प्रीतम सिउ मन लागा। तेरा जन - - -

2

जिस को बिसरे प्राणपति दाता,
सोई गनऊ अभागा,
चरण कमल जां का मन रांगिओ,
अमिअ सरोवर पागा। तेरा जन - - -

3

जहं जहं पेखऊ तहं नारायण,
सगल घटा महि तागा,
नाम उदक पीवत जन नानक,
तिआगे सब अनुरागा। तेरा जन - - .

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

16.6.04

CENTRAL IDEA

गुरु - शब्द 43

हम अपने राम जी के रंग मे रंग गये है। क्या निशानी है? पहला वह बड़ा चुस्त रहता है उसे प्रभात समय उठने में आलस्य नही आता। वह हर समय अपने प्यारे के प्रेम मे मस्त रहता है। उसे हर समय यह महसूस होता रहता है कि यह संसारी जीव माया के बन्धनो में जकड़े हुए अपने भाग्य को खत्म करते जा रहे है।

जो पूर्ण रूप से अपने प्रियतम प्यारे प्रभु को हर समय देखते है, याद करते है, उन का मन सदैव प्रसन्न रहता है। वह हर प्राणी में अपने नारायण को ही देखते है। ऐसे करते२ उन को पूर्ण रंग अपने राम जी का चढ़ जाता है। संसार के सारे प्रेम, गौण (छोटे) पड़ जाते है ऐसी कृपा हमें भी मांगनी चाहिए।

रामजी रामराम
श्रीराम बुधवार 6 P.M.

20.6.04

44

शब्द

मै गरीब सच टेक तूं, मेरे सतगुरु पूरे 2
देव तुम्हारा दर्शनो। मेरा मन धीरे 2

2
कोये न किसही संग, काहे गरबीअै (अभिमान)
एक नाम आधार भउजल तरबीए (संसार सागर) तरिए

3
राज माल जंजाल, काजन कितै गनो
हरि कीरतन आधार, निहचल एह धनो

4
जेते माया रंग, तेत पदारथ आ
सुख का, नाम निधान, गुरमुख राविआ

5
सच्चा गुणीनिधान, तूं प्रभ गहिर गंभीरो
आस भरोसा खसम का, नानक के जीअरो

राम जी राम राम
श्री राम
The world gives us comforts
God gives us sleep (rest)

20.6.04

शब्द 45

रैण दिनस प्रभात तूँ ही तूँ है ही गावणा
तूँ दाता दातार, तेरा दिता खावणा। 2
2
भक्त जना के संग पाप गवावणा 2
जन नानक सद बलिहारे बलि बलि जावणा। 2
तूँ दाता दातार 2
तूँ दाता दातार, तेरा दिता खावणा। 2

यह वाक सतगुरु जी ने दिया। नारायणा जी ने आज जन कि राम जी को दो इन्द्रियों पर संयम (आंख और जीह्वा) रखने की आज्ञा दी 20 जून से 2 जुलाई (गुरु पूर्णिमा तक)

राम जी राम राम
श्रीराम
20.6.04 प्रातः प्रभाती
4A.M से

20.6.04

शब्द 46

मै बिन गुरु देखे नींद न आवे,
मेरे मन तन वेदन, गुरु बिरह लगावे।

2

मन तन प्राण, हऊ
कोई लजरा संत मिले बड भागी
मै हरि प्रभ प्यारा दसै जीओ
मै गुरु —

3

हऊ मन तन खोजी भाल भलेरि
निवसत संगत खोज खोजेरि
विच सत संगत, हरि प्रभ प्यारा वसै जीऊ
मै बिन — —.

5

मेरा प्यारा प्रीतम सतगुरु रखवाला
हऊ बारिक दीन केरा प्रतिपाला
मेरा मात पिता गुरु सतगुरु पूरा
गुरु जल मिल कमल विगसै जीओ
मै बिन गुरु —

5

हरि हरि दया करै गुरु मेलहु
जन नानक गुरु मिल विगसै जीओ
मै गुरु —

राम जी राम राम श्रीराम

20.6.04

47

शब्द

हल्ले यारा, हल्ले यारा खुशखबरी 2
बलि बलि जाऊ 2 नीकी तेरी गियारी आला तेरा

नाऊ

2.

हल्ले यारा
कुजा आमद कुजा रफ्ती कुजा मेरवी
द्वारिका नगरी रास बिगोई

हल्ले - - .

3

खूब तेरी पगरी, मीठे तेरे बोल
द्वारिका नगरी, कोहे के मगोल

4

हल्ले - -

चंदी हजार आलमरकल खानां
हम चीन्ही पातशाह सांवले बरना

हल्ले

5

असपति गजपति नरह नरिंद
नामे के स्वामी मेरे मुकन्द

हल्ले

रामजी राम राम
श्री राम
3.20 p.m Sunday

20.6.04

48

शब्द

प्रभु जी पेखंऊ दरस तुम्हारा।

2.

सुन्दर ध्यान धार दिन रैणी,
जीअ प्रान ते प्यारा। प्रभु जी —

3.

शास्त्र वेद पुरान अवलोके,
स्मृति तत विचारा। प्रभु जी --.

4

दीनानाथ प्रणपति पूरन
भऊ जल उधरन हारा प्रभु जी ---

5

आदि जुगादि भगतन जन सेवक
ताकि विखे आधारा।
तिन जन की धूर बोहे नित नानक
परमेश्वर देवन हारा। प्रभु जी -

राम जी राम राम
श्री राम
Sunday 3.35 p.m
God is always blessing us

49

शब्द

अति प्रीतम मनमोहना घर सोहना,
प्राण आधार राम।

2

सुन्दर सोभा लाल गोपाल दइआल की
अपर अपार राम
अति - - -

3

गोपाल दइआल गोबिन्द लालन
मिलहु कंत निमाणीआ
नैन दरसन दरस परसन
नह नींद रैण विहाणीआ
अति - - -

4

गिआन अंजन नाम बिंजन,
भए सगल सिंगार।
नानक पइअंपै संत जपै,
मेल कंत हमारा।
अति - - -

रामजी राम राम
श्री राम
Sunday 4 PM
God is always
in full beauty

20.6.04

50

शब्द

माई प्रभु के चरण निहारऊ 2

2

करऊ अनुग्रह स्वामी मेरे
मन ते कबहुं न टारऊ माई ---

3

साधू धूरि लाई मुख मस्तक
काम क्रोध बिख जारऊं माई ---

4

सब ते नीच आतम कर मानऊ
मन में एह सुख धारहु माई ---

5

गुन गावऊ ठाकुर अविनासी
कलमल सगरे झारऊ माई ---

6

नाम निधान नानक दान पावऊ
कहु लाये उर धारहु माई ----

राम जी राम राम
श्री राम
Sunday 4 p.M
By singing the God's glory
we can get rid of all our
sins

9.7.04

शब्द 50 व्याख्या

हमें अपनी बुद्धि प्रभु को समर्पण करनी है, हे मेरी बुद्धि तूं हर समय अपने प्रभु के चरणों की ओर ही देखना है। रामायण में जब लक्ष्मण जी से राम जी ने पूछा सीता ने कौन से आभूषण धारण किये हैं तो उन्होंने कहा प्रभो मैं तो केवल उन के चरणों की ओर ही देखता हूं मुझे पायल और नूपुर ही दिखे। इस प्रकार हमें भी अपने इष्ट देव के चरणों की ओर ही ध्यान देना है। और उनसे यही कृपा मांगनी है कि वह न हमें भुला दें। अपने सतगुरु राम जी की चरण रज मस्तक मुख पर लगा कर यही प्रार्थना करनी है कि राम क्रोध न आये। मैं अपने आप को सब से नीच ~~देखूं समझूं~~। इसी में मुझे सुख मिले हर समय मैं अपने प्रभु के ही गुण गाऊं जिससे मेरे अन्दर के सारे विकार दूर हो जायें। महाराज फरमाते हैं। नाम का खजाना खूब इकट्ठा करूं और अपने प्रभु को हृदय में धारण कर के रत्ती अर्थात कभी भी न भूलूं।

राम जी राम राम
श्री राम
Finished 9.20 P.M

9.7.04

शब्द 51

हऊ वञां कुरबाणा साई आपणो 2
होवे अनद घणा मन तन जापणो
हऊ---

2

साई अलाख अपार मेरी मन वसे
दुख दर्द रोग माई मैंडा हभ नसे
हऊ---

3

विदंक गाल सुणी सच्चे तिस धणी
सुखी हूं सुख पाये, गमाये न कीम गणी
हऊ---

4

नैणा पसंदो पेखे सोय मुस्ताक माई
मैं निरगुण मेरी माय, आप लड़ लाय लई

5

वेद कतेब ससार हणाओ बाहरा
नानक का पातशाह दिसे ज़ाहरा

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
Friday 9.45 P.M

9.7.04

शब्द 52

हमें अपने प्रभु साँई अपने पर बलिहार जाना है क्योंकि उन का नाम लेने से आनन्द आता है अगर वह मन में बस जाते हैं तो सारे दुख दर्द खत्म हो जाते हैं, दुख तो मन को ही लगता है वह अपनी कृपा दृष्टि से मन अपनी ओर खींच कर लेते हैं। इस लिए मन सुखी हो जाता है तो हम पूर्ण रूप से आनन्दमय हो जाते हैं। मैंने जब उन के मुख मंडल पर अपना ध्यान किया तो उन के कमल नेत्रों ने मुझे मस्ती दी। मैं पूर्ण रूप से उन की मस्ती में आ गई। मेरे में तो कोई गुण नहीं मुझे लगा कि उन्होंने मुझे अपना बना लिया है। जिन का नाम वेदों में शास्त्रों में पढ़ा वह मुझे हर समय अपने साथ हर समय अनुभव होने लगे। मैं अपना आप भूल गई बस प्रभु ने मुझे पूरा रूपेण अपना लिया।

रामजी राम राम
श्री राम
Friday 9.50 P.M.

9.7.04

52

शब्द

तुध बिन अवर न जाणा। मेरे साहिबा गुणा गावा नित तेरे
गुणा गावा नित तेरे। गुणा गावा नित तेरे 2

2.

मन मन्दिर तन वेस कलन्दर, घट ही तीरथ नावा। तुध बिन -
एक शब्द मेरे प्राण बसत है, बहुड़ जन्म न आवा 2

3

मन बोधिआ दयाल सेती मेरी माई, कौन जोन पीर पराई तुध बिन
हम नाही चिंत पराई मेरे सहिबा। हम नाही चिंत पराई

4

अगम अगोचर अलख अपारा, चिंता करे हमारी
जल थल महिअल भरपूर लीन्हा। घट २ ज्योति तुम्हारी

5

जीअ जंत सभ शरण तुम्हारी, सर्व चिन्त तुध पासे तुध ---
जो तुध भावे सोई चंगा। इक नानक की अरदासे

तुध बिन --

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी आस पूरी गोपाला
Saturday 3 A.M

10.7.04

शब्द 52 व्याख्या

हमें अपने प्रभु से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हे मेरे साहब, हे मेरे मालिक, आप मेरे पर पूर्ण कृपा करो, कि मैं हर समय आप के नाम में ध्यान में रहूँ। मेरा मन ही मन्दिर है जाये सारे तीर्थ इसी में है। ऐसी मेरी वृत्ति बन जाये, सतगुरु का दिया हुआ शब्द मन्त्र ऐसी तेज़ी से चले कि, मेरा आवागमन ही समाप्त हो जाये। मेरा मन ऐसा प्रभु प्रेम में मस्त हो जाये कि मुझे संसार में किसी की भी चिंता न रहे। आप तक पहुंचना तो बहुत ही कठिन है, आप ही अपनी लगन लगाओ, ताकि मुझे हर समय, हर स्थान पर आप ही दिखो, सब प्राणियों में आप के ही दर्शन कर सकूँ। मेरे भी आगे पीछे सारा परिवार सब आप के ही हैं। इस लिए इन सब की चिन्ता भी केवल आप को ही है। जो आपको अच्छा लगता है, वही मेरे लिए ठीक है। ऐसा भाव मेरा बना रहे, यही मेरी अरदास है

राज़ी है हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है

यहां तूं भी वाहवाह है और, तूं भी वाहवाह है

रामजी राम राम
श्रीराम

Every Thing Happens for the best.

श्रीराम

10.7.04

शब्द 53

हऊ वारि वारि अपने गुरु कौ जाया, हऊ वारि २ अपने---

गुरु पूरा मिलावे मेरा प्रीतम, हऊ वारि वारि अपने---

2

सेज एक एकै प्रभु ठाकुर, गुरमुख हरि रावै सुखसागर

गुरु मैं पूरा मिलावे मेरा प्रीतम, हऊवारि २ अपने--

3

मैं अवगुण भरपूर शरीरे, हऊ किऊ कर मिला अपने सतगुरु पूरे

गुरु पूरा मिलावै मेरा प्रीतम, हऊ वारि २ अपने ----

4

जिन गुणवंती मेरा प्रीतम पाया, से मैं गुण नाही

गुरु पूरा मिलावे मेरा प्रीतम हऊ---- क्यों कर मिला मेरी माया

5

हऊ करि करि थाका उपाऊ बहुतेरे, नानक गरीब रावो हरि

हरि मेरे, हरि मेरे, हरि मेरे, हरि मेरे, हरि मेरे, हरि मेरे मेरे

राम जी मेरे, राम जी मेरे, राम जी मेरे ------

गुरु पूरा मिलावे ---

रामजी राम राम

श्रीराम

A Guide is must in our life

10.7.04

Central Idea शब्द 53

जो हमें ठीक मार्ग दिखाये, प्रभु मार्ग पर अग्रसर करे, उस पर वारि बलिहार जाते हैं, क्योंकि वह हमें अन्तर मन में पूरी प्रभु से भी मिला सकते हैं। पूर्ण सतगुरु हमारे मन पर अपनी पूरी शक्ति से परमपिता परमात्मा को स्थापित कर देते हैं। शेष सारा संसार परे रह जाता है, ऐसे सतगुरु पर हम बलिहारी जाते हैं। पहले तो अवगुण ही अवगुण थे, ऐसा पापी मायावी शरीर कैसे अपने अवढ़ बहादुर नायक से मिल सकता था, सतगुरु ने मंत्र दिया, कृपा मांगो, प्रभु अपनी कृपा से, तुम्हें अच्छी बुद्धि देंगे, मन बुद्धि चित में प्रभु ही रमण करेंगे, जिन्हों जिन्हों ने प्रभु प्राप्त कर लिया, ऐसे गुण तो मेरे में नहीं, फिर भी सदा अपने Guide गुरु के पास रहने से सेवा करने से, द्वारे में नम्रता गरीबी का भाव आ जाता है तब हरि परमात्मा को हम अपना कह सकते हैं रामजी मेरे, मैं राम जी की, राम जी मेरे, मैं रामजी की।

रामजी राम राम
श्री राम
12.7.04

श्रीराम

12.7.04

शब्द 54

चरणा कमल सां राच, मन मेरे चरणा कमल सां राच
साल जीअ जां को आराधे, ताहू को तूँ जाच 2

चरणा कमल ----

2

विश्वम्बर जीअन को दाता, भक्ति भरे भंडार
भक्ति भरे भंडार सतगुरु, भक्ति भरे भंडार

चरणा कमल--

3

जां की सेवा निहफल न होवत, विघ्न में करे उद्धार
सतगुरु विघ्न में करे उद्धार.. चरणा कमल---

4

होय सहाई, जिस तूँ राखेहि, तिस कहा करे संसार
कहा करे संसार, सतगुरु कहा करे संसार

5

नानक शरणा तुम्हारी करते, तूँ प्रभु प्राण आधार
तूँ प्रभु प्राण आधार, सतगुरु तूँ प्रभु प्राण आधार

चरणा कमल

रामजी राम राम
श्री राम
12.7.04

श्री राम

व्याख्या शब्द 54

गीता में श्रीकृष्णजी, अर्जुन के माध्यम से हमें समझाते हैं

निजसे करे उद्धार निजको न गिरने दे कभी

नर आप ही है बन्धु अपना, आप ही है मित्र भी

अर्थात हमें अपने मन को समझाना है ऐ मन तू सदा अपने प्रभु की भक्ति में मग्न हो जा, जिस को सारा संसार पूजता है तू उससे उन्हीं को मांगले। क्योंकि वह तो सारे विश्व के नियन्ता है, दाता है और उन के यहां तो भक्ति के भंडार भरे हैं। वह जब प्रसन्न होते है तो अपने जीव पर कृपा कर के भक्ति देते हैं उन की सेवा कभी भी व्यर्थ नहीं जाती, तन मन धन से सेवा करने से वह हमारा उद्धार कर देते हैं अर्थात हमें कमल की तरह जीवन प्रदान करते हैं। संसार सार उस के आधीन हो जाता है, संसार कुछ नहीं कर सकता। हमें अपने सतगुरु की तरह उसे कर्ता धर्ता बना कर, उन्हें अपने प्राणों से भी प्यारा समझ कर, उन्हीं की शरण में रहना है। संसार की परवाह भी नहीं करनी। बस अपने प्रीतम के प्रेम में ही मग्न रहने की कृपा याचना करनी है।

राधाजी राम राम
श्रीराम 19.7.04 (3.30 P.M

T.V जागरण Channel पर
राम जी आये 4 p.m 6:30 19.7.04

55

शब्द

मेरे राम जी तूँ प्रभु अन्तरयामी,
कर किरपा गुरदेव दयाला, गुण गावां नित स्वामी
मेरे राम जी - - - -.

2

आठ पहर प्रभु अपना ध्याइये, गुरु प्रसादि भऊ तरीए
आप तिआग होइए सभ रेणा, जीवतआं इहु मरीए
मेरे राम जी -

3

सफल जन्म तिस का जग भीतर, साध संगि नाम जपै
सगल मनोरथ तिस के पूरन, जिस दया करे प्रभु अपै
मेरे राम जी -

4

दीनदयाल कृपाल प्रभु स्वामी, तेरी शरण दयाला
कर किरपा अपना नाम दीजे, नानक साध रवाला

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला
19.7.04 (10.30 P.M)
Monday सोमवार

श्री राम

19.7.04

Central idea शब्द 55

राम जी सदा मेरे हैं, ऐसा भाव बना रहे, और वह पूरी है, मेरी सारी मन की अन्तर की सब अवस्था जानते हैं, ऐसा दृढ़ विश्वास है। उन से केवल यही कृपा मांगनी है कि हम सदा उन्हीं के गुण गायें सतगुरु की कृपा से, आठ पहर हमारा मन अपने राम जी के चरणों में लगा रहता है, जिससे हम इस संसार रूपी सागर से पार हो जाते हैं। जैसा कि सुन्दर काण्ड रामायण में समझाया गया है ?

"सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुण गाना
सादर सुनहि जे तरहि नर, सिंधु बिना जलयान"

निरन्तर भगवान का नाम गाने से सुनने से, सतगुरु की पूरी कृपा से अहमता भी नष्ट हो जाती है, यह धन सन्तों के संग से या पूरी पुण्य की कृपा से, जीवन सफल हो जाता है। बस हमने सदा कृपालु दयालु भगवान की शरण में ही रहना है, और नाम दान ही मांगना है, सन्तों की चरण रज ही लेनी है।

~~रामजी राम राम~~ श्री राम ---

श्रीराम

19.7.04

शब्द 56

दर्शन देव जीवां २ सतगुरु तेरा,
पूरा करम होवे प्रभु मेरा
दर्शन देव ----

2
एह विनंती सुणा प्रभु मेरे, देहनाम कर अपने चेरे
दर्शन देव ----

3
सुनो विनऊ प्रभु मेरे मीता, चरणा कमलां बसे मेरे चीता
दर्शन देव ----

4
अपनी शरणा राख प्रभु दाता, गुरु परसादि किने विरले जाता
दर्शन देव ---

5
नानक एक करे अरदास, विसर नाही पूरा गुरु तास
दर्शन देव जीवा

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरा गोपाला
19.7.04 (10.55 p.m)
monday सोमवार

श्रीराम

20.7.04

शब्द 56 सारांश

हमारे जीवन का लक्ष्य, आर केवल प्रभु दर्शन हो जाये तो समझो जीवन सफल हो गया। परन्तु ऐसा होता करोड़ों में से किसी एक को।

"कोटन में नानक कऊ, नारायण जह चीत"

ऐसा होने के लिए बहुत अरदासें प्रार्थनाएं जोचारियां करनी पड़ती हैं? हे प्रभो! मेरे कर्म पूरी हों तो मैं आपके दर्शन करूं। सतगुरु के पास मन्दिर कृपा धाम गुरुद्वारे चल कर आऊं। हे प्रभो मेरी विनती स्वीकार करो, अपना दास बना लो। आप के चरण कमल, आप का नाम मेरे हृदय मे बस जाये। सहज अवस्था हो जाय

"हर समय तुम्हारा चिन्तन हो, हर कर्म तुम्हारी पूजा हो"

हे प्रभो! आप मेरे दाता हो, मालिक हो, मुझे २ जन्म २ अपनी शरण मे ही रखना। अपनी कृपा करते रहना विशेष कृपा यही है कि, मै आप को जान जाऊं। बस न मै आप को कभी भूलूं न आप मुझे कभी भी भुला देना। मेहर करना। कृपा करना।

राम जी राम राम, श्रीराम

श्रीराम

20.7.04

शब्द 57

मेरा वैद गुरु गोविन्दा, मेरा वैद गुरु गोविन्द
हरि हरि नाम अउखद मुख देवे, काटे जम के फन्दा।
मेरा वैद --

2.
जन्म जन्म के दुख निवारे, सूका मन साधारे
दरसन भेटत होत निहाला, हरि का नाम वीचारे
मेरा वैद ---

3
समरथ पुरख पूरन विधाते, आपे करणे हारा
अपना दास हरि आप उभारिआ, नानक नाम आधारा
मेरा वैद -----.

शब्द 57 व्याख्या

मेरे गोविन्द, मेरे सतगुरु ही मेरे वास्तविक डाक्टर हैं जैसे Doctor दवाई दे कर रोग से खाने के लिए, और साथ में परहेज़ के लिए बताता है। ऐसे ही मेरे रामजी श्री हरि नाम, श्रीराम नाम, हरि ओम नाम, जपने के लिए समझाते रहते हैं। वह समरथ हैं पूरन हैं, पुरुषोत्तम हैं, उन का दर्शन करने मात्र से मन प्रफुल्लित हो जाता है। वह अपने दिये गये नाम के द्वारा जन्म २ के कष्ट काट देते हैं। अन्दर के सारे विकार नष्ट कर देते हैं, जिससे हम सदा सुखी हो जाते हैं

श्रीराम

20.7.04

शब्द 58

मेरे प्रभु प्रीतम प्राण आधारा, सुण२ जीवा नाम तुम्हारा
मेरे प्रभु प्रीतम प्राण आधारा " " " " "

2.

तूँ वड दाता अन्तरयामी, सब मे रविआ पूरण प्रभु स्वामी
तेरी शरण सत्गुरु मेरे पूरे, मन निरमल होय लत धूरे

3

चरण कमल हृदय उर धारे, तेरे दरशन को जाई बलिहारे
कर कृपा तेरे गुण गावां, नानक नाम जपत सुख पावां

व्याख्या शब्द 58

मेरे पूर्ण प्रभु, मेरे नारायण जी, मेरे रामजी, मेरे सतगुरु जी, मेरे प्राणों के आधार हैं उन का नाम सुन२ के, उन की चर्चा कर के, मानों मुझे नया जीवन मिलता है। वही मेरे अन्तरयामी, सब में बड़े दाता हैं, और मुझे सब मे वही दिखते हैं, उन्होंने मेरे पर विशेष कृपा कर दी है। ऐसे पूर्ण प्रभु की शरण मे ही सदा रहती हूँ। उन की चरण रज से मेरा मन अब निर्मल होता जा रहा है। इन के चरणों को हृदय मे धारण कर के, मुझे परमानन्द की प्राप्ति होती है, अब मुझ पर आप की विशेष कृपा यही बनी रहे कि सदा सदा आप के ही गुण गाऊं संसार की परवाह न करूं कृपा करना। रामजी राम राम श्रीराम

श्रीराम

20.7.04

59

शब्द

तुध बिन दूजा नाही कोय, तूं करतार करे सो होय

2

तेरा जोर तेरी मन टेक, सदा २ जपि नानक एक

3

सब ऊपर पारब्रह्म दातार, तेरी टेक तुध तेरा आधार

4

है तूँ है तूँ होवनहार, अगम अगाध ऊच अपार

5

जो तुध सेवहि तिन भउ द्रावनाही।

गुरप्रसादि नानक गुण गाही॥

6

जो दीसै तो तेरा रूप, गुणनिधान गोविन्द अनूप

7

सिमर सिमर सिमर जन सोइ

नानक करम परापत होइ

8

जिन जपिआ तिन को बलिहार, तोकें सां तेरे संसार

कहो नानक प्रभ लोचा पूरे, सतें जना की बाछ पूरि

रामजी राम राम

गौराम

20.7.04 (10 P.M.)

श्रीराम

20.7.04

व्याख्या शब्द 59

गीता में भगवान श्रीकृष्ण जी ने दो प्रकार के जीवो का वर्णन किया है। एक सात्विक एक तामसी और गुरुसाहब जी ने भी दो प्रकार के मनुष्य बतलाये हैं। एक गुरुमुख दूसरे मनमुख। अब यह शब्द गुरुमुख सात्विक वृति के समझते हैं। कि हे प्रभो! आप के बिना संसार मे कोई है ही नही, और जो आप करोगे, वही होगा, मनुष्य कुछ नही कर सकता। सब प्रकृति मे आप का ही बल है। इस लिए हम आप की ही सदा आराधना करते हैं। क्योंकि संसार तो सारा नाशवान है केवल आप ही शाश्वत हो हमे तो आप का ही सहारा है। सतगुरु ने, नारायण जी ने, राम जी ने हमारा विश्वास आप मे दृढ़ कर दिया, कि जो आप की सेवा करेंगे, उन्हे कभी भी दुख नही होगा। परन्तु आप की कृपा के बिना, कोई भी आप की सेवा नही कर सकता। जो आप की सेवा, तन, मन धन से पूर्णरूप से करते हैं। उन्हे हर जगह आप ही आप नज़र आते हो। ऐसे महापुरुषों के संग से भी हमारा उद्धार हो जाता है। आप कृपा करना ऐसे २ संतो का राम जी का संग सदा मिलता रहे

राम जी राम राम

श्रीराम

श्रीराम 21.7.04

शब्द 60

काटे कष्ट पूरे गुरुदेव, सेवक को दीन्ही अपनी सेवा

2

सूके हरे किए विन्न माही, अमृत दृष्टि संचि जीवाए ॥

3

मिट गई चिंत पुनी मन आसा, करी दइआ सतगुरु गुरा तास

4

दुख नाठे सुख आये समाये, ढील न परी जां गुरु फरमाए।

5

इह पुनी पूरे गुरु मिले, नानक ते जन सफुल फले।

रामजी राम राम
श्रीराम 22.7.04 (10 P.M)

सारांश शब्द 60

पूरा प्रभु मिलने से सारे कष्ट कट जाते हैं सारी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। अगर उन पर पूरा विश्वास रख कर उन के दिये मन्त्र का जाप करते हैं।

श्रीराम

22.7.04

शब्द 6।

साधो गोविन्द के गुण गाओ, मानुष जन्म अमोलक पाइओ
वृथा काहे गवाओ साधो, गोविन्द के - - - - - - - -

2
पतित पुनीत दीन बन्धु हरि, तुम काहे बिसराओ
साधो - - -

3
तज अभिमान मोह माया पुनि, भजन राम चित लावहो
साधो - - - - -

4
नानक कहत मुक्त पथ एहु, गुरमुख होय तुम पावहो
साधो

सारांश शब्द 6।

साधना में ही रहना। केवल भजन कीरतन में समय अवश्य लगाना, पतित पावन भगवान को कभी न भुलाना, अभिमान और माया को त्याग कर, चित राम जी के चरणों में रखना, महाराज फरमाते हैं बस यही मुक्ति का मार्ग है। संसार में रहते हुए, कृपा मांगते रहना कि प्रभु हमें कमल जैसा जीवन प्रदान करें।

राम जी राम राम
श्रीराम
22.7.04

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूरी गोपाला"

श्रीराम

22.7.04

शब्द 62

हरि राम राम राम रामा, जप पूरी होय कामा। 2

2

राम गोबिन्द जपेंदया, होआ मुख पवित्र,
हरि जस सुणीए जिस ते, सेई भई मित्र।

3

सब पदारथ सभ फला, सर्व गुणा जिस मांही
किऊ गोबिन्द मनहु विसारिए, जिस सिमरत दुख जांही

4

जिस लड़ लगिए जीविए, भव जल पइए पार,
मिल साधू संग उधारु होइ, मुख ऊजल दरबार।

5

जीवन रूप गोपाल जस, संत जना की रासि,
नानक उभरे नाम जप, दर सचे शाबाश।

सारांश शब्द 62

राम नाम का जाप करने से लाभ ही लाभ है, संत जना सदा यही पूंजी इकट्ठी करते हैं, नाम जाप करने से आगे दरगाह में भी शाबाश ही शाबाश है।

राम जी राम राम
श्रीराम
गुरुवार 10 30 P.M

श्रीराम

22.7.04

63

शब्द

मैं बन्दा बेखरीद सच साहब मेरा,
जिऊ पिंड सब तिसदा। सब किछ है तेरा।

2

मारा निमारो तूँ धनी। तेरा भरवासा,
बिन साचे अन टेक है। सो जाणहु काचा।

3

तेरा हुक्म अपार है कोई अन्त न पाये,
जिस गुरु पूरा भेटसी सो चले रजाई।

4

चतुराई सयाणपा किते कम न आइए,
तुठा साहब जो देवै। सोई सुख पाइए।

5

जे लख कर्म कमाइए। किछ पल्लै न बधा,
जन नानक हो कीता नाम धर,
होरु अ छोडया धन्धा।

राम जी राम राम
श्रीराम दीनदयाला
कर कृपा पूरी गोपाला
तेरी आस पूरी
गुरुवार 10.40 P.M

28.7.04

शब्द 64

मेरे लाल रंगीले। हम लालन के लाले 2
गुरु अलाव लखाया, अवर न दूजा भाले 2
मेरे लाल ---

2
अलाव लखाया, जां तिस भाया, जां प्रभु कृपा धारी
जग जीवन दाता, पुरख विधाता, सहज मिलया बनवारी
मेरे --

3
नदर करे तां तारन तरिए, सच देवहो दीनदयाला
पुरावत नानक दासनदासा, सगल जीआ प्रतिपाला
मेरे लाल-

व्याख्या / शब्द 64

मेरे सतगुरु, मेरे नारायण जी, मेरे भगवान, सदा लाल रंगीले। सदा प्रसन्न रहते है। हम भी उन्हीं के लाले छोटे २ बच्चे हैं. जीव है, यह सतगुरु ने बताया कि, उन के सिवा, किसी कोभी सुख देने वाला न दूजा। सतगुरु ने मुझे उन का दर्शन करा दिया, जो कि सारे जगत को जीवन देने वाले हैं। और मेरे कर्म बनाने वाले हैं भाग्य रेखा भी बदल सकते है, उन की कृपा से ही सच की प्राप्ति हो जाती है। बस छे दासो का दास बनना है क्योंकि वही हमारी रक्षा, प्रतिपालना करते हैं।

28.7.04

65

शब्द

जप मन मेरे गोविन्द की बाणी। साधू जन राम रसन बखाणी

2

जिस सिमरत दुख सब जाइ। नाम रतन बसै मन आइ॥

3

राम बिन नाही दूजा कोय। जा की दृष्टि सदा सुख होइ॥

4

साजन मीत सखा कर एक। हरि हरि आखर मन में लेख॥

5

रवि रहिआ सरबत स्वामी। गुण गावै नानक अन्तरयामी

65

व्याख्या शब्द

ऐ मन मेरे। तूँ सदा अपने गुरु मन्त्र का सदा जाप किया कर। ऐसा सिमरन करने से तेरी मानसिक वृत्ति ऊपर उठ जायेगी। और हृदय में प्रकाश हो जायेगा। क्योंकि इस पूर्ण परमात्मा के बिना दूसरा कोई भी साजन नहीं है और उन्हीं की कृपा दृष्टि से सच्चा सुख हो सकता है। इसलिए तूँ अपने मन के कोरे काग़ज़ पर केवल उन्हीं का नाम लिख मेरा प्यारा प्रभु सब जगह रमता कर रहा है। इसलिए महाराज फरमाते हैं कि मैं तो केवल उस अन्तरयामी के ही गुण गाता रहता हूँ। तू भी कृपा मांगना और उन्हीं के गुण गाने चाहिए। रामजी रामराम बोलराम

श्रीराम

29.7.04

शब्द 66

बोल हरि नाम उ सफल सा घड़ी, बोल हरि नाम।-----

2

गुरु उपदेस सम द्रुव परहरी, मेरे मन भजु हरि नाम हरी॥

3

कर किरपा मेलहो गुरु पूरा, सतसंगति संगि सिंध मझ तरी

4

जगजीवन धिआइ, मन हर सिमरी, कोट कोटंतर तेरे पाप परहरी

5

सतसंगति साध घूरि मुख परी, इसनान किओ, अठसठ सुर सरी बोल---

6

हम मूरख को हरि कृपा करी, जन नानक तारिओ तारन हरि बोल----

(व्याख्या शब्द 66) बोल हरि -------

जो समय हमारा हरि सिमरन में शुभ कर्मों में व्यतीत होता है वही शुभ है। यह केवल सतगुरु ही हमें बताते हैं। इस लिए हमें नित्य प्रति प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें कोई पूरा सतगुरु मिलें, जिन का जीवन Practical हो, और हमारे जैसे गृहस्थी हों वही हमें यह शिक्षा देंगे, कि तुम अपने मन को समझाओ अगर मन से आप हरि सिमरन करोगे तो तेरे जन्मों के पाप सब कट जायेंगे और अगर रोज़ तुझे सतगुरु की साध संगत की चरण रज मिल गई तो सौ तीर्थों का फल हो गया। हम मूरखों पर भी ऐसी कृपा कर दी।

29.7.04

शब्द 67

राम राम राम जप, रमत राम सहाई 2

2

सतनं के चरना लाग, काम क्रोध लोभ तिआग।

गुरु गोपाल भए दइआल लब्धि अपनी पाई॥

3

विनसे भ्रम मोह अंध, टूटे माया के बन्ध।

पूरन सरब ठाकुर, नही कोई वैराई॥

4

सुआमी सुप्रसन्न भए, जन्म जन्म के दोख गए

सतनं के चरना लाग, नानक गुन गाई

राम राम

व्याख्या शब्द 67

जो राम सारे संसार में रमण कर रहा है। राम राम मन में रमे राम मनोरमे उसी का हर समय ध्यान करो, जप करो। यह केवल संतो के संग से, हमारे विकार भी दूर हो जायेंगे। इस प्रकार से गोपाल भी सहायता करेंगे, हम अपनी पूंजी प्राप्त कर सकेंगे ऐसा करने से हमारे सब भ्रम भ्रम मोह दूर हो जायेंगे, माया के बन्धनों से मुक्त हो जायेंगे, फिर हमें सब में अपने प्रभु की ही झलक दिखाई देगी। भगवान प्रसन्न हो जायेंगे बस आनन्द ही आनन्द हो जायेगा।

राम जी राम राम श्रीराम

29.7.04 शुक्रवार

30.7.04

68

शब्द

प्राणा चाहे छूटे, न छूटे तेरा नाम। श्रीराम २ राम राम २ राम

2

वैदो न वाई भैणो न भाई, एक सहाई २ राम

श्रीराम - - -

3

कीता जिसो होवे, पापा मलो धोवे

सो सिमरहु २ परधान - श्रीराम २ राम राम राम

4

घट घट वासी सर्व निवासी, अस्थिर जां का जा का थान

श्रीराम - - -

5

आवे न जावे, सगों समावे, पूरन जा का जा का काम

श्रीराम - -

6

भगत जना का रावनहारा

संत जीवे जप प्राणा आधार

प्राणा आधारो है श्रीराम

7

करन कारन समरथ हे वाही, नानक तिसपर है कुरबाणा

श्रीराम २ राम राम

राम जी राम राम

श्रीराम

30.7.04 (10.40 A.M.)

30.7.04

व्याख्या शब्द 68

जिन पर पूरी कृपा है अपने भगवान जी की या सतगुरु जी की, उन की एक ही प्रबल इच्छा होती है चाहे प्राण चले जाये पर नाम न भूले। क्योंकि संसार में जब दाव बड़ जाता है, न वैद काम कर सकता है न रिश्तेदार काम आते हैं। उस समय बस जीव भगवान को ही सहायता के लिए पुकारता है। इस लिए सतगुरु हमें यही समझाते रहते हैं कि तुम सुबो मे भी उन्हीं सर्वशक्तिमान को सिमरण करो जो कि घट घट मे व्यापक है। सब मे जो निवास करता है। जो हमेशा है, होगा, रहेगा,। वह हमेशा स्थिर है और उन का काम भी पूरी है। वह ऐसे राम जी, जो कि भक्तों की रक्षा करते हैं और संत तो उन्हें अपने प्राणो मे मन मे बुद्धि मे समाये रखते हैं करन कारन सब कुछ वही करते हैं। ऐसे प्यारे प्रभु पर सतगुरु जी कुरबान जाते हैं

राम जी राम राम (श्रीराम)

30.7.04 (10 AM)

श्रीराम

30.7.04

शब्द 69

अमृता पिअ वचन तुम्हारे, अति सुन्दर मन मोहन प्यारे

अति सुन्दर मन मोहन प्यारे

सभ हू मध निरारे 2

अमृता पिअ ---

2.

राज न चाहू मुक्त न चाहू

मन प्रीति चरण कमलारे

ब्रह्म महेश सिद्ध मुनि इन्द्रा

मोहे ठाकुर ही दरसारे

अमृता पिअ ----

3

दीन दुआरे आइओ ठाकुर

सरनि परिओ संत होर

कहु नानक प्रभ मिले मनोहर

मन शीतल विगसारे

अमृता पिअ ---

राम श्री राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला

तेरी ओर पूरी गोपाला

30.7.04

(10 P.M)

31.7.04

व्याख्या शब्द 69

हे मेरे प्यारे राम जी, सतगुरु जी, आप के वचन मानों अमृत के घूंट है, आप अति सुन्दर हो, अति प्यारे हो, और सब में रहते हुए भी अलिप्त हो।

मैं केवल आप के चरण कमलों का प्रेम चाहती हूँ। आप के प्रेम के सदके मुझ सब में आप ही दिखते हो। हे प्रभो मैं एक दीन भिखारी बन के आप की शरण आई हूं। संसार के माया जाल मे हार गया हूं। अब आप अब मुझे मिल गये है, इसलिए अब मैंने शान्ति प्राप्त कर ली है और मेरा मन रूपी कमल खिल गया है। यह सब आप की कृपा से ही हुआ है।

राम जी राम राम
कृष्ण
31.7.04
(3.45 A.M)

श्रीराम

3.8.04

शब्द 70

किआ मांगऊ किछु थिरु न रहाई, देखत नैन चलिओ जगु जाई

2.

लकां सी कोट समुद्र सा खाई, तिस रावण घर खबर न पाई

3

इक लख पूत सवा लख नाती, तिह रावन घर दीआ न बाती

4

चंदु सूरजु जां के तपत रसोई, बैसंतरु जा के कपड़े धोई

5

गुरमति रामै नाम बसाई, स्थिर रहे न कतहुं जाई

6

कहत कबीर सुनो री लोई, राम नाम बिन मुकति न होई

भावार्थ शब्द 70

जब हम नित्य प्रति देख रहे हैं कि हमारे सारे रिश्ते सम्बन्धी सारा संसार मृत्यु को धीरे धीरे बारी २ मृत्यु की ओर ही चलता जा रहा है। फिर हम अपने प्यारे प्रभु से, क्या नश्वर चीजें मांग कर, अपनी प्रतिष्ठा खो देते हैं। जो बच्चा मां बाप से हर समय मांगता रहता है (बड़ा हो कर भी) तो वह माता पिता की नजरों से गिर जाता है। इस लिए हमारी भक्ति निष्काम होनी चाहिए प्रभु को पता है हमें क्या चाहिए अगर हम पूर्णतया उसी के हो जाते हैं। यही रावण का उदाहरण दे कर, हमें समझाया गया है

रावण ने अपनी लंका के चारों ओर गहरी खाई बनाई हुई थी जो कोई भी लांघ नहीं सकता था, अर्थात चारों ओर समुद्र था। फिर भी हनुमान जी तो लांघ गये। जो अपने भगवान का सतगुरु का सच्चा सेवक होगा उसे कोई भी वस्तु Impossible नहीं होगी। हमारा कितना भी बड़ा परिवार हो। कितना भी ऐश्वर्य हो, रावण की तरह एक दिन तो मृत्यु ने अवश्य ही आना है। कबीर जी अपनी माई लोई (स्त्री) को समझा रहे हैं कि हमारी मति, गुरु जी की ओर रहे तो वह जो अपना नाम दो राम नाम श्रीराम बस उस के सहज भाव से जपने से अवश्य ही मुक्ति हो जायेगी। अर्थात हम आवागमन से छूट जायेंगी। यह सब पूरी प्रभु की कृपा से ही हो सकता है। इसलिए केवल कृपा की ही याचना करो।

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरन गोपाला
3 8.04 (10 P.M)

श्रीराम

3.8.04

शब्द

7.

पूता माता की आसीस, निमख न विसरे तुम को हरि २
सदा भजो जगदीश पूता -----

2.

जिसु सिमरत सभ किलविख नासहि
पितरी होय उधारो, सो हरि २ तुम सद ही जापो
जा का अन्त न पारो पूता -------

3

सतगुरु तुम को होय दयाला, संत संग तेरी प्रीति
काया पत परमेश्वर राखे, भोजन करि तन नीत

4 पूता --

अमृत पीवहो सदा चिर जीवहो
सिमरत अनत अनन्ता पूता माता ---
रंग तमाशा पूरी आशा कभी न व्यापै चिन्ता -

5 पूता -

भवर तुम्हारा एह मन होवै
हरि चरणा होय कमला पूता माता ---
नानक दास उन संग लपटाइओ
जिउ बूंद चातृक मउला। पूता माता --

राम जी राम राम

श्रीराम

3.8.04 (10.20 P.M)

Date: 4-8-04

व्याख्या शब्द 71

"गुरुदेव माता, गुरुदेव पिता, गुरुदेव सहोदरा"

माता रूपी गुरुदेव अपने प्यारे शिष्य को आशीर्वाद देते हैं हे मेरे ब्रह्मज्ञानी पुत्र, तुम्हें हरि नाम बिल्कुल न भूले। सदा अपने पूर्ण प्रभु की याद में रहो। क्योंकि हरि सिमरन से सब पाप नष्ट हो जाते हैं और पितरों का भी उद्धार हो जाता है। उस परम पिता परमात्मा का कोई भेद नहीं पा सकता। सतगुरु अपनी दया से तुम्हें संतों का प्रेम प्रदान करते रहें और तुम्हें रोज़ ही सत्संग कीरतन मिले। तुम्हारी लाज भगवान अवश्य रखते आये हैं, आगे भी रखें। आप सदा नाम रूपी अमृत पीते रहो। जिस से दीर्घायु हो। संसार के सारे रंग मारते हुए तुम्हें कोई भी चिन्ता न हो। तुम्हारा मन भंवर हो और भगवान के चरण कमल हों। सदा तुम्हारा मन हरि चरणों में लिपटा रहे। जैसे चातक स्वाति बूंद से ही तृप्त होता है। ऐसे ही तुम्हें हरि चरणों का रस प्राप्त हो। यह केवल पूर्ण प्रभु की कृपा से ही हो सकता है।

~~राम जी राम राम~~
श्री राम
4.8.04 (P.M.)

9.8.04
9.40 a.m.

शब्द 72

गाऊ गाऊरी दुल्हनी मंगला चारा, मेरे गृह आए राजा राम भतारा

2

तन रैनी मन पुनरपि करि हौं, पांचऊ तत बराती राम
रामराई सिंऊ भांवरि लै हऊ, आतम तहं रंगराती राम

3.

नाभि कमल मेंहि वेदी रचिले, ब्रह्म गिआन उचारा राम
राम राइ सिंऊ दूलह पाइओ, अस बड भाग हमारा

4

सुरनर मुनिजन कऊतुक आए, कोटि तैंतीस उजानां राम
कहि कबीर मोहि बिआहि चले है, पुरख एक भगवाना राम

व्याख्या शब्द 72

इस शब्द में कबीर जी ने हमें निर्भय कर दिया। मृत्यु से भी ?

जिस मरने ते जग डरे, मेरे मन आनन्द
मरने ही ते पाइए पूरन परमानन्द

यहां आत्मा रूपी स्त्री जब केवल अपने परमात्मा के ही मंगलाचरण करती है तो अन्तर में राम जी (सतगुरु) प्रगट हो जाते हैं, इस के लिए शरीर ही साधन है, पांचो तत्व (अग्नि[1] वायु[2] जल[3] आकाश[4] पृथ्वी[5]) यह तत्व, तत्व मिल जाते है, जब हमारा प्रेम प्रेम, राम मे रमण करता है बस शादी हो गई आत्मा की परमात्मा से एकाकार हो गया

7·8·04
~~9·55 P.M~~

शब्द 73

किरपा करो हरे, हरे कृपा करो हरे,
नानक मांगे दरस दान किरपा करो हरे।2

2.
जिन जिन नाम धयाया, तिन के काज सरे,
हरि गुन दूरा आराधिया, दरगह सच खरे।

3.
सरब सुखा निधि चरना हरि, भवजल बिखम तरे, हरे कृपा --
प्रेम भगति तिन पाइआ, बिछुरिआ नाही जरे।

4
कूड़ गए दुविधा नसी, पूरन सचे भरे हरे कृपा -
पारब्रहम प्रभ सेवदे, मन अन्दर एक धरे

5
माह दिवस मूहत भले, जिन को नदर करे हरे, कृपा --
नानक मांगे दरस दान, कृपा करो हरे, हरे ---

व्याख्या शब्द 73

हमें अपने भगवान से रामजी से यही कृपा मांगनी है कि अन्तर में हो दर्शन हो जायें। जो सदा प्रभु ध्यान में रहेंगे, सतगुरु द्वारा आराधना करते रहेंगे, वह प्रभु प्रेम पा कर, विकारों में नहीं जलेंगे। सारी दुविधाएं उन की दूर हो जायेंगी। पारब्रह्म परमेश्वर को मन में धारण कर के पूरी हो जायेंगे, सारी दुविधाएं दूर हो जायेंगी

श्रीराम

134

9.8.04

शब्द 74

मेरे प्रीतम प्यारे, मान करऊ तुध उपरे, मेरे प्रीतम प्यारे 2

2.

हम अपराधी सद भूलते, तुम बलवान हरे मान ---

3.

रावहु अपनी शरणा प्रभु, मोहि किरपा धारे

सेवा कछु न जानहु, नीच मूरखारे

मान ----

4

हम अवगुन करहि असंख्य नीत, तुम निरगुन ओर

दासी सगति प्रभु त्याग, एह कर्म हमारे

मान करऊ —

5

तुम देवहु सब किछ दया धार, हम अकिरत घनारे

लाग पेरे तेरे दान से, नही चित खसमा रे

मान —

6

तुम देवहु सब किछ दया धार, हम अकिरत घनारे

लाग पेरे तेरे दान से, नही चित खसमा रे

मान —

7

तुम ते बाहर कछु नही, भव काटन हार

कहे "नानक" सरणी दयाल गुरु, लेहु मुगध उधार

रामजी राम राम

श्रीराम

9.8.04 (10 P.M)

10.8.04

व्याख्या शब्द 74

हमें अपने सतगुरु (राम जी) सदा यही समझाते हैं आप अपने इष्टदेव को साक्षात देखते हुए उन के आगे रोम विनम्रता से प्रार्थना करो ! हे प्रभो! हम तो मेरे प्रियतम हो, प्यारे हो, मुझे तो केवल आप पर ही मान है, हम तो सदा आप का मान है। जैसे हनुमान जी ने कहा "अस अभिमान जाही जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे"। आप सदा अपनी कृपा का हाथ मेरे ऊपर रखना। हम तो पतित हैं मूरख हैं, आप अपनी शरण मे ही रखना। हमारी तो संगत भी माया की ही है। हम माया मे आ कर आप को भूल जाते हैं आप अपनी दया से हमे सब कुछ देते हैं। परन्तु हम अकृतघ्न हैं। कि हम आप की वस्तुएं जो आपने दान में दी हैं उन्हे तो ज्यादा याद करते हैं और आप दाता हो, यह भूल जाते हैं। महाराज जी आप से बाहर तो कुछ भी नही आप सबके बंधन काट सकते हैं, हम तो सदा मुग्ध अज्ञानी आप की शरण मे हैं आप ही हमारा उद्धार कर सकते हैं और करोगे, पूर्ण विश्वास है। कृपा करो।

राम जी राम राम श्रीराम मंगलवार 10.8.04 (10 PM)

10.8.04

75

शब्द

जन के पूरा होय काम 2 कलिकाल महा विनिआ महि

लजा राखी राम, मेरी लजा राखी राम

2

सिमर सिमर स्वामी प्रभु अपना, कि निकट न आवे जाम 2

लजा राखी राम, मेरी लजा राखी राम

3.

मुकति बैकुंठ, साध की संगति, जन पाइओ हरि का धाम 2

लजा राखी राम, मेरी लजा राखी राम

चरण कमल हरि जन की थाती, कोटि तूव विश्राम 2

लजा राखी राम, मेरी लजा राखी राम

गोविन्द दामोदर सिमरहु दिन रैण, नानक सद कुरबाण 2

लजा राखी राम 2

व्याख्या शब्द 75

इस महा कलिकाल में, जो भी प्रभु के दास बन जाते हैं उन की लाज, प्रभु अवश्य राखते हैं क्योंकि उन्हें नित्य प्रति सतगुरु समझाते रहते हैं। अगर तुम सदा सिमरण भजन करते रहोगे तो यम भी क्रुद्ध नहीं रहेंगे। सन्तों की संगत से ही बैकुण्ठ धाम की प्राप्ति है, करोड़ों सुखों के अधिकारी हो जाते हैं। बस सदा गोविन्द श्री कृष्ण, नरसिंघ जी का

11.8.04

शब्द 76

कोई आरा मिलावै, मेरा प्रीतम प्यारा 2
हऊ तिस पहि आप बेचाई 2
दरसन हरि देखरा के तांई, कृपा करहि तां सतगुरु मेले
हरि हरि नाम दृढाई, मेरा प्रीतम प्यारा
कोई ------

जे सुख देहि तां तुझहि आराधहि, 2
दुख भी तुझहि धिआई,
जे भुख दे तां इत ही राजा,
दुख विच सुख मनाई॥ मेरा प्रीतम --

तन मन काटि काटि, सब अरपी, 3
विचि अगनि आप जलाई,
पखा फेरी पाणी ढोवां, जो देवहि सो खाई,
मेरा प्रीतम --

नानक गरीब ढहि पइआ दुआरै, 4
हरि मेल लेहो वडआई॥ मेरा प्रीतम --

रामजी राम राम
श्रीराम 11.8.04 10 P.M. गुरुवार

श्रीराम

12.8.04

शब्द 77

दरसन दीजै खोल किवाड 2,
दरमादे ठाढे दरवार ॥ हरि दर्शन ----

2

तुम घन घनी उदार तिआगी,
स्रवनन सुनीअत सुयश तुम्हार ॥

3 हरि दरसन-

मांगऊ काहे रंक सब देवउ,
तुम्ह ही ते मेरो निस्तार ॥

4

जैदेअ नामा विप्र सुदामा,
तिन को किरपा भई अपार ॥

5

कहि कबीर तुम समरथ दाते,
चार पदारथ देत न वार ॥ हरि दर्शन --

रामजी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पुकारी गोपाला (10.15 p.m)
12.8.04 गुरुवार

शब्द 78

जाचक नाम जाचै २ सर्व आधार सर्व के नायक
सुख समूह के दाते २॥
जाचक नाम ----.
केतिक मागंन मांगे, भावनिआ सो पाइए २
सफल सफल सफल दरस रे, परसि परसि गुन
गाइए २
नानक तत तत सिऊ मिलिए,
हीरे हीर बिधाइए॥

व्याख्या 78

हमें बार २ भिखारी बन के अपने प्रभु से सदा नाम दान ही मांगना है, क्योंकि, हमारे प्रभु तो सुख के सागर है। सुख दाता है। नाम दान मांगने वाले भी करोड़ो है, परन्तु जिस की भक्ति पाई जाती है, वही उन्हे प्राप्त कर सकता है। महाराज फरमाते है जैसे हीरे को हीरा ही काट सकता है। ऐसे हमें तत्व से तत्व को जानना है। जैसे मेरे सतगुरु है ऐसा ही बनने की कृपा याचना करते रहना है। फिर तो आनन्द ही आनन्द है। राधास्वामी

श्रीराम 140
13.8.04

79

शब्द

ओट लेहो हरि नामे। रे मन ओट लेहो हरि ना

जां के सिमरन दुरमति नासे, पावे पद निर्वाणा

2 ओट लेहो

बड़भागी ते जन को जानो, जो हरि के गुण गावे

जन्म जन्म के पाप खोय के, पुनः वैकुण्ठ सिधावे

3 ओट लेहो

अजामिल को अन्त काल में, नारायण सुधि आई

जां गति को योगीश्वर वांछत, सो गति छिन में पाई

4 ओट ----.

नाहिन गुण नाहिन कछु विद्या, धर्म कवन गज कीन्ह

धरम कउन गज कीना, नानक विरद राम का दीना

अभय दान तेह दीन्हा ----.

हे मेरे मन तू सदा हरि नाम का आश्रय ले, जिस के सिमरन से तेरी बुद्धि पवित्र हो जायेगी, बड़े भाग्य वाले ही सिमरन कर सकते हैं। क्योंकि हरि भजन से जन्मों के पाप क्षय हो जाते हैं और सुखी हो जाते हैं। अजामिल को अन्त समय में अपने बेटे नारायण को नाम पुकारते हुए प्राण त्यागे, उसे परम गति प्राप्त हो गई। गज का भी उद्धार हो गया। यह मेरे प्रभु का स्वभाव है।

13.8.04

शब्द 80

तुम्हरी कृपा ते मानुख देह पाई है। देहो दरस हरि राया।
अनिक जन्म बहु जोनि भ्रमया, बहुर बहुर दुख पाया

2. तुम्हरी कृपा ते - -

मिलहु प्यारे जीआ, सब कीआ तुम्हरा थीआ

3 तुम्हरी - - - - - - कीता

सोई होआ जो तिस भाया। अवर न करनै कीता।
तुम्हरे भाणै भरम मोह मोहिआ, जागत नाही सूता

4 तुम्हरी कृपा - - -

विनउ सुनो तुम प्राणपति मेरे, कृपानिधि दयाला।
राखि लेहो पिता प्रभु मेरे, अनाथह कर प्रतिपाला

5 तुम्हरी किरपा ते - -

जिसनु तुम्हे दिखाइओ दरसनु, साध संगति के पाइ
कर किरपा चूर देहो सतनं की सुख नानक इह वाइ

CENTRAL IDEA

प्रभु कृपा से मनुष्य जन्म मिला, परन्तु माया के वश हो कर जीव जागा नहीं, सदा प्रार्थना करो कि हमें संतो का संग मिलता रहे। जिस से प्रभु दर्शन हो जाये और हमारी प्रतिपालना प्रभु आप स्वयं करें /

रामजी राम राम श्री राम

श्रीराम

13.8.04

शब्द 8।

इक तिल प्रभु न बीसरे, जिन सब किछ दीआ राम

इक तिल ----

2

बड़भागी मेला वड़ा गुरु सिख चीन्हा राम 2

3 इक तिल ----

बाहं पकड़ तम ते काढिआ, कर अपना लीन्हा राम

4

नाम जपत नानक जीवै, शीतल मन सीना राम

इक तिल ----

सारांश शब्द 8।

हमने सदा प्रभु से यही प्रार्थना करनी है कि हमें अपना प्यारा राम निमिष मात्र भी न भूले। सब कुछ तो उन्हीं का दिया हुआ है। बड़े भाग्य वान हो जाते हैं वह शिष्य, जिन को प्रभु अपने दरबार में दाखिला देते हैं। फिर भगवान उस शिष्य को अज्ञानता से निकाल लेते हैं। महाराज फरमा रहे हैं कि उन का तन मन तो सदा शीतल है क्योंकि वह हर समय नाम में ही लीन रहते हैं। हमारे पर भी कृपा करो। राम जी राम राम श्रीराम

13.8.04

82

शब्द

दिनराती आराधहो प्यारे, २ निमाव न कीजे ढीला

2

संतसेवा कर भावनी लाइये। तिआगि मान हठीला

दिनराती ---

3

मोहन प्रान मान रंगीला २, रंगीला २ रंगीला २

मोहन प्रान मान रंगीला

दिनराती ---

4

वास रहिओ हिअरे के संगे, पेखि मोहिओ मन लीला

5 मोहन प्रान ---

जिस सिमरत मन होत आनंदा, उतरै मनहु जंगीला

मिलवे की महिमा. बरनू न साकउ, नानक परे परीला

CENTRAL IDEA मोहन प्रान ---

सतगुरु राम जी हमें प्यार से समझा रहे हैं। ऐ मेरे प्यारे जीव तू दिनराती प्रभु की आराधना कर। संतो की सेवा से तेरी अहंता मिट जाएगी। वह प्यारा मोहन तो सदा तेरे अन्दर है। उस के सिमरन मात्र से आनन्दमय रहेगा। उन के मिलने की महिमा तो बयान नहीं हो सकती बस तू उन की शरण में पड़ा रह।

राम जी रामराम

श्रीराम

श्रीराम

144
14.8.04

शब्द 83

किस नाल कीजै दोस्ती, सब जग चलणहार

2.

कूड़ राजा कूड़ परजा, कूड़ सब संसार,
कूड़ मंडप कूड़ माड़ी, कूड़ बैसणहार ॥

3 किस नाल --

कूड़ सूइना, कूड़ रुपा, कूड़ पैन्हणहार,
कूड़ काया कूड़ कपड़, कूड़ रूप अपार ॥

4 किस नाल --

कूड़ मीयां कूड़ बीबी, रलिया होय खार,
कूड़ कूड़े नेह लगा, विसरिआ करतार ॥

5

कूड़ मिठा कूड़ माखिऊ, कूड़ डोबे पूर,
नानक वखाणै बेनती, तुध बाझ कूड़ो कूड़

CENTRAL IDEA

संसार में, हम हर रोज़ देखते हैं, सारे मित्र सम्बन्धी सब जा रहे हैं मृत्यु की ओर। क्या राजा, क्या प्रजा क्या महल झोपड़िया, उन में रहने वाले, सब जा रहे हैं शरीर भी बुढ़ापे में क्षीण हो जाता है, मीयां बीबी का प्यार भी वैसा नहीं रहता, फिर भी यह मोह लगता है। बेनती करो, जब आ जाये भगवान साथ है तो सब साथ है

14.8.04

शब्द 84

कर किरपा अपने घर आया, तां मिल सखियां कज रचाया।

2.

खेल देव मन अनंद भया, शहो विहावण आया।
गावहु गावहु कामणी, विवेक विचार कामणी,
हमरे घर आया, आया, जगजीवन भतार आया।

3.

गुरु दुआरे हमरा वीआहु जि होआ,
जां शहो मिलिआ, तां जानिआ।।
तिहि लोका महि, शब्द रविआ है,
आप गइआ मन मानिआ।।

4.

आपणा कारज आप सवारे, होरन कारज नहोई
जित कारज सत संतोख दया धर्म है,
गुरु मुखि बूझै कोई।।
भणति नानक समझा का पिर एको सोई,
जिसनू नदर करे मेरा प्यारा, सा सोहागण होई।।

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा गुरु दीनदयाल।
हरि भरपूरी गोपाल।।
14.8.04 (10.15 P.M)

श्रीराम

17.8.04

शब्द 85

आस-पास घन तुलसी का बिरवा,
माझ बनारस गाऊ रे।

2. आस पास - - - -

उअं का स्वरूप देख मोहि गुआरिन
मो को छोड़ न जाऊ रे
आस पास - - - -

3

तोहि चरन मन लागो सारिंगधर,
सो मिले जो बड़भागो रे॥

4 आस पास - - - -

बिंदावन मन हरन मनोहर,
कृसन चरावत गाऊ रे॥
आस पास - - -

5

जा का ठाकुर तुंही सारिंगधर,
मोहि कवारी नाऊ रे॥
आस पास - - -

राम जी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
हरी ओम् पूरो गोपाला।
17.8.04
9.30 P.M

व्याख्या शब्द 85

यह वृन्दावन गांव की सुन्दर छवि दिखा रहे हैं, कबीर जी। चारों ओर तुलसी ही तुलसी है, बीच में रस भरा गाँव है (क्योंकि यहां रसिकों ने अपना रस बरसाया था) उन का स्वरूप भी बड़ा सुन्दर था। अभी भी ऐसा लगता है कि यहां दिखा रहे हैं, कबीर जी कह रहे हैं मैं तो अनपढ़ गवांर गोपी हूँ, पर मुझे छोड़ न देना। मेरा मन तो आप के चरण कमलों का भंवरा है। आप को तो बड़े भाग्यवान ही मिल सकते हैं। यह मन को हरने वाले कृष्ण जी गऊएं चरा रहे हैं। मेरा संसार का नाम कबीर जी है। परन्तु मैं तो अपने प्रभु की गोपी हूं। (जिसने गोपनीय रहस्य जान लिये हों वही गोपी होती है। कृष्ण गऊएं चराते हैं अर्थात जो अपनी इन्द्रियों पर संयम कर सकता है वह कृष्ण है। उस में आकर्षण शक्ति आ जाती है, जो हर पल नाम जपता है और प्रेम की बंसी बजाता है। कृपा करो जी हमारे पर भी।

श्रीराम

17.8.04

शब्द 86

अंतर राम राम प्रगटे आये, गुरु पूरे दिओ रंग लाए

2

चित आवे तां महा आनन्द, चित आवे तां सब दुख भंजे

3

चित आवे तां सरधा पूरी, चित आवे तां कबहि न झूरी

4

चित आवे तां सर्व को राजा, चित आवे तां पूरे काजा।

5

चित आवे तां रंग गुलाल, चित आवे तां सदा निहाल।

6

चित आवे तां सद निर्भरता, चित आवे तां सद धनवंता

7

चित आवे तां चूकी करोग, चित आवे तां सब रंग मोरे॥

8

चित आवे तां सहज घर पाया, चित आवे तां सुन्न समाया

9

चित आवे सद कीरतन करता, मन मानिआ नानक भगवंता

राम जी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।

तेरी ओट पुरी गोपाला

17.8.04 (10 PM)

18.8.04

जिसे पूरा सत्गुरु मिल जाते हैं, वह अपने शिष्य पर कृपा करते हैं। पहले उसे "कर कृपा" के मन्त्र का जाप करवाते हैं। साधना, सेवा, सिमरण, सत्संग देते हैं। फिर शिष्य के मन मन्दिर में स्वयं प्रगट हो जाते हैं। रामजी के रूप में या किसी भी रूप में। फिर शिष्य अन्तर में आनन्द परमानन्द का अनुभव करता है, उस के बाहर के सारे दुःख स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं। ऐसा परमानन्द प्राप्त करने के बाद श्रद्धा पूरी हो जाती है, अन्तर की सारी Tension समाप्त हो जाती है। उस की सारी तृष्णाएं समाप्त हो जाती हैं तो वही तो वास्तविक राजा है (जब आवे सन्तोष धन सब धन धूल समान) जब नाम चित्त तक पहुंच जाता है अन्तर में भजन खुल जाता है, तो शिष्य स्वतंत्र हो जाता है वास्तविक में धनवान होता है, सच्चे धन से, वह अन्तर में हरि रस लेता है सारे बाहर के रंगों को भी भोगता हुआ, सहज अवस्था हो जाती है। उस के अन्दर सुन्न समाधि लगी रहती है बाहर केवल व्यवहार करता है। जब मन भगवान को मान गया तो कीरतन ही कीरतन है, अन्तर में शब्द चलने लगता है। ~~कृपा राम जी की होती है।~~ तब राम जी सब राम

श्री राम

श्रीराम

18.8.04

शब्द 87

चरणा कमल संग लागी डोरी,
सुख सागर कर परम गति मोरी॥
चरणा कमल --

2.

अचंल गहाइओ, जन अपने को,
मन बीधो बीधो प्रेम की खोरी॥
चरणा - - -

3

जस गावत भक्ति रस उपजिओ,
माया की जाली सब तोरी॥
चरणा - - - - -

4

पूरन पूरि रहे किरपा निधि,
आन न, पावऊ पावउ होरी॥
चरणा - - —

5

~~नानक मेल लहिओ दास अपना,~~
प्रीति न कबहु न कबहु थोरी॥
चरणा - - .

रामजी राम राम
श्रीराम दीनदयाला
कर कृपा तुम दीनदयाला
तूही आप पूरा गोपाला
18.8.04
(3 A.M.)

18.8.04

व्याख्या शब्द 87

यह तो गुरु साहब फरमा रहे हैं, कि मेरी स्वासों की डोरी नाम के साथ जुड़ गई है। हे मेरे प्रभु आप तो सुखों के सागर हो, पूरी रूप से। अन्तर में मेरी गति कर देना। यह सब कैसे हुआ? पहले मैंने सतगुरु को अपना बनाया। उन का आंचल पक्की तरह से पकड़ा। उन की सेवा की। उन्होंने मुझे इतना प्यार दिया कि मेरा मन उन के प्रेम में बिंध गया। बस दिन रात मैं उन्हीं का यश गाती-फिरती। इस से मेरे मन में भक्ति का रस उत्पन्न हो गया, जिस से मेरी सारी माया खत्म हो गई। सब जगह मुझे राम ही राम राम दिखने लगा। द्वैत सारा खत्म हो गया। फिर भी दिन रात अरदासें करते रहें। कि हे प्रभु यह प्यार मेरा आप के प्रति कभी भी कम न हो जाये

जन्म जन्म पद कमल रति, बनहु घरे जनि नेह
(रामायण)

यह सब प्रभु कृपा से ही हो सकता है। हमें भी प्रार्थना करनी चाहिए

रामजी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला

20.8.04

शब्द 88

मन मेरे, मन मेरे, हरि के चरण रवीजै

2

दरस प्यास मेरा मन मोहिओ,
हरि पावं लगाइ मिलीजै॥ मन मेरे --

3

खोजत खोजत मारग पाइओ,
साधू सेव करीजै॥ मन मेरे ----

4

चारि अनुग्रह स्वामी मेरे,
नाम महारस पीजै॥ मन मेरे --

5

त्राहि त्राहि कर सरनी आए,
जलतऊ किरपा कीजै॥ मन मेरे --

6

कर गहि लेहो दास अपने कउ,
"नानक" अपनो कीजै॥ मन मेरे --

राम जी राम राम
श्रीराम दीनदयाला।
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।
20.8.04 (3 P.M.)

20.8.04

सतगुरु हमें नित्य प्रति समझाते रहते हैं ?

आप नित्य प्रति अपने मन को समझाओ ? हे मेरे मन तू सदा हरि चरणों में रमता कर। अर्थात मग्न रह फिर तेरे अन्दर प्रभु दर्शन की प्यास जागृत हो जायेगी कि कैसे मैं अपने प्रभु को (राम जी को) मिलूं। मुझे पंख लगा दो, मैं उड़ कर उन्हें जा मिलूं। फिर मैंने ढूंढना शुरु किया। तब मुझे समझ आया कि सन्तों की सेवा से प्रभु मिलेंगे। फिर पिछले वेद शास्त्र पढ़े, जिन में नारद मुनि जी का प्रसंग आया। उन की मां अति निर्धन थी, वह सन्तों की सेवा करती थी जिस से उसे भगवत प्राप्ति हो गई। नारद मुनि जी भी साथ २ सेवा करने लगे। मां तो चल बसी परन्तु नारद मुनि भगवान के परम अन्तरंग बन गये। इस प्रकार हमें भी अपने पूर्ण प्रभु राम जी के आगे प्रार्थना करनी चाहिए। हे प्रभु मेरे पर भी अपनी कृपा धार के रखो, मुझे बचाओ बचाओ इस माया रूपी अग्नि से। अपने दास का हाथ पकड़ लो। मुझे अपना बना लो। माया आवरणी दासी है। फिर इस का मेरे पर प्रभाव नहीं हो।।

राम जी राम राम
श्रीराम 20-8-04 (10 P.M)

श्रीराम

20.8.04

शब्द 89

अब अपने प्रीतम सिऊ बन आई 2।
राम
राजा रमत सुख पाइओ बरस मेघ सुखदाई
अपने प्रीतम ----

2
इक पल निखरत नही सुखसागर,
नाम नवै निधि पाई ॥
अपने प्रीतम --

3
उड़ौत भइओ पूरन भावी को
भेटे संत सहाई
अपने प्रीतम ----

4
सुख उपजे दुख सगल विनासे,
पारब्रहम लिव लाई॥
अपने प्रीतम

तरिओ संसार कठिन जो सागर,
हरि नानक चरण धियाई
अपने प्रीतम --

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
मेरी आर पूरो गोपाला
20.8.04
(U.P.M)

महान पूर्ण प्रभु की कृपा से ही हो सकता है

शब्द 89 व्याख्या

जब हमारे पूर्व संचित कर्म प्रकट होते हैं। पूर्व जन्मों की अगर सच्ची कमाई होती है, तो हमें पूर्ण सतगुरु मिलते हैं। वह हमें बार २ हरि चरणों का ध्यान करने का उपदेश देते रहते हैं। उन के बार २ समझाने पर, जिन की पिछली करणी ज्यादा होती है, उन्हें इस जन्म में गुरु का शब्द मन तन में रमण करने लगता है। तब वह शिष्य (हम) कह उठते हैं, कि अब तो मेरी पूर्ण प्रियतम से प्रीति हो गई है। वह तो राजाओं के राजा शहनशाहों के शहनशाह हैं। अब तो मेरे मन में सदा सुख ही सुख हो गया है। क्योंकि अब उन्होंने कृपा कर के मुझे सच्चे नाम का खजाना दे दिया है। अब मुझे एक पल भी अपने प्रियतम की स्मृति नहीं भूलती। मेरी लगन अब तो उन्हीं में बढ़ती जा रही है। इस संसार सागर से मुझे मेरे पूर्ण प्रभु सतगुरु ने पार कर दिया है अर्थात अब मेरे पर माया अपना प्रभाव नहीं डालती। आनन्द ही आनन्द हो गया है यह सब पूर्ण प्रभु की कृपा से ही होता है।

राम जी राम राम श्रीराम कर कृपा ----

Wednesday
बुद्धवार

"श्रीराम"

156
25.8.04

शब्द 90

ए सरीरा मेरेआ, इस जग महि आइकै,
किआ तुध करम कमाइआ।
कि करम कमाइआ तुध सरीरा,
जा तू जग महि आइआ।

2 ए सरीरा ---
जिन हरि तेरा रचन रचिया,
सो हरि मंनि न वसाइआ।
गुरु परसादि हरि मन वसिया,
पूरब लिखिआ पाइआ।

3
कहै "नानक" ए सरीर परवाणा होआ,
जिन सतगुरु सिउ चित्त लाइआ।

राम जी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूरी गोपाला।
25.8.04 (4 p.m)

श्रीराम

25.8.04

५० शब्द व्याख्या

जो रोज पूर्णी प्रभु की कृपा याचना करते हैं। कर कृपा को मन्त्र गाते रहते हैं। वह अपने शरीर से प्रश्न करते हैं, तू ने इस संसार में आ कर क्या अच्छा कर्म किया? जिस प्रभु ने इतनी कृपा कर के तुझे इतना सुन्दर बनाया, तू उसी को भूल गया, उन्हें हर पल मन में नहीं बसाया, और शेष सारे झूठे लोग तूने मन में बसा लिये, उन्हीं के गीत गाता रहा जो तुम्हें धीरे २ छोड़ते गये। लेकिन जब सतगुरु की पूर्णी कृपा हुई, तो मन में हरि हरि बस गये। हर समय उन्हीं का ध्यान हो गया, उन्हीं का सानिध्य अच्छा लगा, उन्हीं की बातें चर्चा, स्तुति गाने को मन करने लगा। संसार की झूठी बातों से मन हट गया। मौन अच्छा लगने लगा, एकान्त वास अच्छा लगने लगा। ऐसा होने से यह शरीर भी प्रभु को स्वीकार हो गया। आवागमन के चक्र से मुक्त हो गया। नहीं तो जीव संसार में और पर भी रोता है और जाने पर भी रोता है। यह सब पूर्णी प्रभु की कृपा से ही हो सकता है इस लिए ?

कर कृपा ..... रामजी रामराम श्रीरा

गुरुवार (3.PM) "श्रीराम" 26.8.04

शब्द 97

विसर नाही दातार, 2 अपना नाम देहो 2
गुण गावां दिन रात 2 नानक चाऊ एहो 2

2

सिमरत वेद पुराण पुकारन पोथियां,
नाम बिना सब कूड़, गाली होछियां ॥

3

नाम निधान आधार, भक्तां मनं बसे।
जन्म मरण मोह दुख, साधू सगं नसे॥

4

मोह बाध अहंकार सरपर* रुनिआ। *0/0 सेंद परवेंद
सुख न पाइन मूल, नाम विहुनिआ॥

5

मेरी मेरी धार, बधंन बधिंआ।
नरक सुरग अवतार माइआ धधिंआ॥

6

सोधत सोधत सोध, तत विचारिआ।
नाम बिना सुख नाही, सरपर* हारिआ *0/0

7

आवंहि जावंहि अनेक, मर मर जन्मते।
बिन बूझे सब वाद, जोनि भरमते॥

8

जिन को भये दयाल, साधू संग भइआ।
अमृत हरि का नाम, तिन जनी जप लइआ॥

9

खोजहु कोट असंख्य, बहुत अनन्त के।
जिस बुझाए आप नेड़ा तिस रहे॥

10

बिसर नाही दातार, अपना नाम देहो।
गुण गावां दिन रात, नानक चाउ इहो॥

11

कर कृपा प्रभु दीनदयाला, तेरी ओट पूरण गोपाला

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरण गोपाला
26.8.04 (3 P.M.)
गुरुवार

श्रीराम

26.8.04

शब्द 98 (अरदास)

माई मैं किह विधि लावऊं गुसाईं ॥

2

महा मोह अज्ञान तिमिर, सो मन रहिओ उरझाई

सगल जन्म भ्रम ही भ्रम खोइओ,

नह स्थिर मति पाई ॥ माई मैं - - - - - -

3

विविआ सम्त रहिओ, निशिवासुर,

नह छूटे अधमाई ॥

साध संग कबहु नही कीन्हा,

नह कीरत प्रभु गाई ॥ माई मैं - - - -

4

जन नानक मै नाही को गुण,

राखि लेहो शरणाई ॥ माई मैं - - - - - -

राम जी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला

तेरी ओट पूरी गोपाला

26.8.04 (6.P.M)

Friday शुक्रवार

जय सन्तोषी माँ

श्रीराम

161

26.8.04

माई, अपने सतगुरु को सम्बोधित करते हुए अरदास करो, हे मेरे राम जी (सतगुरु) मैं अपने प्यारे गोसाईं जी प्यारे प्रभु के दर्शन कैसे पाऊं? क्योंकि मेरा मन तो इस अज्ञानता के अन्धकार में मोह में फंसा हुआ है। कई जन्म हो गये मुझे, अभी तक मेरी बुद्धि स्थिर नहीं हुई। इन विषय विकारों में आसक्ति के कारण, रात दिन मैंने व्यर्थ गवां दिया और मैं पतित अधम होता गया मैंने कभी सतगुरु का सन्तों का संग नहीं किया और न ही कीर्तन भजन किया। हे प्रभो! मेरे में तो कोई गुण नहीं, आप मुझे अपनी शरण में ले लो।

जैसा श्री कृष्ण जी फरमाते हैं, नामसी लोगों को मैं बार २ असुर योनियों में डालता हूं। वहां वह बड़े दुःखी होते हैं। परन्तु बुरे कर्मों का फल तो अवश्य भोगना ही पड़ेगा। ईश्वर न लेता है किसी का पुण्य अथवा पाप ही इस लिए हमें नित्य प्रति विशेष कृपा मांगनी चाहिए, कि हमारी बुद्धियों को प्रभु अपनी ओर प्रेरित करें।

राम जी राम राम श्रीराम

30.8.04

शब्द 99

तुझ बिन कवन हमारा, मेरे प्रीतम प्राणा-
मेरे प्रीतम प्राण आधारा, मेरे प्रीतम - - - - - - 2 आधारा 2

2

अंतर की बिधि तुम ही जानी, तुम ही सजन सुहेले
सर्व सुखा मै तुझ ते पाये, मेरे ठाकुर अगह अतोले

3

वरन न साकऊ तुम्हरे रंगा, गुण निधान सुख दाते
अगम अगोचर प्रभु अबिनाशी, पूरे गुरु ते जाते
पूरे गुरु ते जाते 2 - - - - -

4

भ्रम भऊ काट किये निहकेवल, जन ते हऊमै मारी
जन ते हऊमै मारी 2 - - - -
जन्म मरण की चूकी सहसा, साध संगत दरसारी
साध संगत दरसारी 2 - - - -

5

चरण पखार करऊ गुरु सेवा, वारि जाऊ लख बरिआ
वारि जाऊ लख बारिआ 2 - - - -
जह प्रसाद एह भवजल तरिआ, जन नानक पिअ संगि
जन नानक पिय संग मिलिआ 2 - - - - - मिलिआ

30.8.04

शब्द 99 व्याख्या

सतगुरु हमेशा हमें अपने प्रियतम प्रभु प्यारे के साथ सम्बन्ध जोड़ते हुए समझाते हैं। हमारा संसार में रामजी के सिवा और कौन है, जो हमारे से निष्काम प्रेम करते हैं, और सिखाते हैं कि सदा निष्काम भक्ति करो। वे यही तो मेरे प्राणों के आधार हैं। वह पूर्ण अन्तरयामी हैं वही हमारे साजन हैं, सदा सुख देने वाले हैं। हम उन की गति विधि नहीं जान सकते। क्योंकि वह तो गुणों के भंडार हैं, अगम्य हैं। अगोचर हैं, परन्तु पूर्ण गुरु उन से मिला देते हैं। पूर्ण सतगुरु अपने शिष्य के मोह भ्रम और डर दूर कर देते हैं। वह हमारी अहंता अहंकार सब दूर कर देते हैं। अपना सतसंग, अपनी सगत में राख कर, जन्म मरण के बन्धन से भी मुक्त कर देते हैं। इस लिए दिल चाहता है, उन के चरण धो धो कर पीऊं। उन पर कुरबान जाऊं। जिन्होंने अपनी कृपा से मुझे संसार में रहते हुए भी रस से अलग कर दिया। अपने साथ मिला लिया।

रामजी राम राम श्रीराम

30. 8. 04

शब्द 100

मोरे आये हैं, आये हैं. मोरे आये हैं,
पावन पवित्र मित्र आज मोरे आये हैं ॥

2. मोरे आये हैं - -

सुपन चरित्र चित्त, वानक बने विचित्र,
पावन पवित्र मित्र, आज मोरे आये हैं ॥

3 मोरे आये - - - -

परम दयाल लाल, लोचन विशाल,
मुख वचन रसाल, मुख मधुर प्यारे हैं ॥

4 मोरे आये - - - -

सोभत सिंघासन विलासन दै अंकमाल,
प्रेम रस विसम हैं, सहज समाये हैं ॥

5 मोरे आये - -

चात्रिक शब्द सुन, अखियां उघर गईं
भई जल मीन गति, विरह जलाये हैं

राम जी राम राम
श्री राम
30. 8. 04 (5.20 PM) सोमवार

101

शब्द

कृपानिधि बसो हृदय हरि नीत,
तैसी बुद्धि करो परगासा, लागे प्रभ सां प्रीत॥

2.

दास तुम्हारे की पावऊ धूरा,
मस्तक लै लै लावहो,
महा पतित ते होय पुनीता,
हरि कीरतन गुरा गावहो॥

3.

आज्ञा तुम्हरी मीठी लागी, किओ तुम्हारो भावे,
जो तूं दे नह इह तृपते, आन न कतहुं धावे॥

4

सद ही निकट जानो प्रभ स्वामी,
सगल रेरा होय रहिए,
साधू संग होय परापत, तां प्रभु अपना लहिए॥

5

सदा सदा हम दोहरे तुम्हरे, तूं प्रभु हमरो मीरा,
नानक बारक तुम मात पिता, मुख नाम तुम्हारो।
(स्वीरा दुध)॥

रामजी राम राम
श्री राम

शब्द 102

यह शब्द बोलने से, सारे कार्यों में सफलता मिलती है। विशेष कर विवाह आदि में अगर अपने सतगुरु के साथ पढ़ा जाय तो विशेष रूप से शुभ होता है। यह अरदास है। प्रार्थना है।

शब्द 102

सतगुरु अपने सुनी अरदास, कारज आया सगला रास,
मन तन अन्तर प्रभु ध्याया, गुरु पूरे डर सगल चुकाइआ॥

2

सब ते वड समरथ गुरुदेव, सभ सुख पाये तिस की सेव
जां का कीआ सब किछ होय, तिस का अमर न मेटे कोय

3

पारब्रह्म परमेश्वर अनूप, सफल मूरत गुरु तिस का रूप,
जां के अन्तर वसै हरि नाम, जो जो पेखे सो ब्रह्म ज्ञान॥

4

नीसि बासरे जां के मन प्रगास, तिस जन के पारब्रह्म का निवास
तिस गुरु को सद करी नमस्कार, तिस गुरु को जाऊं सद बलिहार
सतगुरु के चरण धोय धोय पीवां, गुरु नानक जपि सद जीवां

"राम जी राम राम" "श्रीराम"

व्याख्या शब्द 102

कोई भी कार्य करने से पूर्व अगर हम अपने सतगुरु के आगे प्रार्थना करते है, तो अवश्य ही स्वीकार हो जाती है। हमारे कार्य में सफलता प्राप्त होती है। जब हम मन अन्तर में गुरु का मन्त्र सदा जाप करते रहते हैं तो हमारे सारे डर खत्म हो जाते हैं। हमारे मन में पूर्ण विश्वास हो कि प्रभु हमारे सर्व समर्थ हैं। उन की सेवा मिलने से, करने से सब प्रकार के सुख प्राप्त होगें। उन्ही की कृपा से यह सब कुछ हो रहा है, उन की आज्ञा कोई नही मिटा सकता अर्थात उन का हुक्म अवश्य मानना है। अपने सतगुरु को पूर्ण पारब्रह्म परमेश्वर ही, देखना है। मानना है। क्योंकि वह ऐसा नाम हमारे रोम रोम में बसा देते हैं कि हमारी सारी द्वैत बुद्धि ही खत्म कर देते हैं। हमें सब में, राम ही राम अन्तर में बाहर में। वही दिखने लग जाते हैं। जिस के मन में 20/20 विश्वास है सतगुरु के वचनों का। उस में पारब्रह्म परमेश्वर का निवास अवश्य हो जाता है। महाराज फरमाते हैं ऐसे पूर्ण सतगुरु के चरण धो धो कर पीऊ जिन्होने अन्तर में नाम जप सहज रूप में चला दिया

राम जी राम राम - श्रीराम

8.9.04

शब्द 103

मेरे राम राय सतां टेक तुम्हारी। मेरे राम राय, ---
जो तुध भावे सेई परवाणा। मन तन तूं है आधारी ॥

2 मेरे राम --
तेरा भाणा तूं ही मनाये। जिस नूं होय दयाला,
सई भगत जो तुध भावे। तूं सर्व जीआ प्रतिपाला ॥

3 मेरे राम ----
तूं दयाल कृपाल कृपानिधि मनसा पूरण हारा,
भगत तेरे सन प्रानपति प्रीतम। तूं भगतन का प्यारा ॥

4 मेरे राम ---
तूं अथाह अपार अति ऊंचा। कोई अवर न तेरी भांते,
एह अरदास हमारी स्वामी। विसर नाही सुख दाते ॥

5
दिन रैण सास सास गुण गावां। जे स्वामी तुध भावां,
नाम तेरा सुख नानक मांगे। आठ पहर गुण गावां ॥

साहिब तुठे पावां

मेरे राम राय ----

रामजी राम राम ॥
श्री राम ॥
कर कृपा प्रभु दीनदयाला,
तेरी ओट पूरण गोपाला ॥
8.9.04 (6 PM)

व्याख्या शब्द 103

जो रामजी को, राजा, महराजा, शहन्शाह समझ कर उन्हें अपना बना लेते हैं, मेरा शब्द केवल अपने प्रभु के लिए ही रखते हैं, प्रयोग करते हैं, वही संत है। जो उन की रज़ा में रहते हैं, जिन्हे मन मे तन में उन्ही का आधार है, वही संत हैं। वह अपने प्रभु से इस प्रकार अनुनय विनय करते रहते हैं। हे प्रभो आप का हुक्म तो वही मान सकता है जिस पर आप पूरी कृपा करते हो। वही भगत वास्तव मे है, जो आप को भा जाता है, प्रतिपालना तो आप सारे जीवो की करते हो। आप दयालु हो, कृपालु हो, सब इच्छाए पूरी करने वाले हो, आप को भक्त प्राणो से भी प्यारे हैं क्योंकि भक्तों को भी आप प्राणों से भी प्यारे लगते हो। आप तक पहुंचना बहुत ही कठिन है आप जैसा संसार में न कोई हुआ है, न होगा, बस हमारी यह सविनय प्रार्थना है, आप सुखों के दाता हो, आप हमें न भुला देना हम भी आप के उपकारों को कभी न भूलें। अगर आप हमारे पर प्रसन्न हो तो हमें यह वरदान दीजिए कि हम दिन, रात, हर श्वास में आप का ही सिमरण करें, यही सब से बड़ा पुण्य है हमारे लिए कृपा करना, दया करना मेहर करना मेरे स्वामी जी

रामजी राम राम श्रीराम

104

शब्द

सोई धिआइए जीअड़े, सिर शाहां पातशाह 2,
तिस ही की कर आस मन, जिस का सभस विसाह ॥

2.

सभ सिआणपा छड के गुरू की चरणी पाह 2,
" " " 3 " " " " ॥

मन मेरे सुख सहज सेती जप नाऊ,
आठपहर प्रभ धिआए तूं, गुण गोविन्द नित गाऊ ॥

4

तिस की सरनी पर मना, जिस जेवड अवर न कोय,
जिस सिमरत सुख होय घणा, दुख दरद न मूले होय ॥

5

सदा सदा कर चाकरी, प्रभ साहिब सच्चा सोय,
" " " " " " " " ॥

6

साध संगत होय निरमला, कटिए जम की फास,
सुखदाता भय भंजनो, तिस आगे कर अरदास ॥
मेहर करे जे मेहरवान, तां कारज आवे रास ॥

7

बहुतो बहुत वखाणिए ऊचो ऊचा थांओ,
वरन चिहन नाहीं, कीमत कहि न सकाओ
नानक को प्रभ मया कर, देहो अपना नाऊ

16.9.04

शब्द व्याख्या 104

अपने मन को सदा समझाते रहो। ऐ मेरे भोले मन तूं सदा ध्यान कर अपने प्रभु प्यारे का। जो शाहों का पातशाह है। उन्हीं की मन में आशा राख। जिस का तुझे भरोसा है, आसरा है। संसार की सारी चतुराइयां छोड़ का जो सतगुरु तुझे समझाते हैं वैसा ही कर। ऐ मेरे मन तूं सहज अवस्था में सिमरन कर। निष्कामभाव से, आठ पहर उन्हीं के साथ अन्तर में वार्तालाप कर और उन्हीं का कीरतन भी कर। उन जैसा संसार में न कोई हुआ न होगा। वह बहुत ही बड़े हैं सर्वशक्तिमान हैं उन्हीं की शरण में रहो। उन के सिमरन करने से बहुत ही सुखशुभ होगा। दुख बिल्कुल नहीं होगा। उन्हीं की दिन रात सेवा में लगा रहो। वही तेरे सच्चे मालिक हैं। यह सब सतो की कृपा से सतसंग से होगा। निर्मल हो जायेगा जन्म का भी डर नहीं। वही वास्तविक सुख देने वाले हैं सदा विनम्र प्रार्थना करता रह। उन की कृपा से सारे कार्यों में सफलता मिलेगी। वह सब से ऊपर हैं वाह। कृपा करो अपना नाम दान देदो।

रामजी राम राम

105

शब्द

कभीन घटै - - - - - - - - - (अपने प्यारे गोविन्द से-
प्रीत)

भज (भगत रविदास जी)

1

मेरी प्रीति गोविन्द सिउ जिनि* घटै 2 कभीन

मैं तो मोल महंगी लई, जीअ सटै* 2 *बदले में

2

चित सिमरन करऊ नैन अवलोकनो

श्रवना नाराइन सुजस पूरि राखऊ

मन सु मधुकर करऊ, चरन हृदय धरौ

रसन अमृत राम नाम भाखऊ मेरी प्रीत गोविन्द

3

साध सगंत बिना भाव नहीं उपजै

भाव बिन भगति नहीं होय तेरी

कहै रविदास इक बेनती हरि सिउ

पैज राखो राजा राम मेरी

मेरी प्रीति - - -

राम जी राम राम
श्री राम
"कर कृपा प्रभु दीनदयाल॥"
तेरी ओट पूरन गोपाला॥

17.9.08

शब्द 105 CENTRAL IDEA

सारांश

भगत रविदास जी, अपने सतगुरु जी के आगे प्रार्थना कर रहे है कि हे प्रभो! आप कृपा करना ? मेरा प्रेम आपसे कभी कम न हो। यह प्रेम तो मैंने अपना मन दे कर बदले में लिया है। मेरा चित सदा आपका ही सिमरन करे। यह नैन केवल आपको ही देखें। यह कान आप का सुयश सुनने से कभी तृप्त न हो। मेरा मन आप का भौंरा बना रहे। आप के चरण हर समय मेरे हृदय में ही रहें अर्थात आप का नाम निरन्तर मेरी रसना जीह्वा राम नाम का ही सिमरन करती रहे। यह सिमरन भाव वाला देना और भाव तो केवल साध जनों की, संतो की, सतगुरु की, संगत से ही मिलता है, प्रगट होता है। भाव के बिना भगति नहीं है। हे मेरे राम जी इस संसार में आप मेरी लाज रखना क्योंकि आप तो मेरे शाहों के शहनशाह हो। राजाधिराज हो मेरे सर्वस्व हो। पूरी भक्ति देना जिससे शेष सारी संसार की तमन्नाएं न रहें। कृपा से ही मिलती है

17.9.04

शब्द 106 (सतगुरु का दर्शन)

गुरु जी के दरसन को बलि जांऊ 2
जय जय जीवां, सतगुरु नाऊं 2 गुरु जी ----

2.
पारब्रह्म पूरा गुरुदेव
कर किरपा लांगऊ तेरी सेव गुरु जी ----

3.
चरण कमल हृदय उरधारी
मन तन धन गुरु पूरा आधारी गुरु जी --

4
सफल जन्म होवै परवाणा
गुरु पारब्रह्म निकट कर जान गुरु जी --

5
संत धूरि पाइए वडभागी
नानक गुरु भेटत, हरि सिऊ लिव लागी
*मिलने से

गुरु जी --

रामजी राम राम
गोराम
"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
हरि ओट पूरा गोपाला"

शब्द 106 व्याख्या

जिन जीवों पर पूरी प्रभु की कृपा होती है, वह केवल अपने सतगुरु के, पूरी प्रभु के, दर्शन पर बलिहार जाते है। अपना सर्वस्व अपने प्यारे प्रीतम पर न्योछावर कर देते हैं, वह केवल गुरु जी के द्वारा दिये गये नाम को जपते रहते हैं, अर्थात उन्हें ही याद करते हैं। हर समय यही कृपा मांगते है कि हमें पारब्रह्म पूरी सतगुरु भगवान की सेवा मिले। उन्ही के चरण कमल हृदय में धारण किये रोव, अर्थात उन्ही का नाम मन मे चलता रहे। उन का मन, तन, धन, प्राण, सब कुछ गुरुजी का ही हो जाता है। उन्ही जीवों का जन्म संसार में सफल है वह अपने प्रभु को सदा अपने साथ समझते है, देखते है, जानते है। वही संसार मे भाग्यवान हैं। जिन को नित्य प्रति अपने सतगुरु की चरण धूलि प्राप्त होती है। महाराज फरमाते हैं सतगुरु के मिलने से ही हमें प्रभु की लगन प्राप्त होती है। सच्ची लगन से ही हम अन्तर में अपने प्यारे प्रभु से, राम जी, से एकाकार रहते हैं। संसार हमें बिल्कुल दान नही दे सकता। ऐसी कृपा हो जाये रामजी की

25.9.04

107

शब्द

रसना राम के गुण गाऊ

राम के गुण गाऊ, रसना राम के गुण गाऊ

2

आन स्वाद विसार सगले, भलो नाम सुआऊ

रसना राम --

3

चरण कमल बसाए हृदय, एक सिऊ लिव लाऊ

रसना राम --

4

साध संगत होय निरमल, बहुड़ जोनि न आऊ

रसना राम --

5

जीओ प्रान आधार तेरा, तूँ निधावे धाऊ

रसना राम --

6

सास सास समाले हरि हरि, नानक सद बलि जाऊ

रसना राम --

राम जी राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला

तेरे ओर पुरो गोपाला

25.9.04 (4 P.M)

27.9.04

107

व्याख्या शब्द

अपनी जीह्वा को समझाना है, ऐ मेरी रसना तूँ सदा रामजी के गुण गाया कर। तूँ संसार की बातें क्यों बोल २ कर मन को अशान्त करती है। ज्यादा तूं चुप रहा कर, ज्यादा बोलने वालों से कभी गलत बोल भी बोली जाती हैं, निन्दा चुगली जैसे पाप भी हो जाते हैं। फिर समझाते है ऐ मेरी जीह्वा तूं इतने स्वाद चाहती है यही स्वाद तेरे शरीर को बिमार कर देते है। इसलिए तूँ "कर कृपा" का मन्त्र बोला कर, कि पूर्ण प्रभु की कृपा से तेरी लगन नाम में लग जाये। यह सब तभी होगा जब हमे कोई पूर्ण संत मिल जायें वह अपनी संगत मे हमे रखें कि पहले हम जीवन मुक्त कर दें। फिर आवागमन के चक्र से भी मुक्ति दिला सकते हैं। सतगुरु ही हमारे मन में ऐसी भावना दृढ़ कर सकते हैं कि यह तन, जीवात्मा प्राण। मन बुद्धि चित यह सब मेरे प्रभु के अर्पण कर दो तभी तुम स्थिर हो सकते हो हर श्वास में तुम्हारे अन्दर नाम शब्द की गूंज होगी। ऐसे महापुरुषों पर हम बलिहार जाते हैं। रामजी राम राम श्री राम

27.9.04

108

शब्द

सखी सहेली गरब गहेली, सुणा सह की इक बात
सुहेली

2.

जे मैं वेदन सा किस आखा मेरी माई
हरि बिन जीऊ न रहे, कैसे राखां माई
सखी सहेली

3.

हऊ दोहागण[2] खरी रंवाणी
गया सो जोबन धन बहुताणी
सखी सहेली

4

तूं दाना साहिब[3] सिर मेरा
बिजमत करीं जन बंदा तेरा
सखी --

5

भणत नानक अंदेसा एही
बिन दरशन कैसे[4] रवऊ सनेही
सुणा सह --

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
हरी ओट पूरी गोपाला

1 अहंकारी
2 बहुत दुखी
3 बहुत ऊंचा
4 प्यारे नूं मिलां

27.9.04

108 शब्द व्याख्या

अपनी बुद्धि को सम्बोधित करते हुए, महाराज जी हमें समझा रहे है कि तुम्हारी बुद्धि मे अहंकार बहुत है तू अन्दर की आवाज़ भी सुना कर जो तेरा पति परमात्मा तुझे दिन रात सुना रहा है। जब सतगुरु कृपा करते हैं तो हमारे मन में एक वेदना (पीड़ा) प्रभु के मिलने की उठती है। अपने ठाकुर के बिना रहा नहीं जाता। फिर वह आत्मा दिन रात दुखी होती है अपने प्रियतम ठाकुर के वियोग में, चिन्ता रहती है। समय बीता जा रहा है, यौवन अवस्था बीती जा रही है। बुढ़ापे मे तो पछतावा ही रह जाता है। ऐ मेरे साहब आप कृपा करो सदा मैं आप की सेवा करूं। आप की ही हो जाऊं। बस एक ही चाह है जीवन की अपने ठाकुर प्रभु को कैसे मिलूं, कब मिलूं, कब शान्ति हो। फिर प्रभु कृपा कर देते हैं दर्शन भी देते हैं। आनन्द भी देते हैं।

~~राम जी~~ राम राम

श्री राम

27.9.04 (10 AM)

शब्द 109

सब गोविन्द है, सब गोविन्द है, गोविन्द बिन नहीं कोई
गोविन्द बिन नहीं कोई

2
एक अनेक व्यापक पूरा, जत देखुं तत सोई 2
माया चित्र विचित्र विमोहित, विरला बूझै कोई 2
सब गोविन्द है-

3
सूत एक मणी सत सहस जैसे, ओत पोत प्रभु सोई
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा, जल ते भिन्न नहीं है 2
सब गोविन्द

4
यह परपंच पारब्रह्म की लीला, विचरत आन नहीं है
सब गोविन्द है

5
मिथिआ भरम और सुपन मनोरथ, सत पदारथ जानिआ
सुकृत मनसा गुरु उपदेशी, जागत ही मन मानिआ

6
कहत नामदेव हरि की रचना, हृदय देख विचारी
घट घट अन्तर सर्व निरंतर, केवल एक मुरारी
सब गोविन्द है

राम जी राम राम
श्री राम
28.9.04

2.10.04

शब्द 109 व्याख्या

जब अपने ब्योरे ब्योरे राम जी की, प्रभु की कृपा होती है तभी हमें यह समझ आती है कि सर्वत्र व्यापक राम ही राम है, गोविन्द ही गोविन्द है। यह ब्रह्म ज्ञानी की दृष्टि है। एक प्रभु अनेक हो गये, एको अहम् बहुस्यामी जैसे माला में धागा एक है मणियां मोती कई प्रकार के पिरोये दिये जाते हैं, सागर की बूंदें समुद्र का ही रूप है, ऐसे ही यह जीव भी अपने प्रभु का ही अंश है रूप है, परन्तु माया का प्रभाव इस पर हो जाता है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी
सो मायाबस भयो गोसाईं, बंध्यो कीर मरकट की नाईं
(रामायण)

यह संसार सारा भ्रम है स्वप्न है, सतगुरु राम जी अपनी कृपा से जगा देते हैं तो समझ आ जाती है। ऐसा नामदेव जी को गुरु कृपा से अनुभव हुआ तो कहने लगे सब में मुझे भगवान ही दिखते हैं। हमें भी राम जी की कृपा से सब में राम ही राम दिखने लग गया तो हमने भी कहा "राम जी राम राम" श्रीराम

गांधी जयन्ती 182
2.10.[illegible]4

शब्द 110

चोजी मेरे गोविन्दा, चोजी मेरे प्यारिया
हरि प्रभ मेरा चोजी जीओ,

2.
हरि आपे कान्ह उपाइदा मेरे प्यारिया मेरे गोविन्दा
घ्रआपे गोपी रचोजी जीओ

3
हरि आपे वन घर भोगदा मेरे गोविन्दा
आपे रसिया भोगी जीओ

4
हरि सुजाता न भुलै मेरे गोविन्दा
आपे सतगुरु जोगी जीओ

भेखारी ते राजा करावे, राजा ते भिखारी
कीड़ा करे पातशाही, लश्कर करे स्वाहा
मोर न राखे दूजा कोई सर्व जीआ का राजा सोई

राम जी राम राम
श्री राम

2.10.04

व्याख्या शब्द 110

मेरे गोविन्द को मेरे प्यारे प्यारे राम जी के खेल बड़े निराले हैं। वह लीला करते हैं। द्वापर युग मे वह कृष्ण बन के आये और अपने देवी देवताओं के साथ आये वही राम बन के आये देवी देवताओं को साथ लाये बन्दरों के रूप में कृष्ण जी ग्वालबालों के साथ लीला करते थे कलयुग में सतगुरु रूप में प्रगट है। यही समझाते रहते हैं कि घट घट में मेरा प्यारा बस रहा है। सब से प्रेम करो इर्षा द्वेष आदि दुर्गुणों को मन मे न आने दो केवल अपने प्रभु को अन्दर देखो। सतगुरु हर समय हमे अपने प्यारे प्रभु से मेल करवाते रहते हैं माया मे रह कर के भी हमे मुक्त कर देते हैं। हमें पूर्ण परमात्मा का भेद बताते हैं? अहंकार न आने पाये क्योंकि एक पल भी भिखारी राजा हो सकता है और राजा भिखारी भी बना देते हैं। हम संसारी जीव माया के कीड़े हैं परन्तु अपने प्यारे राम जी की दया से हमारी तृष्णाओं को समाप्त कर के हमे शहनशाह कर देते हैं

"जिस को कछु न चाहिए सोई शहनशाह"

उस के सिवा न कोई मार सकता है न कोई रक्षा करता है

राम जी राम राम

2.10.04

शब्द 111

सभै घट राम बोलै, रामा बोलै
रामा बिन को बोलै रे 2

2

एकल माटी कुंजर चींटी
भाजन है बहु नाना रे
स्वै असथावर जांम कीट पतंगम
घट घट राम समाना रे सभै घट राम --

3

एकल चिंता राव अनन्ता
~~और तजहु सब आसा रे~~
पुरावै नामा भये निहकामा
को ठाकुर को दासा रे सभै घट राम --

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरनी गोपाला
2.10.04 (3.20 P.M)

2.10.04

व्याख्या शब्द 111

"सब घट मे वह रम रहा, विरला बूझे कोय
सोई बूझे राम को, जो राम सनेही होय"

संसार में सब जगह राम ही राम है। ऐसा अनुभव तो उसी को होता है जो सतगुरु रामजी की कृपा से राम में ही रमण करता है। उसे हाथी मे चींटी में कीड़े मे पतंगे में वही नजर आता है। यह सब तो वर्तन है। इन मे ज्योति मेरे प्यारे राम जी की है। इस लिए वह बोलता है (रामसनेही) राम जी राम राम। नामदेव जी भी यही फरमा रहे हैं एक की चिंता करो। एक पर आशा रखो। सब में अपने ठाकुर के दर्शन करते २ सब को हाथ जोड़ कर प्रणाम करो। सियाराममय सब जग जानी
करहु प्रणाम जोरि जुग पानी (रामायण)

ऐसी कृपा अगर हो जाय तो, जीवन आनन्द मय हो जाय। ठाकुर भी आप है दास भी आप है। सब द्वैत का पर्दा उठ जाय तो परमानन्द स्वरूप हो जाय कृपा चाहिए।

रामजी राम राम
श्रीराम
2.10.04 (3.30 P.M)

2.10.04.

महला १ I शब्द 112

सो धन वावर नाम हृदय हमारे
जिस तूँ देहि तिसै निसतारे 2
एह धन सर्व2 रहया भरपूर
मनमुख फिरहि से जाराहि दूर सो धन --

2
न एह धन जलै, न तसकर लै जाये
न एह धन डूबै, न इस धन को मिलै सजाए
इस धन की देखो वडआई
सहजे मोटे अनदिन जाई सो धन --

3
इक बात अनूप सुनो नर भाई
इस धन भी बिन कहो किन्हे परम गत पाई

4
भगत नानक अकथ की कथा सुणावै
सतगुरु मिलै तां एह धन पावै

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला 2.10.04 (3.45 P.M.)

112

व्याख्या शब्द

यह नाम रूपी सच्चा धन हर दम हमारे अन्दर है परन्तु हर एक को इस का पता नहीं feel नहीं होता जिस पर सतगुरु कृपा करते हैं, उसे पहले गुरुमुख बनाते हैं, उस अपने शिष्य को नाम दे कर, उस की तवज्जो समेट कर प्रभु की ओर कर देते हैं, फिर शिष्य की तृष्णाएं, वासनाएं सब समाप्त हो जाती हैं। वह संसार में रहते हुए अपने आप को मुक्त समझता है। यह नामरूपी धन को न आग जला सकती है न चोर ले सकता है, न जल डुबा सकता है। इस सच्चे नाम धन की इतनी महिमा है, कि सहज अवस्था हो जाती है शिष्य मस्त रहता है, इस नाम धन से परमगति प्राप्त होती है। महाराज फरमाते हैं इस धन की इतनी महिमा है कि यह पूर्ण परमात्मा से मिला देता है। परन्तु रोजे ब सतगुरु मिले तो यह धन स्थिर रहता है नहीं तो संसारी माया इस को दूर भी कर देती है। इस के लिए पूर्ण प्रभु की कृपा चाहिए, इसी लिए हम कर कृपा का मन्त्र जाप करते हैं। राधास्वामी राधास्वामी

3.10.04

महला १ शब्द 113 (गुरु नानक देव जी)

गुरु तार तारण हारिआ 2
देहु भगति पूरी अविनाशी, हउ तुम को बलिहारिआ
गुरु तार तारण.

हम डोलत बेड़ी 2 कंप भरी है,
पवण लगै मत जाई ॥
सन्मुख सिद्ध भेटण को आये,
निहचउ देहि वडाई ॥
गुरु तार तारण

3
सिद्ध साधक जोगी अरु जंगम, (सैंते योगी)
एक सिद्ध जिन ध्याया ॥ *पूरी परमात्मा
परसत पैर सिझंते ते स्वामी, *तर जाते हैं
आवर जिन को आइआ ॥ *मिलिआ
गुरु तार ---

4
जप तप संयम करम न जाणा,
नाम जपी प्रभ तेरा ।
गुरु परमेश्वर नानक भेटिओ,
साचे शब्द नबेरा ॥

रामजी राम राम
श्रीराम 3.10.04 (4 P.M) Sunday

3.10.04

महला ? शब्द व्याख्या (गुरुनानक देव जी)

हमें सब को मिल कर सतगुरु जी के आगे वेनतिआ करनी है। हे सतगुरु केवल आप हमें इस भवसागर से पार कर सकते हो। अपनी पूर्ण कृपा से मुक्ति दो। हमारी यह शरीर रूपी नौका तो इस संसार के विकारो मे डूबी हो रही है। हमारे सन्मुख पूर्ण भगवान है हो रोज मिलते है पर हम उन्हे पहचान नही सकते वह हमे रोज बताते है जिन्होने २ नाम से प्रीति लगाई पूर्ण प्रभु का प्रेम लिया। वह सिद्ध साधक बन गये। वह अपने सतगुरु के चरणा स्पर्श कर के सच्चा धन। प्रेम शान्ति सन्तोष दया धर्म प्राप्त कर लेते है और हर समय निमाणो बने रहते है। ऐसी नम्रता से प्रार्थना करते है हे प्रभो मुझे तो जप तप संयम कुछ नही आता बस मुझे तो आप अच्छे लगते है। महाराज फरमाते है सतगुरु पूर्ण साक्षात परमेश्वर है वह मुझे मिल गये है और उन का दिया हुआ शब्द ने ही मेरा, इस माया से छुटकारा दिला दिया है। कृपा से

राम जी राम राम श्रीराम

3.10.04

महला 1 शब्द 114 गुरु नानक देव जी

गली असी चंगिआ, आचारी बुरीआह
मनहु कुसुधा कालीआ, बाहर चिटवीआह
गली —

रीसां करे तिनाडिआ, जे सेवहि दर खडिआ
नाले खसमे रतिआ, मारो सुधरतिआं
गली —

होदे तारा निताराआं, रहहि निमाणीआं
नानक जन्म सकारथ, जे तिन के संग
मिलिहां

Meaning
1 करणी करके
2 खोटिआं
3 सफला

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरा गोपाला
3.10.04 (6 P.M)

4.10.04

महला 1 व्याख्या शब्द 14

संसार में प्रत्येक जीव अपने आप को अच्छा ही मानता है। परन्तु सब में अवगुण है। वह हमेशा दूसरे के अवगुण देखता है। हमें सतगुरु समझाते हैं, अपने पूर्ण प्रभु के सन्मुख ऐसे प्रार्थना करनी चाहिए, हे मेरे राम जी (सतगुरु) हम ऊपर से बातों से तो अच्छे हैं परन्तु हमारा मन मैला है। हमारी करनी, कर्म अच्छे नहीं है। इसी लिए दुखी भी हो जाते हैं। जब हम महापुरुषों को आनन्दमय, शोभामय देखते हैं तो हमें भी उन जैसा बनने की चाहना होती है। जो आत्माएं परमात्मा में लीन है, जीते जी, उन जैसा बनने की बार २ चाहना होती है। वह सतगुरु महापुरुषों की क्या निशानियां है। वह सब कुछ होते हुए भी अपने आप को कुछ नहीं समझते शाहों के शहनशाह हैं, पर नम्रता से भरपूर हैं। महाराज फरमा रहे हैं। जो जो उन ऐसे सतगुरु संत महापुरुषों का संग प्राप्त कर लेते है उन्हीं का जन्म सफल है। हे प्रभो कृपा करना ऐसा संग हमें भी निरन्तर मिलता रहे। राम जी राम राम जी राम

4.10.04

महला 1 शब्द 115 सतगुरु नानक देवजी

मेरे साहिबा, कउरा जीरो गुरा तेरे 2

कहे न जानी अवगुरा मेरे मेरे साहिबा ---

2

कत की माई, बाप कत केरा, किउ आवहु हम आये

अगनि बिन जल भीतर निपजे, कहे कम उपाए 1 कहते

3 मेरे साहिबा -

केते रूख बिरख हम चीहे, कत पसु उपाए 2 देखे

केते नाग कुली में आये, केते पाव उडाए 3 नागों दे कुला

4 मेरे साहिबा -

हट पटण बिज मंदर गढ़ मंडप, कर चोरी घर आवे 4 पक्के ठ शहर

आगो देखे पिछो देखे, तुझ ते कहां छुपावे

5 मेरे साहिबा -

तट तीरथ नव खंड हम देखे, हट पटण बाजारा 6 किनारा

लै के तकड़ी तोलण लागा, घट ही मे वणजारा

6 मेरे

जेते समुद सागर नीर भरिआ, तेते अवगुण हमारे

दया करो किछ मेहर उपावहु, डुबदे पथर तारे

7

जीआ अगनि न रावर तपै, भीतर कौ कातै 7 छुरी

प्रणवत नानक हुकम पछाणो, सुख होवै दिन राती

6.10.04

महला 1 शब्द 115 गुरुनानकदेव जी

अपने पूर्ण प्रभु से सम्बन्ध बनाते हुए, गुरु साहब फरमाते हैं, हे प्रभो! आप के गुण कौन जान सकता है। आप में तो गुण ही गुण हैं और मेरे में तो बहुत ही गलतियां हैं। जैसे कहा जाता है कि मनुष्य तो गलतियों का पुतला है

To err is human to forgive Divine

मुझे कुछ भी पता नहीं, कौन मेरी माता? कौन पिता? कहां से मैं आया? अंदर मां के पेट में पिता के वीर्य से मां की अग्नि से एक पिंड बन गया उसमें आपने प्राण डाल दिये। मैं क्यों संसार में आया? (यह तो जिसको पूर्ण सतगुरु रामजी मिल जाते हैं उन्हें ही पता चलता है) पहले मैंने कौन सा शरीर धारण किया, पशु पक्षी पेड़ पौधे नाग, सर्प 84 लाख योनियां भुगतीं। अभी मनुष्य जन्म मिला तो भी आपने लोभ रूपी कुत्ता माया का आ गया, कहीं चोरी कर ली, कहीं गन्दे काम कर दिये, आप को हाजिर नाजिर नहीं समझा, पैसा ज्यादा इकट्ठा करने के तीर्थों में दौड़ने लगा। परन्तु यह तो सतगुरु रामजी ने बताया कि तेरे अन्दर ही सब कुछ है तू मन को एकाग्र करके तब मैंने यह समझा कि मेरे में तो बहुत ही अवगुण हैं जिनमें मैं दिन रात दुखी रहता हूं। मुझे रामजी मजबूरियां कर कृपा करो

6.10.04

महला 1 शब्द 116 गुरु नानक देव जी

सब अवगुण मै गुण नही कोई। किऊ कर कंत मिलावा होई

2

न मै रूप न बंके नैणा न कुल दंग न मीठ बैणा।
सहज सिंगार कामणि कर आवे, तां सोहागणि जां कंतै भावे

3

न तिस रूप न रेखिआ काई, अन्त न सहिनि सिआणिआ जाई
सुरति मत नाही चतुराई, कर किरपा प्रभु लाहो पाई

4

रवणी सिआणी कंत न भाणी, माया लागी भरम भुलाणी
हऊमै जाय तो कंत समाई, तऊ कामणि थीए नवनिधि पाई

5

अनिक जन्म विछुरत दुख पाया, कर गहि लेहु प्रीतम प्रभ राया
भणत नानक शहो है भी होसी, जै भावे प्यारा तैं रावेसी

राम जी राम राम
श्री राम दीनदयाला
कर कृपा प्रभु दीनदयाला "
तेरी आस पूरी गोपाला
6.9.04 (4.10 PM)
बुधवार

6.10.04

महला १ शब्द 116 गुरुनानक देवजी

महाराज जी, हमें समझा रहे हैं कि तुम ऐसे अपने प्रभु सोसतगुरु से, प्रार्थना करो। हे प्रभो मेरे मे तो सारे अवगुण ही हैं मैं आप को कैसे मिलूं। न मेरी वह आंखे हैं जो आप के दर्शन कर सके क्योंकि इन मे तो संसार के रंगारंग हैं न मेरे मे पूरी तरह मिठास है। अभी मेरे मे सहज-अवस्था मे नाम भी नही चलता। आप को तो वही आत्मा प्राप्त कर सकती है जो पूरी कृपा से आप जैसे गुणों से भरपूर हो। हे प्रभो आप मुझे अपने चरणों मे रखो, मेरी तो सुरति भी बाहर ही भटक रही है, और मैं सारा समय संसार की चतुराइयों मे खो देती हूं। इसलिए मुझे आप के सुन्दर रूप के दर्शन नही होते। अपने आप को मैं बहुत चतुर समझती हूं। परन्तु सतगुरु ने मुझे जगाया, समझाया, कि तुम माया मे लगी हुई हो। भ्रम है यह सारा संसार। तू तो ब्रह्मस्वरूप है। माया का पर्दा वह अपनी कृपा से परे कर देते हैं। तब मेरे अनेकों जन्मों के दुख दूर हो जाते हैं। जब पूरी प्रभु मेरी भक्ति को स्वीकार कर लेते हैं। फिर यह आत्मा परमात्मा मे रमण करती है।

6.10.04

महला १ शब्द 117 सतगुरु नानक देव जी

कर्ता तूँ मैं मारा निमारो, कर्ता तूं मै मारा निमारो

2

मान महत नाम धन पल्ले, साचे शब्द समारो

3

हउ पापी पतित परम पांवडी, तूं निर्मल निरंकारी कर्ता - - - -

अमृत चाव परम रस रोले, ठाकुर शरणा तुम्हारी

4

तूँ पूरा हम ऊरे होवै, तूं गउरा हम हउरै कर्ता - -

तुम ही मन राते, अहनिसि परभाते, हरि रसना जपमहुरै

5

तुम साचे हम तुम ही राते, शब्द भेद पुनि साचे

अहनिसि नाम रते से सूचे, मर जन्मे से काचे

6

अवर न दीसे किस सालाही, तिसहि शरीक न कोई

पुरावत नानक दासन दासा, गुरु मति जानिआ सोई

रामजी राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला

तेरी ओट पूरी गोपाला

5.9.04 (5 P.M)

बुधवार

7.10.04.

महला १ शब्द व्याख्या 117 सतगुरु नानक देवजी

कर्ता धर्ता भर्ता तो केवल एक पारब्रह्म परमेश्वर है, मुझे तो तुम्हारा ही मान है, संसार मे कोई मान नही देता, सब सेवा चाहते हैं, मान चाहते हैं। जन से मैने सच्चे प्रभु रामजी की शरण मे ली है, मुझे सच्चे धन, की शब्द सुरति जुड़ने का आनन्द मिला है। इससे पहले तो मै बहुत ही पापी पाखंडी थी और प्रभुजी निर्मल निरकार साकार सब कुछ है। अब तो नाम रूपी अमृत का रस निरंतर आता रहता है। मेरे प्रभु तो पूर्ण है ऊचें से भी ऊचे हैं और हम तो सदा नीच कर्म ही करते हैं। अब तो मै अपने सतगुरु की आज्ञा, कृपा से रात प्रभात दिन उन्ही मे ही लीन हो गई हूँ। मेरे रामजी सत्य है उन्होने मेरे अन्दर शब्द चला दिया है। दिन रात नाम मे ही रहा है। जो मनमुख है वह तो जल्दी ही मर जाते हैं। फिर जन्म लेते हैं। अब मेरी गुरुमत हो गई है। अब तो मुझे अपने प्रभु के सिवा कुछ नही सूझता, अब तो मेरी अहमता ममता सब जल दी है, मै तो कुछ भी नही हू दासो की दास हूं ऐसी कृपा बनाये रखना।

ॐ शान्ति ॐ शान्ति

7.10.04

महला १ शब्द 118 सतगुरु नानक देवजी

तेरा एक नाम तोरे संसार, मैरा हा आसरा हो आधार

एक सुआन दुइ सुआनी नाल, भलके भउके सदा बेआल

कूड़ा छुरा मुठा मुरदार, धाराक रूप रहा करतार

मै पत की पंदि न करणी की कार

हउ बिगाड़ै रूप महा विकराल

मुख निंदा आवा दिन रात

पर घर जोही नीच समात

काम क्रोध तन वसै चंडाल

धारक रूप रहा करतार

फाही सुरत मलूकी वेस

हउ ठगवाता ठगी वेस देस

रवरा सिआणा बहुता भार

धाराक रूप रहा करतार

(4 ठगी, 5 सुरति ठगण वाली) 3 कसूल 1 कुत्ता (लोभ) 2 कुत्तिया (आशा मनसा) (5 सुरति ठगण वाली) (1 डाके मारने वाला चोर)

8

मै कीता न जाता हरमरवोर
हउ क्या मुहं देसा दुष्ट चोर

9

नानक नीच कहै विचार
प्रागाक रूप रहा करतार

रामजी राम राम
कीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाल।।
तेरी ओट पूरी गोपाला
7.10.04 11 P.M

शब्द व्याख्या 118

हे मेरे परम पिता परमात्मा, आकाश ब्रह्मण्ड के स्वामी, आप का नाम, एक चित्त से, एकाग्र मन से, आप को साक्षात अपने सामने दर्शन करते हुए, ध्यान करने से सब को तार देता है अर्थात उस की वृत्ति को ऊपर कर देता है जो शुद्ध मन से आप को हर समय याद करता है।

यह तो तब हुआ जब मुझे ठौर २ प्रभु रामजी मिल गये
हम तर गये। पहले हमारा भी यही हाल था। लोभ रूपी
कुत्ता और आसा मनसा रूपी कुतिया मेरे मन रूपी गोदाम
को बहुत ही व्यर्थ कर दिया। मेरी हमेशा सुरति लोगों
को ठगने वाली बनी थी। बस जैसे हो सब मेरे घर आ
जाये। मेरे बच्चे अच्छे पलें। ऐसा करते २ मुझे अपनी होश
ही नहीं थी। बस दूसरों की निन्दा, वासना गन्दी,
और, काम क्रोध ने मेरी बुद्धि को खराब कर दिया
था। सारी बुराइयां ही बुराइयां माया ने मेरे में भर दी
यह नहीं किसी ने बताया कि इन सब पापों का
फल तुझे ही भुगतना पड़ेगा। बहुत अपने आप को
सिआड़ा समझा और सोर मार बड़ते ही गये। सतगुरु
ने। राम जी ने आ कर मुझे जगाया। अब भी करु
जा इन बुरे कर्मों से और नाम जप हर समय अर्पन
प्रभु को हाज़िर नाजिर समझ। तब मेरा उद्धार
हो गया मैं परमात्मा से डरने लगा, सारे विकार
छूट गये अब तो आनन्द ही आनन्द है। अहो!
जीवन सफल हो गया। रामजीरामराम

11.10.04

महला १ शब्द 119 सतगुरु नानक देवजी

इक तिल वीसरे, भगति किनेही होय

मन तन शीतल सच सिऊ, साम न विरथा कोय

2.

जे वेला वखत विचारिए, तां कित वेला भगति होय

अनदिन नामे रतियां, सचे सची सोय

इक ---.

3

मेरे मन हरि का नाम धयाए, साची भगति तां थीए

जां हरि वसै मन आए

4 इक --.

सहजे खेती राहिए, सच नाम बीज पाये

खेती जमी अगली, मनुआ रजा सहज सुभाए

5 इक --.

गुरु का शब्द अमृत है जिस पीते तिप जाये

एह मन साचा सच रता, सचे रहया समाय

6 इक --.

आवरा वेखरा बोलणा सचे रहया समाय

बाणी वजे चहजुगी, सचे सच सुणाए

7

हउमै मेरा रह गया, सचे लइया मिलाय

तिन को महल हदूर है, जो सचे रहे लिवलाये

cont

cont (8) शब्द 119

नदरी नाम धिआइए, बिन करमां पाया न जाय
पूरे भाग सतसांत लहै, सतगुरु भेटे जिस आए

अनदिन नामे रतिआ, दुख विचिआ विचों जाय
नानक शब्द मिलावड़ा, नामे नाम समाय

राम जी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला
भावार्थ Central Idea

अगर हम समय ही देखते रहे तो कब भक्ति करेंगे, हमने अपने पूरी प्रभु से यही कृपा याचना करनी है कि आप अपनी कृपा से इस मन की सहज अवस्था कर दो जैसी इस मन की लगन संसार के पदार्थों में है, ऐसी अपनी ओर मोड़ दो, आप की कृपा से सब सम्भव है। ऐसे पूरे संत प्रभु मिलाते रहो जिन का संग मुझे रोज मिले वही मेरे अन्दर के भेद खोल देंगे। समझाते रहेंगे इस संसार में सुख कहीं भी नहीं। अन्तर में जाने से आनन्द मिलेगा। वह अवश्य कृपा करते हैं आनन्द देते हैं।

13.10.04

महला १ शब्द 120 सतगुरु नानक देवजी

करता तूँ मेरा जजमान, तूँ मेरा यजमान कसा ---
इक दखिणा तंह पै मागऊ देहि अपणा नाम
कर्ता ----

2
गुरु परसादि विदिआ विचारे, पढ़ पढ़ पावै मान
आपा मधे आप परगासिआ, पाइआ अमृत नाम
कर्ता ---

3
पंच तसकर धावत राखे, चूका मान अभिमान
दृष्टि विकारी दुरमति भागी, ऐसा ब्रह्म ग्यान
कर्ता ---

4
भजत सत चावल दया कराकि, कर प्रापति पाती
दुध कर्म सतोखु चीऊकर, ऐसा मागऊ दान (पत्तल)
धान

5
हमा धीरज कर कर लकेरी, सहजे बहरा खीर परे
सिफति धर्म का कपड़ा मागऊ, हरि गुण नानक रवत रहै

CENTRAL IDEA

हम अपने सतगुरु यजमान से यही दान मांगे, कि आप हों नाम दान दो, अपनी कृपा दृष्टि दो, जिस से मेरे सारे विकार नष्ट हो जायें मेरी दुर्बुद्धि दुरमत नष्ट हो जाये ब्रह्मज्ञानी बना दो, सत्संग रूपी चावल गेहूं सतोख, दूध धीरज, सहज अवस्था बनी रहे। हरि गुण गाना ही सारा मेरे आप का दिया दान हो। कृपा रखना।

14.10.04

महला १ शब्द १८। सत्तगुरु नानक जी

जलि जाऊ जीवन नाम बिना, हरि हरि जापु जपो जप-माली
गुरमुखि अवैसाद मना 2

1

सतां की रेन साध जन संगति, हरि कीरत तर तरी,
कहा करै बपुरा जम डरपै, गुरमुखि हटुय मुरारी।

2

गुरु उपदेस साच सुखजा को, क्या तिस उपमा कहिए,
लाल जवेहर रत्न पदारथ, खोजत गुरमुख लहिए॥

3

बिचरें
चीनै ज्ञान ध्यान धन साचै, एक शब्द लिव लावै,
निरालंब निरहार, निहकेवल, निरभऊ ताड़ी लावै॥

4 सुरति को ऊपर राखना (प्राणायाम)

बहसरोवर
सायर सपत भरे जल निर्मल, उलटी नाव तरावै,
बाहर जाती ठाक रहावै, गुरमुखि सहज समावै॥

5

सो गिरही सो दास उदासी, जिन गुरमुखि आप पछानिआ
नानक कहै अवर नही दूजा, साच शब्द मन मानिआ॥

रामजी राम राम
श्री राम
14.10.04 (अमावस्या)
(पहला नवरात्र जी)
9.10 A.M

14.10.04

महला 1 व्याख्या शब्द 121 सतगुरु नानक जी सच नाम की महिमा बताते हुए, महाराज फरमा रहे हैं, जो जीवन, जो प्राणी नाम नहीं जपते, वह माया की अग्नि मे जलते रहते हैं, अशान्त रहते हैं क्योंकि उन को संतो की चरण रज, और साधकों को संग नहीं मिलता इसलिए वह इस संसार से तर नहीं सकते परन्तु जिन पर कृपा हो जाती है वह गुरमुख हैं उन्हे हर समय सतसंग मे ही रहना अच्छा लगता है। जिन्हे नित प्रति गुरु उपदेश का सच्चा सुख प्राप्त होता है, उन की महिमा बहुत है वह गुरमुख प्रेम शान्ति आनन्द के रत्न जवैहर प्राप्त करते हैं। जिन पर पूरी प्रभु की विशेष कृपा हो जाती है वह ज्ञान ध्यान शब्द के विचार मे रह कर मग्न हो जाते हैं, उन की समाधि लगी रहती है। वह अपने मन को सुरति को बार २ इस असार संसार से रोक कर अचर भाव हो जाते हैं, फिर उन की सहज अवस्था हो जाती है, उन्हे संसार के यह सारे पदार्थ तुच्छ लगते हैं। जिन्होंने अपने आप को गुरु कृपा द्वारा जान लिया वह चाहे गृहस्थ मे रहें चाहे उदासियां ले ले वास शब्द मे मन मानना चाहिए वह केवल पूरी प्रभु की पूरी कृपा से ही सम्भव है। इस लिए गुरु मन्त्र "कर कृपा प्रभु दीनदयाल तेरी ओट पूरी गोपाला" मन्त्र का सुन जाप जपो। अंदर की नौ निधियां अठारहां सिद्धियां प्राप्त करो।

14.10.04

महला १ शब्द 122 सतगुरुनानकदेवजी

I

भाई रे राम कहहो चित लाये, हरि जसु वखर लै चलो
गहो देवे पतयाय

2 भाई रे -----

वणजु करहो वणजारिओ, वखर लेहो समाल
तैसी वसतु वसाइये जैसी निबहै नाल
ओ गहा सुजान है, लैसी वस्तु समाल भाई ----

3

जिन्हा रासि न सचु है, क्यों तिन्हा सुखु होय
खोटे वणजु वणजिए, मनु तनु खोटा होय
काही काये मृग ज्यों, दुखु घणो नित रोय

4 भाई रे ---

खोटे पोते न पवहि, तिन हरि गुरु दर्शु न होय
खोटे जात न पत है, खोटु न सीझसि कोय
खोटे खोटु कमावणो, आए गया पतु खोय

5 भाई रे --

नानक मनु समझाइए, गुरु के शब्द सलाह,
राम नाम रंगि रतिआ, भार न भरम तिन्हा।
हरि जपु लाहा अगला, निरभउ हरि मनि माहा

रामजी राम राम भाई रे ---

श्रीराम

(आस्था के लिए)
SHOOTING 19.10.04

महला १ 122 शब्द व्याख्या सतगुरु नानकदेवजी अपने मन (भाई को) नित्य प्रति समझाओ, ऐ मेरे मन हर समय तूं राम नाम के ध्यान में रह, जो तेरे साथ जाने वाला सच्चा धन है। आगे शाहों के शहंशाह बहुत दुख को फल शान्ति प्रेम आनन्द देगें क्योंकि वह तो न्याय करी शाह हैं। वहीं अन्दर से प्रेरणा देते रहते हैं और बताते रहते हैं जिन के पास सच्चा धन (नाम धन) नहीं है वह कभी भी सुखी नहीं हो सकते क्योंकि मायावी जितने भी पदार्थ हैं वह सब दुख का ही कारण है। मायावी लोगों को कभी भी आत्म तत्व नहीं प्राप्त हो सकता क्योंकि उन्हें सतगुरु नहीं मिले न जो उन्हें भगवान के साथ एकाकार करवा कर होगा के लिए सुखी कर दें ऐसे लोगों की संसार में बेशक कुछ इज्जत हो जाय परन्तु भगवान के दरबार में उन की कोई भी पूछ नहीं कोई आदर नहीं क्योंकि खोटे कर्मों के द्वारा तो भारी अधोगति प्राप्त होती है। इस लिए बाबा जी अपने मन को सम्बोधन कर रहे हैं ऐ मन तू सदा शब्द (गुरुमन्त्र) के साथ जुड़ "श्रीराम" नाम के रंग में अगर तूं पूरा रच जायेगा तुझे लाभ ही लाभ है और सदा के लिए निर्भय हो जायेगा।

22.10.04

महला 1 शब्द 123 गुरु नानक देवजी

हउ कुरबाणै जाउ मेहरवाना। हउ कुरबाणै जाउ,
हउ कुरबाणै जाउ तिन्हा के लैसा जो तेरा नाउ,
लैन जो तेरा नाउ तिन्हा के हउ(म) सद कुरबाणो जाउ ॥

2

एह तन माया पाहिआ ट्यारे। लीतड़ा लबं रंगार,
मेरे कंत न भावे चोलड़ा ट्यारे। किउ तन सेजै जार ॥

3

काया रंगन जे धीअै ट्यारे पाइए नाम मजीठ (पक्का लाल रंग)
रंगंसा वाला जे रंगे साहब ऐसा रंग न डीठ

4

जिन के चोले रतड़े ट्यारे, कंत तिन्हा के पास
धूड़ तिन्हा की जो मिले जी, कहो नानक की अरदास

5

आपे साजे आपे रंगे, आपे नदर करे,
नानक कामणि कंत भावै, आपे ही रावेए ॥

रामजी राम राम
श्री राम
कर कृपा पूर्ण दीनदयाला
तेरी ओर कृपा गोपाला

22.10.04

महला ? शब्द व्याख्या 123 सतगुरु जी तीन बार महाराज बलिहार जा रहे हैं अपने उन सेवकों पर जो हर समय नाम में रत रहते हैं। क्योंकि, एक नाम जपना, या ध्यान में बैठना, या इन्द्रियों का संयम, मन का कण्ट्रोल, यही कठिन है संसार में और सब आसान है। जब से हम संसार में आये हमारे ऊपर माया आती गई और जवानी में तो माया ज्यादा ही हावी हो गयी, बिल्कुल समय नहीं है अपने प्यारे प्रभु के लिए फिर हम कैसे अन्दर का आनन्द ले सकते हैं? हां अगर हमें पूर्ण राम जी, सतगुरु, मिल जायें, तो, वह नित्य प्रति हमें नाम की महिमा बतला कर हमारे ऊपर पक्का राम रंग चढ़ा सकते हैं। ऐसे सतगुरु जी के चरणों कमलों की रज नित्य प्रति मिल जाये, इस के लिए भी दिल से अरदास प्रार्थना जो धारिया करें। जब हमारी आत्मा रूपी स्त्री अपने परमात्मा रूपी पति से एकाकार हो जाये, फिर तो सारे कष्ट दूर गये, जीवन उज्जवल हो गया, आवागमन का चक्र भी मिट जाँ गया। परमात्मा तत्व में लीन हो गये केवल सतगुरु की कृपा से।

राम जी राम राम श्रीराम

(दशहरा) (विजय दशमी) 210

22.10.04

मंहला 1 शब्द 123 सतगुरु नानक देव जी

बाबा माया साथ न होय, गाना माया साथ न होय

इन माया जग मोहिया, विरला बूझे कोय

2 बाबा माया --

मन को हल बनाओ अमलाजीवन

मन हाली किरसाणी करणी, सरम पानी तन खेत

नाम बीज संतोखं सुहागा, राख गरीबी वेस

3 बाबा ----

विनम रही आपू हथ्थी बना

हलिया हर कर आरजा, सच नाम कर वथ

भाड़ा सौदे रखने के लिए

सुरति सोच कर भांड साल, तिस विच तिस नूं राख

4

(गुरु मुखो)

वणजारिया सिक्ख वणजा कर, लै लाहा मन हस

धर्म पुस्तकें पढ़ना सच्चे आदमी

सुणा शास्त्र सौदागरी, सत घोड़े लै चल

5 बाबा --

खर्च बन चंगा आइआ, मत मन जाणहि कल

निरकार के देस जाय, तां सुख लहें महल

6 बाबा -

लाय चित्त कर चाकरी, मन नाम कर कम

भजमंड (दौड़)

वन नघिआ कर धावणी, तां कोआवे धन

चंगगयी लाली चढ़ जाय

नानक बेखे नदर कर, चढ़े चंगन वन

(3.P.M.)

राम जी राम राम श्री राम 22.10.04

23.10.04

महला 1 शब्द 123 व्याख्या सतगुरु जी

पूर्ण सतगुरु देव जी हमें नित्य प्रति समझाते हैं। आप रोज़ अपने मन को समझाओ ऐ मेरे बाबा (मन) यह संसारी माया अर्थात् संसार का सब कुछ साथ जाने वाला नहीं है। फिर भी यह सारा संसार पागल हुआ फिरता है। एक मिनट भी चैन नहीं है, शान्ति नहीं है कोई निरला ही, जिस पर पूर्ण प्रभु की कृपा हो, वही माया को जान सकता है।

यह त्रिगुणी दैवी घोर माया अगम और अपार है
आता शरण मेरी, वही जाता सहज में पार है। गीता

इसके लिए सतगुरु के पास जाओ वह पार करने का उपाय बता रहे हैं। 1 हमारा जीवन Practical हो, 2 अच्छे कर्म करो, 3 मेहनत करो, 4 नाम जपने का अभ्यास करो, 5 संतोष रखो, गरीबी नम्रता रखो, 7 वैराग्य रखो। आयु बीती जा रही है। 8 सुरति को बार २ प्रभु की ओर लगाओ। 9 गुरुमुखों से मिलते रहो, लाभ होगा, प्रसन्नता मिलेगी। 10 शास्त्र वेद को पढ़ो, सच्चा ज्ञान प्राप्त करो, फिर तो घोर के देश में पहुंच सकता है। 11 प्रभु की, सतगुरु की, निष्काम सेवा करो, चित लगा कर। 12 मन की बुराइयों को रोको जल्दी २। फिर तुम्हें सब कोई धन्य धन्य कहेंगे फिर सतगुरु राम जी भी तुम्हें प्यार भरी दृष्टि देंगे, प्रभु के घोर का पक्का रंग चढ़ जायेगा। जीवन मुक्त हो जायेगा। सब सुख ले ही होगा।

23/10

महला १ शब्द 124 गुरुनानक देव जी

सो धन वाखर नाम हट्टु हमारे, जिसु तूँ देहि तिसै निस्तारे

2

एह धन सर्व रहया भरपूर, मनमुख फिरहि से जाहि दूर

3 सो धन --

न एह धन जलै न तस्कर लैजाये, न डूबै न मिलै सजाय

इस धन की देखो वडआई, सहजे मोटे अनदिन जाई

सो धन --

अनूप

इक बात सुनो नर भाई, इस धन बिन किन्हे परम गति पाई

भणत नानक हरि की कथा सुनाये, सतगुरु मिले तो एह धन पाये

124

व्याख्या शब्द

महाराज जी अपना अनुभव बता रहे हैं, कि यह आध्यात्मिक ज्ञान (नाम धन) हमारे हट्टु में भरपूर है और जिस को यह मिल जाये, वही भव से पार हो जाये। परन्तु यह सच्चा ज्ञान उन्हीं को मिलता है, जो नित्य प्रति अपने सच्चे सतगुरु की सेवा करते हैं और अपना ध्यान सदा ज्ञान की ओर रखते हैं। ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता, इसे चोर नहीं चुरा सकता, न जलता है, न डूबता है। जैसा कि भगवान कृष्ण जी गीता में समझाते हैं

"न मे भक्त प्रणश्यति" ब्रह्मज्ञानी का नाश नहीं होता, शरीर नश्वर है परन्तु ज्ञान आगे कई जन्मों तक चलता है

परन्तु यह केवल पूर्ण सतगुरु रामजी की कृपा से मिलता है।

राम जी राम राम श्रीराम 23.10.04 (4 P.M)

प्रभु की आज्ञा पल्लादिन, आवे बन्द, मुहजीवद
५ बजे वाक आया

23.10.04

महला १ शबद 125 सतगुरु नानक देव जी

मनरे थिर रह मत कत जांही जीओ,
बाहर ढूंढत ढूंढत दुख, पावहि,
घर अमृत, घर मांही जीओ॥ मनरे - -

2

जिस अमृत जलनिधि कारण तुम जग आये
सो अमृत गुरु, पांही जीओ,
छोड़ो बेस भेख चतुराई,
दुविधा एह फल नाही जीओ॥ मनरे - -

3

अवगण छोड़ गुणों को धावहो,
कर अवगण पछतांही जीओ॥
पापों का कीचड़ (बुरा मन)
सरअपसर की सार न जानो,
कीचड़ में इक्ठे
फिर २ कीच वडाई जीओ,॥ मनरे - -

4

अंतर मैल लोभ, नह छूटे, बाहर नावहो काई जीओ,
निरमल नाम जपो, सद गुरुमुख, अंतर की गति तांही जीओ
परहर लोभ, निंदा, कूड़ त्यागो, सच गुरु वचनी फल पांही जीओ
जिऊ भावे तिऊ राखो हरि जीओ, जन नानक शब्द सलाही जीओ

cont

23.10.04

125

भावार्थ शब्द

अपने मन को सदा समझाते रहो ! ऐ मेरे मन, तूं बहुत भोला है। जैसे तुझे संसार वाले कहते हैं तूं मानता है, और जो तुम्हें अपने परमपिता पूर्ण ब्रह्मज्ञानी सतगुरु समझाते हैं, वह नहीं समझता, कभी तीर्थों में भाग रहा है, कभी संसारी पदार्थों की इच्छाएं तुम्हें दुखी कर रही हैं। इस का सब से सरल उपाय है "सतगुरु की कृपा" इस लिए गुरु मन्त्र "कर कृपा प्रभु दीनदयाला तेरी ओर पूर्ण गोपालाँ" के द्वारा यह स्थिर हो सकता है। नाम व सतगुरु की वाणी, उन के उपदेश भी रोज़ सुनने को मिलें। कि तेरे अन्दर ही अमृत है। हर समय अपने को अन्तर की ओर मोड़ो, ज्यादा संसार को न देखो। देखो मगर अनदेखा कर दो

"लोगन सिंऊ मेरा ठाढी बागा
मन मेरा राम नाम सां लागा" गुरुवाणी

यह केवल सतगुरु से ही प्राप्त हो सकता है। संसार में रहते हुए, हर समय सब कर्म करते हुए, अहमता न आने दो। यह सब राम ही राम है, राम जी ही कर्ता धर्ता है मैं तो केवल उन का Instrument हूं

अपने अवगुणों के लिए, नित्य प्रति क्षमा मांगो, मन को बुरे कामों से, बुरी संगत से बचा कर रखो, क्योंकि मन को जन्मों से मैल लगी हुई है। यह ज़्यादा संसार की माया में, बुराइयों की ओर ही जाता है। कृपा मांगो, हमारे में दम्भ, पाखण्ड, न आये, जो हम अन्दर हों वही हम कहें, ऊपर से गुरु बनने से दूर रहें। शो आफ न हो। अन्तर में विकार हो, तो गंगा नहाने से शुद्ध नहीं होगा यह तो केवल संतसंग की गंगा में ही धोये जा सकते हैं।

बस हर समय अपना मन गुरु जी की ओर भगवान की धुन की ओर हो, यही कृपा मांगो। हमें समय ही नहीं है, बाकी बातें सोचने का। निन्दा किस की करनी है, लोग तो केवल हरि चर्चा का, संतसंग का है, महाराज फरमा रहे हैं जैसे मेरे प्रभु मेरे की इच्छा है उसी में ही रहना है। बस पूरी तवज्जो शब्द में ही रहे, अन्दर में चल रहा है। फिर तो न शारीरिक कष्ट लगता है, न पारिवारिक न किसी का मुख दुख मानता है। ऐसी कृपा बनी रहे

राम जी राम राम (श्रीराम)

24.10.04

महला १ शब्द 126 सत्गुरु नानक देव जी

नानक रुना बाबा जाणीऐ,
जे रोवे लाहे लाए त्यारो 2,
संसारी चीजों के लिए
बालवे कारणा, बाबा रोइए,
रोवणा सगल विकारो 2॥

2
गाफ़ल संसारो माया कारणा रोवै,
चंगा मंदा कुछ सूझै नाही,
एह तन ऐवै खोवै॥

3
ऐथै माया संग को जाणी,
कूड़ करो अहंकारो,
नानक रुना बाबा जाणीऐ,
जे रोवे लाहे लाए त्यारो॥

राम जी राम राम
श्री राम
कृपा प्रभु दीनदयाल
हे आर पूरा गोपाला
24.10.04 (5.45 P.M.)

24.10.04

महला १ शब्द 126 सारंग सतगुरु नानक देव जी

प्रभु दे प्यार विच रुआइयां, क्यों न आवियां

यह बाबा जी की वाणी बोलने से हमें भी भगवान के प्रेम के लिए रोना आयेगा। जब प्रभु के प्रेम में रोना शुरू हो गया, तो समझो, प्रभु का आना मन मंदिर में अवश्य ही होगा, मीरा कितनी रोई, कबीर जी कितने रोये। जो आंसू अपने प्यारे पिता की याद में आते हैं उससे भगवान तो प्रसन्न होते ही हैं। साथ मन के विकार स्वयं ही धुल जाते हैं। वह बाबा जी फरमा रहे हैं कि असली रोना तो वही है जो अपने सतगुरु के प्यार में रोया जाय। जब हम संसारी पदार्थों के लिए रोते हैं तो विकार और बढ़ जाते हैं यह सब गाफिल हैं, बेसमझ हैं, यह संसार के लिए रो रो कर, अपने शरीर का, मन का सत्यानाश कर लेते हैं। यह माया तो जाने वाली है, इस का क्या अहंकार है। वास्तविक रोना मांगो। कृपा मांगो हे प्रभो! आप कृपा करो कि हम केवल अपने प्रभु के प्यार में रोयें

राम जी राम राम (श्रीराम

27.10.04

महला 1 शब्द 127 सतगुरु नानक देव जी

प्रेम के कान लगो तन भीतर, वैद्य कि जानो कारी जीओ
अहनिसि जागे नींद न सोवे, सो जानो जिस वेदन होवै

2 प्रेम के ---
जिस नूं साचा सिफति लाये, गुरु मुख विरला किसे वीचार
अमृत की सार सोई जानो, जो अमृत का व्यापारी जीओ

3 प्रेम के --
पिर सेती धन प्रेम रचाए, गुरु के शब्द तथा चित लाये
सहज सेती धन खरी सुहेली, तृष्णा तिआग निवारी जीओ

सगंम 4 प्रेम की --
सहंसा तोड़ भरम चुकाए, सहजे सिफती धनुष चढ़ाए
गुरु के शब्द मेरे मन मारे, सुन्दरी जोग धारी जीओ

5 प्रेम के, --
हऊमै जालिआ मनहु मेरा विसोर, जमपुर वजे खड़ा करारे
अनके कहिए नाम न मिलई, तू सहु जीअड़े मारी जीओ

6 प्रेम के
माया ममता पवै विआली, जमपुर फासहिगा जम जाली
हेत के बन्धन तोड़ न सकै, तो जम करे खवारी जीओ

7
न हऊं करता न मै कीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ
जिस तूं देहि तिसे क्या चारा, नानक शरणा तुम्हारी जीओ

27.10.04

शब्द व्याख्या 127

जिसको सच्चा प्रभु का प्रेम लग जाता है, उस की दवा वैद्य नहीं जान सकते, उसे तो चैन नहीं आता। सारी रात अपने प्रभु के प्रेम में जागता है, रोता है। परन्तु यह किसी विरले को ही प्राप्त होता है इस अमृत के आनन्द को तो वही जान सकता है, जिस पर पूर्ण प्रभु की कृपा हो जाये। आत्मा रूपी स्त्री अपने प्रियतम पूर्ण प्रभु के साथ, गुरु के शब्द द्वारा, रमण करती है। जब सहज अवस्था प्राप्त हो जाती है तो सांसारिक तृष्णा अपने आप सारी समाप्त हो जाती हैं, सारे संशय खत्म हो जाते हैं। सहज अवस्था, अन्तर में नाम चलने से आत्मा सुन्दरी का प्रभु पीर से योग हो जाता है। अहमंता ममता सारी कट जाती है, स्वर्ग का द्वार खुल जाता है। यम नहीं आते भगवान स्वयं अपने आत्मा को लेने आते हैं अपने में ही समा लेते हैं। बस फिर तो तू ही तू रह जाता है। हे प्रभो मैं सदा आप की शरण हूं, ऐसा भाव बन जाता है। यह सब पूर्ण सतगुरु प्रभु राम जी की कृपा से ही हुआ है।

राम जी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाल
तेरी आस पूरी गोपाल
27.10.04 (4.30 P.M.)

श्रीराम

29.10.04

महला 1 शब्द 128 सतगुरु नानकदेवजी

मन रे राम नाम जस ले, बिन गुरु रहस किऊ लहऊ
गुरु मेले हरि देह

2. मन रे - - - -

जिऊ मीना बिन पाणीए, साकत मरे प्यास
तिऊ हरि बिना मरिए रे मना, जो बिरथा जावै सास

3 मन रे -

संत जना मिल सगती, गुरमुख तीरथ होय
अठसठ तीरथ मज्जना, गुरु दरस प्राप्त होय

4 मन रे -

जिऊ जोगी जत बाहरा, तप नाही सत संतोखे
तिऊ नामे बिन देहुरी, जम मारै अन्तर दोखे

5 मन रे -

साकत प्रेम न पाइऐ, हरि पाइऐ सतगुरु भाय
सुख दाता दे गुरु मिलै, कहो नानक सिफति समाए

राम जी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर मुखी गोपाला "

29.10

महला 1 शब्द 128 व्याख्या (सतगुरु नानकजी)

महाराज हमें आज्ञा दे रहे हैं, तुम सदा अपने मन को समझाओ। ए मन। तू सदा राम नाम सिमरन कर, यही यश देने वाला है। यह केवल पूरी सतगुरु से ही मिल सकता है। जब पूरी सतगुरु कृपा करते हैं तो हमारी ऐसी अवस्था हो जाती है कि, जैसे मछली पानी के बिना नहीं रह सकती, ऐसे ही हम भी नाम बिना तड़पने लगते हैं, सांसारिक नातों में हमारा श्वास घुटने लगता है। शेष सब हमें व्यर्थ लगता है। सतगुरु के दर्शन, अड़सठ तीर्थों का फल है। जैसे योगी योग के बिना, तप के बिना, सत और संतोष के बिना, ऐसे ही हमारी यह काया नाम के बिना है। इस में दोष ही दोष बढ़ते जाते हैं केवल सतगुरु को पा जाने से ही प्रभु प्रेम हमारे अन्दर प्रगट होता है। सुखदाता पूरी सतगुरु के मिलने से जीव प्रभु की ही स्तुति, प्रशंसा, गुण गाने लगता है फिर परमपद को प्राप्त हो जाता है

यत्गत्वा न निवर्तन्ते तत धाम परमम मम

गीता

राम श्रीराम राम
श्रीराम

29.10.04

महला 1 शब्द 129 (सतगुरु नानक देव जी)

(खराड़ा)

तेरा भाणा सब किछ होय, मन हठ कीजै अंत विगोय

आप करे सच अलाव अपार, हुकमापी तूं करणहार

2

मनमुख की मति कूड़ व्यापी, बिन हरि सिमरन पापी

सतापी

दुरमति त्याग लाभ किछ लेवहु, जो उपजे सो अलाव अभेव

3

ऐसा हमरा साचा सहाई, गुरु हरि मिलिआ भरम दृढ़ाई

सगली सौदी तोटा आवै, नानक राम नाम मन भावै

रामजी राम राम
श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

व्याख्या शब्द 129

हमेशा हमें अपने पूरे प्रभु से यही प्रार्थना करनी है, क्षमा याचना करनी है। हे प्रभो मैं तो पापों से भरा हूं और आप पाप क्षमा करते हैं। आप की आज्ञा से ही सब कुछ हो रहा, मेरे मन में कर्ता भाव आ जाता है तो जीवन ठीक नहीं चलता, जो मनमुख हैं वह सदा कूड़ की माया में ही फंसे रहते हैं और उन के हरि सिमरन के बिन ताप पाप बढ़ते ही जाते हैं। जब पूरे सतगुरु मिल जाते हैं तो वह हमारी दुरमति हर लेते हैं हमें सद्बुद्धि प्रदान

कर देते है। सद्बुद्धि से हमेशा लाभ है और दुर्बुद्धि से तो दुख ही दुख है

"जहां सुमति तहां सम्पति नाना
जहां कुमति तहां विपति निधाना"

जब हमारी सद्बुद्धि होती है तो संसार मे सब जगह अपने प्यारे की झलक प्रतीत होती है। ऐसे हमारे प्रभु हमारे सखा है, सहायक है, केवल सतगुरु के मिलने से ही ऐसी भक्ति प्राप्त होती है और फिर दृढ़ भी होती है। अगर गुरुकृपा से, हमारे मन को सिमरण सेवा सतसंग अच्छा लगने लगे तो हमारे जीवन में परिवर्तन आ जायेगा, क्या? फिर शेष संसार के सब पदार्थ गौण (छोटे) व्यर्थ लगने लगेंगे।

"जो सुख प्रभु गोविन्द की सेवा
सो सुख राज न लहिए"

बस अपने प्रभु पूर्ण ही मन को भायेंगे।

~~राम जी राम राम~~
श्री राम 29.10.04 (5:30 P.M.)

29.10.04

महला १ शब्द 130 सतगुरु नानक देवजी

प्राणी! एको नाम ध्यावहो २
अपनी पति सेती घर जावहो
प्राणी - - -

2

खाणा पीणा, हसणा सउणा
विसर गया है मरणा, मरणा
खसम विसारि खुआरी कीन्ही
दुख जीवन नही रहणा
प्राणी - - - -

3

तुध नू सेवहि, तुझ क्या देवहि
मागहि लेवहि रहहि नही
तूँ दाता जीआ सभना का
जीआ अंदर जीओ तूंही
प्राणी - -

4

गुरमुख ध्यावहि से अमृत पावहि
सेई सूचे होई
अहनिसि नाम जपो रे प्राणी, मैले अच्छ होय
जेही रत कापड़ा सुख तेहा, तेहो जेही देही
नानक रत सुहावी साई, विन नावै रत केही।

रामजी रामराम श्रीराम

30.10.04

महला १ शब्द 130 सतगुरु नानक देव जी

महाराज प्यारे प्यारे सतगुरु राम जी प्रेम से समझा रहे हैं, जिस में प्राण चल रहे हैं वह प्राणी है। जब तक तुम्हारे अन्दर श्वास चल रहे हैं, हर श्वास में तू राम नाम का जाप कर। हमारे अन्दर नाम तो चल रहा है उस की ओर पूरी तव्वजो देनी है। यह भी अभ्यास है, सहज अवस्था में हमें अपने प्यारे की याद आती रहे, जैसे अपने बेटे की याद करनी नहीं पड़ती। इसलिए बार २ सतगुरु हमें चेतावनी देते रहते हैं। कि हमें मृत्यु की याद रखनी चाहिए जो जरूर ही आनी है। हम खाते पीते हसते सोते जागते अपने प्रभु प्यारे की याद में रहें, नहीं तो धिक्कार है हमारे जीवन को। हम अपने प्रभु प्यारे को क्या दे सकते हैं, जिन्होंने हमें जीवन दिया है, और अभी तक दे ही दे रहा है। जिन का मुख गुरु की ओर रहता है वही इन रहस्यों को समझ सकते हैं। वह दिन रात नाम अमृत ही ग्रहण करते रहते हैं। विषय विकारों से दूर रहते हैं। बार २ छः रात दिन नाम जपने की आज्ञा देते हैं। जिस समय हमारी वृतियां सात्विक हैं वही दिन अच्छा है चाहे वह दिवाली हो, दशहरा हो करवाचौथ हो। ईद हो, या उन की Sunday हो Christmas Good Friday हो।

3.11.04

[illegible]

(आत्मा की [illegible]
जीव की [illegible])

[illegible]

3. 11. 04

बारह माह

(चेत) गोविन्द आराधीए होवे अनंद घणा,
संत जना मिल पाइए रसना नाम भणा,
जिन पाइआ प्रभु आपणा, अवरे तिस ही गणा,
इक खिन तिस बिन जीवना, बिरथा जनम जणा,
जिनी राविआ सो प्रभु, तिन्हा भाग मणा,
हरि दरशन नू मन लोचदा, नानक दास मना,
ज चेत मिलाए सो प्रभु, तिन के पाय लगा ॥

2. वैसाख

वैसाख धीरन क्यो वाडिआ, जिना प्रेम बिछोह,
हरि साजन पुरख बिसारि कै लगी माया धोह,
पुत्र कलत्र न संग धना, हरि अविनाशी ओह,
पलचि पलचि सगली मुइ, झूठे धन्धे मोह,
इकस हरि के नाम बिना, अगे लैइअहि खोई,
दयु बिसारि बिगुचणा, प्रभु बिन अवर न कोई ॥

3 जेठ

हरि जेठ लुड़दा लोड़िये, जिस अगे सभ निवनि,
हरि सजणा दावणा लगिआ, किसे न दई बन्न,

4.11.04

माराक मोती नाम प्रभ, उन लागे नाही सन,
रंग सभे नाराइणे, जेते मन भावन,
जो हरि लोड़े सो करे, सोई जीअ करन,
जो प्रभु कीते आपणे, सोई कहिए धन,
आपणा लीआ जो मिले, विछड़ क्यो रोवन,
साधू संग परापते, नानक रंग माणन
हरि जेठ रंगीला तिस धणी, जिस के भाग मथन ॥

५ (आषाढ़)

आषाढ़ तपंदा तिस लगे, हरि नाह न जिन्हा पास,
जग जीवन पुरख त्याग के, मरणु सदा आस,
दयु भाग विणु चअै, गल पइस जम की फास,
जेहा बीजे सो लुणे, मथे जो लिखिआस,
रैणा विहाणी पंछोताणी, उठ चली गई निरास,
कर किरपा प्रभ आपणी, तेरे दरशन होय प्यास,
प्रभ तुझ बिन दूजा को नही, नानक की अरदास,
आसाढ़ सुहेदा तिस लगे जिस मन हरि वसा निवास ॥

4·11·04

5

ावरा सरसी कामराी, चरण कमल सिंऊ प्यार,
न तन रता सच रंग, इको नाम आधार।
ीविआ रंग कुड़ावणा, दिवन सभे हार,
री हरि बूंद सुहावणी, मिल साधू पीवणा हार,
णा त्रिरा प्रभ सगं मऊलिआ, समरथ पुरख अपार,
रे मिलणो नो मन लोचदा, कर्म मिलावणा हार,
जिनि सरिवर प्रभ पाइआ, हऊं तिन्ह के सदवलिहार,
नक, प्रभ जी मइआ कर, शब्द सवारणा हार,
ावरा, तिन्हा सुहागणा, जिनि राम नाम आधार॥

6

(भाड़ो)
ाड़ो भरम भुलाणिआ, दूजे लगा हेत,
ब सिंगार बणाइआ, कारज नाही केत,
जिह दिन देह विनसली, तित वेले कहसन पेत,
कड़ चलाइन दूतजम, किसे न देनी हेत,
ड खलोते खिन्ने मांही, जिन सिंऊ लगा हेते,
थ मरोड़े तन कंपे, सिआऊह हो होत सेत, (मरते समय)
जेहा बीजे सो लुणो, करमा सदड़ा खेत

4.11.04

नानक प्रभ शरणागति, चरण बोहिथ प्रभ देत,
से भाड़ो नरक न पाइए। गुरु राखणहारा हेत,

7 (असुन)

असुं प्रेम उमाहड़ा। किउ मिलिए हरि जाइ,
मन तन ध्यान दरसन घणी। कोई आणि मिलावै माइ,
संत सहाई प्रेम के। हउ तिन के लागां पाइ,
बिणु प्रभ किउ सुख पाइए, होर दूजी नाही जाइ,
जिनि चाखिआ प्रेम रस। से तृप्त रहे अघाइ,
आप त्याग विनती करे। लेहो प्रभु लड़ लाइ,
जो हरि कंत मिलाइआ। से विछड़ कतहि न जाइ,
प्रभ बिन दूजा को नही। नानक हरि शरणाइ,
असुं सुनी वसंदिआ। जिना मइआ हरि राइ॥

8 कतिकि

कतक करम कमावणे। दोस न काहू जोग
परमेश्वर ते भुलयां। व्यापन सभै रोग
वेमुख होए राम ते। लगणा जन्म वियोग
बिन भजन कोड़े हो गये। जितड़े माया भोग

7.11.04

विचन कोई कर सके, किस थे रोवहि रोज,
कीता किछ न होवई, लिखिआ धुर संजोग,
वडभागी मेरा प्रभ मिले, तां उतरे सब विओग,
नानक को प्रभ रावलेहो, मेरा साहिब नदरी मोच,
कनक होवै साधसंग, विनसिहि सभै सोच ॥

मग्घर

मग्घर माहि सुहंदिआ, हरि पिर संगि बैठड़ीआहि,
तिन की शोभा क्यों गणी, जो साहब मेलड़ीआहि,
मन तन मअलिया राम सिउं, संगि साध सहेलिड़ीहां,
साध जना ते बाहरी, से रहनि अकेलड़ीहां,
तिन दुख न कबहू उतरे, से जम के वसि पड़ीआहि,
जिनि राविआ प्रभ आपणा से दिसन नित खड़ीआहि,
रतन जवाहर लाल हरि कंठ तिन्ह जड़िआहि,
नानक गोइं धूरि तिन, प्रभ शरणी पड़िआहि,
मग्घर प्रभ आराधणा, बहुड़ न जनमड़िआहि ॥

पोख

पोख तुखार न व्यापई, कंठ मिलिआ हरि नाह,
मन बोधिआ चरणारविन्द, दरसन लगड़ा साह,

7.11.04

ओट गोबिन्द गोपाल राय, सेवा स्वामी लाह,
निविआ मोह न सकांहि, मिल साधू गुणागाह,
जिंह ते अजी तहँ लगी, सची प्रीती समाह,
कर गहि लीन्ही पारब्रहम, बहुड़ न जनमड़िआहे,
वारि जाऊं लाख बेअंत, हरि सजणा अगम अगाह,
सरम पई नारायणो, नानक दर पइआह,
पोख सुहंदा सर्व सुख, जिस वाहे बेपरवाह॥

माघ

माघ मज्जन संग साधूआं, घूड़ी कर इनान,
हरि का नाम धियायसुन, समना नूं कर दान,
जन्म कर्म मल उतरै, मन ते जाय गुमान,
काम क्रोध न मोहिए, विनसै लोभ सुअरन,
सच्चे मार्ग चलदिआं, उसतत करे जहान,
अठसठ तीर्थ सगल पुन, जीअ दया परवान,
जिसनू देवे दया कर, सोई पुरख सुजाण,
जिना मिलिआ प्रभ आपणा, नानक तिन कुरबाण,
माघ सुचे से कढिअह, जिन पूरा गुरु मेहरवान॥

7.11.04

फलगुरा

फलगुरा अनद उपासना, हरि सजरा पुगरे आइ,
संत सहाई राम के, करि कृपा दिआ मिलाई,
सेज सुहावी सर्व सुख, हुरा दुखां नाही जाई,
इच्छ पुनी वडभागड़ी, वर पाइआ हरि राय,
मिल सइयां मंगल गावहीं, गीत गोबिंद अलाई,
हरि जेहा अवर न दीसई, कोई दूजा लवै न लाई,
हलत पलत सवारिअन, निहचल दितिअन जाई,
संसार सागर ते रखिअन, बहुड़ न जन्मै धाय

राम जी राम राम
श्री राम
"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरा गोपाला"
7.11.04 4.10 P.M

1.11.04

(जीव की ब्रह्म के साथ) लावा " (आत्मा की परमात्मा के साथ)

हरि पहली लांव, प्रविरत करम दृड़ाइआ बलराम जीओ
बाणी ब्रह्मा वेद धर्म दृड़ हो, हरि पाप तजाइआ " " "
धर्म दृड़ हो, हरि नाम ध्यावहो, सिमृति नाम दृड़ाइआ,
सतगुरु पूरा आराधो, सभ किलविख पाप गवाइआ,
सहज आनन्द होआ वड भागी, मन हरि २ मीठा लाइआ,
जन नानक कहे लांव पहली, आनन्द काज रचाइआ ॥

2.

हरि दूजड़ी लांव, सतगुरु पुरख मिलाइआ बलराम जीओ,
निरभउ भय मन होय, हउमै मैल गवाइआ बलराम जीओ,
निरमल भउ पाइआ, हरि गुण गाइआ, हरि वेखे राम हदूरे,
हरि आतम राम पसरिआ स्वामी, सर्व रहिआ भरपूरे,
अंतर बाहर हरि पुरख एकै, मिल हरि जन मंगल गाए,
जन नानक दूजी लांव चलाई, अनहद शब्द वजाए ॥

3

हरि तीजड़ी लांव मन चाउ भया, वैरागिआ बलराम जीओ
सजन संत जना हरि मेल हरि पाइआ, वड भागिआ " "
निरमल हरि पाइआ, हरि गुण गाइआ, मुख बोली हरि वाणी

7.11.04

संत जना वड भागी पाइआ, हरि कथिए अकथ कहाणी,
हृदय हरि हरि हरि धन उपजी, हरि जपिए मस्तक भाग जीओ
जन नानक बोले तीजी लावें, हरि उपजिआ मन वैराग जीओ

4
हरि चौथी लावें मन सहज भया, हरि पाइआ बलराम जीओ,
गुरमुख मिलिआ सुभाई, हरि मन तन मीठा लाइआ,
मन चिंदिआ फल पाया मेरे, प्रेम भाया अनदिन हरि लिव लाई,
हरि प्रभ हाकर काज रचाइआ, मन हृदय नाम निवासी
हरिनाम धनी वधाई,
जन नानक बोले, चौथी लावें, हरि पाया प्रभ अविनाशी॥

रामजी राम राम
श्रीराम
"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरन गोपाला"
7.11.04 (4.50 P.M
(सारांश)

1. पहली लावें — सतगुरु भगवान की आज्ञा मानना, विश्वास रखना
2. मन को विकारों से हटाने के लिए मंत्र जाप करना "कर कृपा प्रभु- - -
3. मन में प्रभु मिलने की लगन, वैराग्य, एकान्त, मौन, प्रेम, Introvert
4. गुरमुख बनना, सहज अवस्था, अन्तर में प्रकाश हो जाना, अन्तर की

7.11.04

आत्मा परमात्मा का मिलन हुआ,
सारी आशाएं पूर्ण हो गई ॥

पूरी आसा जी ओ मेरी मनसा, मनसा मेरे राम पूरी आसा

2

मोहे निर्गुण जी, मै सब गुण तेरे,
सब गुण तेरे, ठाकुर मेरे,
मै कित मुख तुध सालाही, मै वारि त्योर कित मुख ---

3 पूरी आसा - - -

गुण अवगुण मेरा कछु न विचारिआ
बख्श लेहा बिन माही, मै वारी त्योर बख्श लेहा बिन माही

4 पूरी आस - - -

नऊ निधि पाई वजी वधाई, वाजे अनहद तूरे
कहो नानक जी मै घर घर पाया, मेरे लाथे सगल विसूरे

पूरी आसा - -

रामजी राम राम
श्री राम
7.11.04 (5 P.M)

8.11.04

व्याख्या (पूरी आत्मा जीओ)

संसार के विषयों की, ऐश्वर्य की, किसी भी चीज़ की मन में इच्छा न रहे तो समझो आप ब्रह्मस्वरूप हो गये। अपने आप को गुण रहित समझना, दूसरों के गुण देखें। अवगुण नहीं। हर समय स्वरूप प्रभु की अपनी नहीं, सतगुरु या भगवान तो हमेशा माफ करते हैं। गलतियां सदा मेरे में ही हैं। ऐसा भाव घर में भी और सत्संग में भी हो जाये, तो शादी हो गई ठीक। अन्तर में शब्द धुन सुनने की ऊँचाई हो। अभ्यास करें सुननी शुरू हो जाये। रस आने लगे तो समझो हमारी आत्मा की परमात्मा के साथ शादी हो गई

जैसे — 1 व्रत वह है। हमारा मन न चाहे खाने को, हम प्रभु चर्चा में या ध्यान में मस्त हो जायें।

2 इन्द्रियों को संयम में रखने का, सवेरे व्रत ले कृपा मांगो, मन प्रसन्न रहे, हर हाल में।

3. हर समय प्रार्थना का समय है, हर समय खाने का समय नहीं है।

(4) यह सब राम जी ही कर रहे हैं। मैं नहीं कर्ता धर्ता भर्ता।

5। हम राम जी के राम जी हमारे हैं। ऐसा भाव बनाले

11.11.04

श्रीराम

महाआरती की BED रात्रि

आरती के लिए मंदिरों और

आरती प्रेमी कि कोपरगांव

आरती बतलाते हैं श्रीमाई

11. 11. 04

श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला"

(आत्मा का भोजन)

यह प्रार्थना "श्रीराम" जी द्वारा, आलौकिक रूप में प्रकट हुई। अर्थात वाणी स्वतः प्रस्फुटित होती गई, व "श्रीराम जी" ने इसे प्रार्थना के रूप में लिपि बद्ध कर, आप सब के लिए प्रस्तुत किया।

इस से अब तक, अनेकों लोगों का उद्धार हुआ है। यह तो दैहिक, दैविक, भौतिक, तापों का निवारण करने वाली अचूक औषधि है।

अतः इसे दिन में 5 बार अवश्य ही श्रद्धा और विश्वास से पढ़ें, व मनोनीत फल प्राप्त करें।

निष्काम भावसे, करने पर शीघ्र ही, प्रभु की अविरल भक्ति व पूर्ण कृपा प्राप्त होगी।

(1) पहली प्रार्थना, सवेरे बिना कुछ खाये पीये।

(2) नाश्ते के समय।

(3) दोपहर के खाने के समय।

15.11.04

~~(4) चौथी – शाम की चाय के समय।~~

(5) पांचवी – रात को सोते समय।

रात्रि में थोड़ा समय ध्यान, अर्थात प्रभु से एकाकार करने का, अनन्य अभ्यास करें। जितना अन्तर में झांकोगे, उतना ही अधिक रहस्य-युक्त आनन्द की प्राप्ती होगी

"श्रीराम"

जैसे शरीर के लिए भोजन की जरूरत है, ऐसे ही आत्मा के लिए नाम के भोजन की जरूरत है।

आत्मा के लिए Bed Tea

"कर कृपा प्रभु दीनदयाली
तेरी ओर पूर्यो गोपाला"

(5 बार)

पहली कृपा मन पर रखना (मन शान्त रहे)

दूसरी कृपा बुद्धि पर रखना (बुद्धि स्थिर रहे)

तीसरी कृपा परिवार पर रखना (परिवार शान्त रहे)

चौथी कृपा पूरे शरीर पर रखना (शरीर स्वस्थ रहे)

वाँ पांचवी कृपा बाहर जाने वालों पर (गाड़ी आदि पर) सकुशल घर आये।

15-11-04

"आत्मा के लिए नाश्ता"

BREAK FAST FOR THE SOUL

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला"

क्या कृपा चाहिए ?

"श्वास श्वास सिमरु गोविन्द।
मन अन्तर की उतरै चिन्त"॥

2.

जाचक जन जाचै प्रभु दान,
~~कर कृपा देवहो हरि नाम।~~
साध जनां की मांगू धूरि,
पारब्रहम मेरी श्रद्धा पूरि।
सदा सदा प्रभु के गुण गाऊँ,
श्वास श्वास प्रभु तुम्हें ध्याऊं।
चरण कमल सिऊँ लागो प्रीत,
भक्ति करूँ प्रभु की नित नीत।
एक ओट एको आधार, नानक मांगे नाम प्रभु सार॥

3.

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहुं सो दशरथ अजिर बिहारी,
दीनदयाल विरुद्ध सम्भारी, हरहु नाथ मम संकट भारी।

4

राम कृपा नाशंहि सब रोगा, जो रहीं भांति बने सयोगा॥

5

जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करे सब कोई॥

6

जा पर कृपा दृष्टि अनुकूला, ताहि न व्याप त्रिविध भवशूला

7

राखा एक हमारा स्वामी, सगल घट का अन्तरयामी॥

8

ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे, हरि नाम न बीसरे काहू बेरे॥

9

जगत जलधां राखि लै, अपनी कृपा धार,
जित ढूरै उभरै, तित लेहो उभार।

10

सत्गुरु सुखे वेखालिआ, सच्चा शब्द विचार,
नानक अवर न सूझई, हरि बिन वखशनहार।

11

दडवंत वन्दना अनिक वार, सर्व कला समरथ,
डोलन तेरा खो प्रभु, नानक दे कर हथ।

12

ज्ञान ध्यान किछु कर्म न जाणा, सार न जाणा तेरी,
सब ते वडा सत्गुरु नानक, जिन कलि राखी मेरी।

15·11·09

13

सर्वकला भरपूर प्रभु, निरथा जानन हार ।
जां के सिमरन उधरिए, नानक तिस बलिहार ॥

14

करण कारण प्रभु एक है, दूसर नाही कोय ।
नानक तिस बलिहारणे, जल थल महिअल सोय ॥

15

दीन दरद दुख भंजना, घट घट नाथ अनाथ ।
शरण तुम्हारी आइओ, नानक के प्रभु साथ ॥

16

सगल द्वार को छाड़ के, गहयो तुम्हारो द्वार ।
बांह गहे की लाज अस, गोविन्द दास तुम्हार ॥

17

जे मैं भूल बिगाड़या, न कर मैला चित ।
साहब गौरा लोड़िये, नफर बिगाड़े नित ॥

18

जैसा कैसा हूँ मै तेरा, क्षमा करो सब अवगुण मेरा ॥

19

जेता समुद्र सागर नीर भरिआ, तेते अवगुण हमारे ।
दया करो किछ मेहर उपाओ, डूबदे पत्थर तारे ॥

15·11·09

13

सर्वकला भरपूर प्रभु, निरथा जानन हार ।
जां के सिमरन उधरिए, नानक तिस बलिहार ॥

14

करण कारण प्रभु एक है, दूसर नाही कोय ।
नानक तिस बलिहारणे, जल थल महिअल सोय ॥

15

दीन दरद दुख भंजना, घट घट नाथ अनाथ ।
शरण तुम्हारी आइओ, नानक के प्रभु साथ ॥

16

सगल द्वार को छाड़ के, गहयो तुम्हारो द्वार ।
बांह गहे की लाज अस, गोविन्द दास तुम्हार ॥

17

जे मैं भूल बिगाड़या, न कर मैला चित ।
साहब गौरा लेड़िये, नफर बिगाड़े नित ॥

18

जैसा कैसा हूँ मै तेरा, क्षमा करो सभ अवगुण मेरा ॥

19

जेता समुद्र सागर नीर भरिआ, तेते अवगुण हमारे ।
दया करो किछ मेहर उपाओ, डूबदे पत्थर तारे ॥

20

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या च द्रविणम् त्वमेव,
त्वमेव सर्वम मम देव देव,
श्रीराम जय राम, जय राम। जय जय राम,
शंकर हरि ॐ। जय जय सिया राम,
जय जय हनुमान ॥

21

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पुकारी गोपाला"
(पांचो ज्ञान इन्द्रियां, आंख कान नाक
मुंह हृदय और सिर की रक्षा के लिए)
मांगें
कृपा मांगें
आंखो पर हाथ रखते हुए — कर कृपा ॥
मुख पर हाथ रखते हुए — कर कृपा ॥
कानों पर हाथ रखते हुए — कर कृपा ॥
हृदय पर हाथ रखते हुए — कर कृपा --
सिर पर हाथ रखते हुए — कर कृपा ---

15-11-04

घर जीअड़े इक टेक तूँ, लहे विडाणी आस।
नानक नाम धियाइये, कारज आवे रास॥

रक्षा मन्त्र (कवच)

सब अंगो पर, हाथ से स्पर्श करते हुए,

सिर मस्तक रक्षा पारब्रह्म, हस्त काया रक्षा परमेश्वरह
आत्म रक्षा गोपाल स्वामी, धन चरण रक्षा जगदीश्वरह
सर्व रक्षा गुरु दयालह, भय दुख विनाशने,
भक्तवत्सल अनाथ नाथे, शरण पुरख अच्युत।"

दोहा।

शुभ चिन्तन गोविन्द रमण, निर्मल साधू संग।
नाम न वीसरे इक घड़ी, कर किरपा भगवंत॥

2

आपे हरि इक रंग है, आपे बहु रंगी।
जो तिस भावै नानका, सोई गल चंगी॥

3

पूरा प्रभु आरधिआ, पूरा जा का नाम।
नानक पूरा पाइआ, पूरे के गुण गाम॥

4

राम रमहो वडभागिओ, जल थल महिअल सोय।

15.11.04

नानक नाम आराधिए, विघ्न न लागे कोय॥

5

रे मन तां को ध्याइये, सब विधि जां के हाथ।
राम नाम धन संचिए सदा ही, निबहे साथ॥

6

पारब्रह्म परमेश्वर! पूरा सच्चिदानन्द।
नमस्कार मेरी आप को, भक्तन के अंग संग॥

7

सतगुरु मेरा शूरमा, करे शब्द की चोट।
मारे गोला ज्ञान का, ढाहे भरम का कोट॥

8

परमानन्द कृपा यत्न, मन परिपूरन काम।
प्रेम भगति अनपायनी, देहो हमें श्री राम॥

9

वारवार वर मांगहु, हर्षि देहो श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी, भगति सदा सतसंग॥

10

नाथ एक वर मांगहु, राम कृपा कर देहु।
जन्म जन्म पद कमल रति, कबहुं घटे जनि नेहु॥

15.11.04

सियापति राम, जय जय राम,
मेरे प्रभु राम, जय जय राम,
करो कल्याण, जय जय राम,
जपाओ नाम, जय जय राम,
लगाओ ध्यान, जय जय राम,
रहो मेरे पास, जय जय राम,
कभी न हूं उदास, जय जय राम,
शंकर हरि ॐ जय जय सियाराम,
जय जय हनुमान ॥

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला, तेरी ओट पूरा गोपाला॥"

आनन्द साहिब (33)

आनन्द भइआ मेरी माय, सतगुरु मै पाइआ,
सतगुरु ते पाइआ सहजसेती, मन वजीआ वधाइआं।
राग रतन परिवार भरिआ, शब्द गावण आइआं।
शब्दो तां गावहो हरि केरा, मन जिनि वसाइआ।
कहे नानक आनन्द होआ, सतगुरु मैं पाइआ।
एह मना मेरेआ, तूं सदा रहो हरि नाले।
हरिनाल रहो तूं मन मेरे, दुख सभ विसारना।

15.11.04

अगंकार ओह करे तेरा, कारज सब सवारना।
सभना गला समरथ स्वामी, सो क्यों मनो विसारे॥
कहे नानक मन मेरे, सदा रहो हरि नाले।
साचे साहिबा, क्या नही घर तेरे।
घर तो तेरे सब किछ है, जिस देवें सो पावे।
सदा सिफत सलाह तेरी, नाम मन वसावे।
नाम जिन के मन वसिया, वाजे शब्द घनेरे।
कहे नानक सच्चे साहिबा, क्या नही घर तेरे।
साचा नाम मेरा आधारो, साच नाम आधार मेरा।
जिन भुखा सब गवाइआ, कर शान्त सुख मन आये वसिया।
जिन इच्छा सब पुजाइया।
सदा कुरबाणा कीता गुरु विटहु, जिस दिआ एह वडआइआं
कहे नानक सुणहो सन्तो, शब्द धरो प्यारे।
साचा नाम मेरा आधारो, वाजे पंच शब्द तित घर सभागे
घर सभागे शब्द बाजे, कला जिन घर धारिआ।
पंच दूत तुध वस कीते, काल कटक मारिआ।
धुर करम पाइआ तुध जिनको, से नाम हरि के लागे

15-11-04

कहे नानक तहं सुख होआ, तित घर अनहद वाजे।
आनन्द सुनहु वडभागीओ, सगल मनोरथ पूरे।
पारब्रहम प्रभ पाइआ, उतरे सगल विसूरे।
दुख रोग सतांप उतरे, सुखी सच्ची वाणी।
संत सज्जन भये सरसे, पूरे गुरु ते जाणी।
सुखाते पुनीत, कहते पवित, सत्तगुरु रहिआ भरपूरे।
बिनवंत नानक गुरु चरणा लागे, बाजे अनहद तूरे।

'श्लोक'

पवणा गुरु पाणी पिता, माता धरत महत।
दिवस रात दोय दाई दाया, खेले सगल जगत।
चंगाइआं बुरआइआं, वाचे धर्म हदूर।
करमी आपो आपणी, कै नेड़े कै दूर।
जिनी नाम धयाया, गए मसकत घाल।
नानक ते मुख उजले, केती छुटी नाल।

'अरदास'

तूं ठाकुर तुम पै अरदास, जीओ पिंड सभ तेरी रास।
तुम मात पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे
कोई न जाणै तुम्हरा अन्त, ऊचे ते ऊचा भगवन्त।

15.11.04

सगल समग्री तुम्हरे सूत्र धारी।
तुम ते होय सो आज्ञा कारी।
तुम्ही गति मित तुम ही जानी।
नानक दास सदा कुरबानी।
तुध आगे अरदास हमारी।
जिओ पिंड सब तेरा वाहिगुरु।
कहो नानक सब तेरी वडआई।
कोई नाम न जाने मेरा वाहिगुरु॥

हे रामजी
हमारी बुद्धियों को अपनी ओर प्रेरित करना।
ॐ भूर्भवः स्वाहः तत्सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो: न प्रचोदयात्

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति 3 बार

हे सर्वशक्तिमान पिता, हम आप के बच्चे हैं।
आप हमारी रक्षा करना, हमें दुर्गुणों से बचाना,
हमें सद्गुण प्रदान करना,
हम क्रोध को शान्ति से जीतें

16.11.04

लोभ को संयम से जीतें।
मोह को प्यार से जीतें।
अहंकार को विनम्रता से जीतें।
पल पल में आप का ध्यान करें।
हमारी द्वैत बुद्धि को मिटाना।
सब के घर में सुख शान्ति देना।
रोगों का नाश हो, क्लेशों का नाश हो,
बस यही प्रार्थना है। स्वीकार करो, स्वीकार करो
स्वीकार करो।

आरती सत्तगुरु भगवान जी की

1

ॐ जय सत्तगुरु देवा, मेरे प्यारे गुरुदेवा।
अपने भक्तों के संकट तुम दूर करो देवा॥
ॐ जय - - -

2

तुम हो अलख अविनाशी, तुम अन्तरयामी।
तुम ही कर्ता धर्ता, तुम सब के स्वामी॥
ॐ जय - - -

3

अपना रूप दिखाते, कण कण व्याप रहे।
तेरी कृपा का मेरे सत्तगुरु, हर पल ध्यान रहे॥

16.11.04

हर पल तुझको ध्याऊं, तेरे गुण गाऊं।
बार बार चरणों में, मैं प्रभु शीश नवाऊँ॥

5 ॐ जय---
घर में आय विराजो, मन मन्दिर साजे।
बाजे अनहद बाजे, जय श्रीराम हरे॥

6 ॐ जय---
जगमग ज्योति सुहावे, रूप तेरा प्यारा।
श्वेत वर्ण उजियारा, सत्गुरु है मेरा॥

7
सब पर कृपा करो, मेरे प्यारे गुरुदेवा।
क्षमा करो सब अवगुण, सब तेरी सेवा॥

8 ॐ जय--
तेरे द्वारे आये प्रभु जी, करना आप रक्षा।
इक पल भी न विसरे, नाम प्रभु तेरा॥

ॐ जय सतगुरु--
त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धु श्च सखा त्वमेव॥
त्वमेव विद्या, द्रविणम् त्वमेव।
त्वमेव सर्वम, मम देव देव॥

श्रीराम जय राम, जय जय राम, शंकर हरि ॐ जय
जिय राम

16.11.04

सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामया।
सर्वेभद्राणी पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाग भवेत्

आरती नारायण जी की

ॐ जय श्री नारायण शरणानम् 2
शरण में आये हम आपकी, हमसब के पाप हरणानम्

2 ॐ जय ---
जब जब पाप बढ़े पृथ्वी पर,
तब तब दर्श दियो,
संतो की रक्षा कारण दुष्टों का नाश कियो।।

3 ॐ जय --
अपने भक्तों के कारण, युग युग रूप धरयो,
राम कृष्ण गुरु नानक, स्वयं को प्रगट कियो।।

4 ॐ जय ---
पिछले अवगुण बख्श लो, आगे मार्ग दे ओ,
अपनी शरण में राख कर, सगरे पाप हरो।

5 ॐ जय ---
ज्ञान भक्ति हमें दीजो, तामस दूर करो,
सत्विक श्रद्धा बढ़ा कर, हमरे कष्ट हरो।

16.11.04

शरणा में आये हम आपकी, विनती स्वीकार करो,
ज्ञान हीन हमें ज्ञान दे, भवसे पार करो।

ॐ जय श्री----

'परिक्रमा'

नारायणा हरि, नारायणा हरि। नारायणा हरि 2
पहली परिक्रमा तेरी करी, नारायणा हरि 2
विघ्न बाधा सब दूर करी, " " "
दूजी परिक्रमा तेरी करी, नारायणा हरि 2 ---
शीतल शान्ति दयाल दई, नारायणा हरि 2 --
तीजी परिक्रमा तेरी करी, नारायणा हरि 2
आनन्द आनन्द आनन्द दई, नारायणा हरि 2
चौथी परिक्रमा तेरी करी, नारायणा हरि 2
सब की मनोकामना पूर्ण करी, नारायणा हरि 2

आरती शंकर भगवान जी की

ॐ जय शिव शंकर जय महादेवा,
जय सच्चिदानन्द नमो नमो।
शरणा में आये अब हम तेरी, कृपा कर दो नमो नमो

16.11.04

मात, पिता, भाई, सुत, बन्धुप, तुम्हीं हो सब नमो: नमो:

ॐ जय शिव - - -

भक्ति शक्ति दे दो हम को, पूरी आशा नमो: नमो: - -

ॐ जय शिव - -

विनती हमारी सुन लो स्वामी, करुणासागर नमो नमो

ॐ जय शिव - - -

विवेक, वैराग्य, ध्यान, समाधि, हम सब को लगा दो

नमो: नमो!

ॐ जय शिव शंकरे - -

सब पर दया करो भगवान्, सब पर कृपा करो भगवान्

सब का सब विधि हो कल्याण, सब जन लेवें तुम्हारा नाम

तभी होगा सब का कल्याण।

धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो॥

प्राणीयों में सद्भावना हो।

विश्व का कल्याण हो॥

हर हर महादेव, पार्वती नम:

जय जय श्री राधे उ बार

जय जय श्री राम

श्रीमति राम जी द्वारा रचित पुस्तकों की नाम सूची

प्रथम	.....	पूजा के फूल	.....	मई	1981
द्वितीय	.....	अमृत वर्षा	.....	सितम्बर	1981
तृतीय	.....	ज्ञान अंजन	.....	मई	1982
चतुर्थ	.....	भक्ति सार	.....	सितम्बर	1982
पंचम	.....	प्रेमा भक्ति	.....	अप्रैल	1983
षष्ठ	.....	संत वाणी	.....	जून	1983
सप्तम्	.....	अनमोल वाणी	.....	जून	1984
अष्टम्	.....	प्रेम पीयूष	.....	दिसम्बर	1985
नवम्	.....	अमर प्रेम	.....	अक्टूबर	1987
दशम्	.....	प्रेमानुभूति	.....	दिसम्बर	1989
एकादशम्	.....	प्रेम साधना	.....	दिसम्बर	1990
द्वाद्वशम्	.....	प्रेम मंथन	.....	जून	1993
त्रयोदशम्	.....	प्रेम अमृत	.....	अगस्त	1995
चर्तुदशम्	.....	भजनामृत-१	.....	अप्रैल	1997
पञ्चदशम्	.....	शब्दामृत-१	.....	अप्रैल	1997
षोऽश	.....	प्रेम पुष्प	.....	दिसम्बर	1998
सप्तदशम्	.....	प्रेम दर्शन	.....	दिसम्बर	2000
अष्टदशम्	.....	प्रेम ज्योति	.....	सितम्बर	2001
नवदशम्	.....	मीरा के श्रीराम	.....	मार्च	2004
विशंति	.....	गीता सार	.....	अगस्त	2004
एकविशंति	.....	भजनामृत-२	.....	नवम्बर	2004
द्वाविशंति	.....	शब्दामृत-२	.....	जुलाई	2005

निर्देश :-

अच्छी पुस्तकें आपकी सच्ची सखी व जीवन सहचर है, जो समय-समय पर आपको चेतावनी देती रहती हैं ।

अतः पढ़ो, मनन करो व अलौकिकता का अनुभव करो ।

श्री राम

''कृपाधाम''

C-2B, जनक पुरी, नई दिल्ली-110058, फोन : 25517225

श्री राम जी के सत्संग का समय प्रतिदिन

प्रातः - 5.00 बजे से 7.00 बजे तक

दोपहर - 10.00 बजे से 12.00 बजे तक

रात्रिः - 7.00 बजे से 8.30 बजे तक